ЗИНОВЬЕВ М., ПЛЕШАКОВА А.

КАК БЫЛА ЛИКВИДИРОВАНА
НЕГРАМОТНОСТЬ В СССР

दिसम्बर १६१६ में, व्ला० इ० लेनिन ने उस आज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये जिसका उद्देश्य सोवियत जनतन्त्र में से निरक्षरता को दूर करना था। यह गृह-युद्ध के भयानक दिनों की बात है। परन्तु कोई भी शक्ति उन लाखों लोगों के ज्ञान अर्जन करने के दृढ़ संकल्प को तोड़ नहीं सकती थी जिन्हें क्रान्ति ने रचनात्मक जीवन के प्रति जागृत कर दिया था। लेनिन वर्णमाला की पुस्तक, किसानों के टूटे-फूटे झोपड़ों में अक्षर-बोध की पहली कक्षाएं, जलती हुई खपची या छोटे मे किरासिन लैम्प की रोशनी में टूटी हुई पेंसिल से लिखना सीखने का घोर प्रयास—सचमुच यह जनता के उस निःस्वार्थ संघर्ष की ऐतिहासिक वीरगाथा थी जो उसने संस्कृति और साक्षरता के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के पथ-प्रदर्शन में किया।

इस पुस्तक में विस्तृत तथ्यगत सामग्री के साथ ज़ारशाही रूस की घिनौनी विरासत—निरक्षरता—को खत्म करने के लिए किये गये महान कार्य का विवरण दिया गया है।

अनुवादक: भीष्म साहनी

विषय सूची

महान आरम्भ

> पिछले काल में, समस्त मानव बुद्धि, समस्त मानव प्रतिभा के रचनात्मक कार्य का उद्देश्य, मुट्ठी भर लोगों को टेक्नोलाजी और संस्कृति के सभी लाभ पहुंचाना और अन्य लोगो को सब से आवश्यक – शिक्षा तथा विकास – से वंचित रखना हुआ करता था। अब टेक्नोलाजी के सभी चमत्कार, संस्कृति की सभी उपलब्धिया जनता की सम्पत्ति होगी।
>
> व्ला० इ० लेनिन

अक्तूबर क्रान्ति के बाद

ज़ारशाही रूस में जनता के भाग्य में जहालत और निरक्षरता, अधिकारहीनता और घोर दरिद्रता ही लिखी थी। जनता को पढाने की प्रगतिशील बुद्धिजीवियो की कोशिशो का ज़ारशाही सरकार समर्थन नहीं करती थी। ऐसी ही एक बुद्धिजीवी, एलिज़ावेता दनीलोवा नाम की युवा अध्यापिका थी। १६१३ में वह इवानोवो प्रदेश के आक्सियोनोवो गांव में गयी, केवलमात्र इस ध्येय को लेकर कि वह जनता के हित में अपना जीवन समर्पित कर देगी, लोगो को लिखना-पढ़ना सिखायेगी, उनके जीवन को बुद्धि-प्रकाश और ज्ञान से आलोकित करेगी।

परन्तु ज़ारशाही अधिकारियो ने इस महान प्रेरणा का स्वागत घोर शत्रुता के साथ किया। एक दिन एलिज़ावेता ने कुछेक किसानो को स्कूल में बुलाकर उन्हे संसार और मनुष्य की व्युत्पत्ति के बारे में बताने का निश्चय किया। उसने इसकी सूचना गांव के मुखिया को दे दी। गाव के

मुखिया ने इसकी सूचना गांव के पुलिसमैन को दे दी। और गांव के पुलिसमैन ने मनाही कर दी।

"यहां पर मैं कोई मीटिंग-वीटिंग नहीं होने दूंगा," उसने चिल्लाकर कहा। "मैं इस उस्तानी का भेजा दुरुस्त कर दूंगा।"

न केवल आक्सियोनोवो में ही बल्कि सारे रूस में यही स्थिति थी।

१९१३ में, राजकीय दूमा* में सार्वजनिक शिक्षा मन्त्रालय के बजट पर की गयी बहस में बदायेव नाम के एक बोल्शेविक ने भी भाषण दिया। उसके भाषण का मसविदा व्ला० इ० लेनिन ने तैयार किया था।

"जब जनता के अध्यापकों को तनख्वाहें देने का सवाल उठता है तो कहा जाता है कि रूस गरीब देश है," उसने गुस्से से कहा। "उन्हें बहुत ही कम तनख्वाहे दी जाती हैं। जनता के अध्यापक भूखे रहते हैं, सर्दी से ठिठुरते हैं और ऐसे झोपड़ो में दिन काटते हैं जिन्हे गरमाया नहीं जाता और जो इनसानो के रहने लायक नहीं हैं। जनता के अध्यापक उन ढोरों के साथ रहते हैं जिन्हें किसान लोग सर्दी के मौसम में झोपडो के अन्दर बांध देते हैं। जनता के अध्यापको पर गांव का प्रत्येक पुलिसमैन, गांव का यमदूत सभा का प्रत्येक सदस्य अथवा राजनीतिक पुलिस का आदमी और जासूस, जुल्म ढाता है, अपने से बड़े अधिकारियो द्वारा दिक और परेशान किये जाने का तो कहना ही क्या। जब सार्वजनिक शिक्षा के ईमानदार कर्मचारियो को तनख्वाहें देने का सवाल आता है तो रूस गरीब बन जाता है, लेकिन जब निठल्ले कुलीनो, सैनिक दुःसाहसियो, चीनी साफ करनेवाले कारखानो के मालिकों और तेल के नवाबो पर लाखों और करोड़ों रूबल खर्च किये जाते हैं तब रूस बहुत अमीर बन जाता है।"

ज़ारशाही सरकार, ज़मींदार और पूंजीपति समझते थे कि जनता के साक्षर हो जाने से उनके लिए जानी खतरा पैदा हो जायेगा, इसलिए साधारण लोगो को जितना मुमकिन हो सके, स्कूल से दूर रखने के लिए

---

*राजकीय दूमा — ज़ारशाही रूस में, सीमित अधिकारोवाली प्रतिनिधि सभा। १९०६ से १९१७ तक कार्य करती रही।

हर तरीका अपनाते थे। जारशाही रूस में सार्वजनिक शिक्षा की मद में राजकीय बजट का केवल ५ प्रतिशत खर्च किया जाता था।

इस प्रकार की नीति के फलस्वरूप, देश की श्रमजीवी जनता लगभग पूर्ण रूप से निरक्षर थी। बच्चों और किशोरों का लगभग ८० प्रतिशत भाग शिक्षा से वंचित रहता था। १८९७ में आबादी के एक हज़ार व्यक्तियों के पीछे २२३ व्यक्ति साक्षर थे, और इस संख्या में देश के सभी वर्गों के लोग शामिल थे। स्त्रियों में ८७,६ प्रतिशत निरक्षर थीं। अकारण ही लेनिन ने सार्वजनिक शिक्षा के ज़ारशाही मन्त्रालय को "सार्वजनिक अज्ञान का मन्त्रालय" नहीं कहा था।

१९१७ में महान समाजवादी अक्तूबर क्रान्ति की विजय ने श्रमजीवी जनता के सामने एक नये समाज के निर्माण का काम रखा जो शोषण और गरीबी से मुक्त होगा, जो संसार में सब से अधिक मानवीय समाज होगा—अर्थात् समाजवाद के निर्माण का काम रखा।

श्रमजीवी जनता सचेत रूप से समाजवाद और कम्युनिज़्म का निर्माण करती है। "हमारी दृष्टि में जनता की चेतना राज्य को मजबूत बनाती है," लेनिन ने कहा था। "राज्य मजबूत होता है जब जनता सब कुछ जानती है, हर बात पर राय कायम कर सकती है और हर काम सचेत रूप से करती है।"

फिर भी शुरू में निरक्षरता की काली दीवार जनता को सक्रिय रूप से समाजवादी निर्माण की ओर आकृष्ट होने में रोक रही थी। १९२० की अखिल रूसी जन-गणना से पता चला कि रूसी जनतन्त्र के केवल युरोपीय भाग में ही, १५ और ४९ साल की अवस्था के बीच के डेढ़ करोड़ से अधिक लोग निरक्षर थे। आबादी के एक हज़ार व्यक्तियों के पीछे ३१९ साक्षर थे, और स्त्रियों में तो इससे भी कम—केवल २२४। जनतन्त्र के ४० गुबर्नियों में युवकों और युवतियों का ८० प्रतिशत भाग न पढ़ सकता था, न लिख सकता था। इसका मतलब था कि अधिकांश जनता अखबार, किताबें और राज्य द्वारा प्रकाशित किये जानेवाले नये कानून तथा आज्ञप्तियां नहीं पढ़ सकती थी। यही कारण है कि क्रान्ति के बाद के पहले महीनों में ही निरक्षरता दूर करने के सवाल को इतने अधिक आग्रह

के साथ उठाया गया था। "एक निरक्षर व्यक्ति," लेनिन ने कहा था, "राजनीति से अलग-थलग रहता है, इसलिए सबसे पहले उसे अक्षर-बोध कराना चाहिए।"

सोवियत सरकार की स्थापना के पहले दिनो से ही कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता को शिक्षित करने का, लाखो-करोड़ो मेहनतकशो को पढ़ना और लिखना सिखाने का बीड़ा उठाया। अक्तूबर क्रान्ति की विजय के दूसरे दिन ही अर्थात् ८ नवम्बर, १९१७ को, सोवियतो की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस द्वारा रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतन्त्र का शिक्षा संबन्धी जन कमिसारियत (मन्त्रालय) स्थापित किया गया था। और अनातोली लुनाचार्स्की को इसका अध्यक्ष बनाया गया था।

शुरू से ही इस कमिसारियत का काम देश में पूर्ण साक्षरता प्राप्त करना और जनता को राजनीतिक शिक्षा देना था।

बालिगो की शिक्षा की ओर ध्यान देने के लिए कमिसारियत ने एक विशेष विभाग स्थापित किया। नदेज्दा क्रूप्स्काया*—सोवियत संघ में सांस्कृतिक विकास की विलक्षण नेत्री, सांस्कृतिक क्रान्ति तथा राष्ट्रव्यापी साक्षरता की सक्रिय समर्थक—उस विभाग की अध्यक्षा थीं। क्रूप्स्काया ने शहरो और देहातो में स्त्रियों के सांस्कृतिक तथा राजनीतिक स्तर को ऊंचा उठाने और राष्ट्रीय जनतन्त्रो और प्रदेशो में सार्वजनिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने की ओर बहुत ध्यान दिया। निरक्षरता के विरुद्ध उनके संघर्ष ने दिखा दिया कि वह एक विलक्षण संगठनकर्त्री ही नहीं थीं, बल्कि कुशल शिक्षा रीति-विशेषज्ञ और सिद्धान्तकर्त्री भी थीं। निरक्षर और अर्धनिरक्षर लोगो की शिक्षा के विषय पर उन्होंने अनेक लेख तथा निबन्ध लिखे, और साथ ही साक्षरता स्कूलो के लिए वर्णमाला की पुस्तकें और सहायक सामग्री तैयार करने में मदद दी। शिक्षा और सांस्कृतिक विकास के क्षेत्र में उनके विलक्षण अंशदान के लिए उन्हें लेनिन पदक तथा लाल ध्वज के पदक से सम्मानित किया गया था।

---

*न० क० क्रूप्स्काया (१८६९-१९३९)—राजनीतिज्ञा, विलक्षण शिक्षाशास्त्री, व्ला० इ० लेनिन की पत्नी, मित्र और साथिन।—सं०

१९१८ के अन्त में लेनिन ने 'साक्षर लोगो को भरती करने और सोवियत प्रणाली के बारे में प्रचार-कार्य संगठित करने' से सम्बन्धित आज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये। इस आज्ञप्ति में देश की समस्त साक्षर जनता को निरक्षर लोगो के बीच व्याख्यात्मक काम करने के लिए भरती करने की पूर्वकल्पना की गयी थी।

जनता में ज्ञान अर्जित करने की तीव्र इच्छा पायी जाती थी। लेनिन ने एक बार क्लारा जेटकिन से कहा था कि लाखो-करोड़ो लोग अपना नाम लिखना और गिनना सीखने और सुसंस्कृत बनने के लिए उत्कठित हैं।

क्रान्ति के पहले सालो में और गृह-युद्ध के दौरान पेश आनेवाली कठिनाइयां जनता के शिक्षा प्राप्त करने के संकल्प को तोड नहीं पायीं।

पुराने दिनो को याद करते हुए, क्रूप्स्काया ने एक बार कहा, "एक तसवीर मेरी आंखो के सामने सदा बनी रहती है। एक दिन शाम के वक्त, एक युवा कामगार, जो मोर्चे पर से लौट रहा था, और जिसके कन्धे पर से बन्दूक लटक रही थी, जिला सोवियत के दफ्तर में आया। 'स्कूल कैसे चल रहा है?' उसने पूछा। 'चाक और पेंसिलें तो हैं? मेरे हाथ भेज दीजिये, मैं वहीं जा रहा हूं।' वह अभी अभी मोर्चे पर से लौटा था, युद्ध की उत्तेजना अब भी उसके चेहरे पर झलक रही थी, और अब वह एक दूसरे मोर्चे पर, समाजवादी निर्माण के मोर्चे पर काम करने जा रहा था।"

ज्ञान और संस्कृति की भूख के फलस्वरूप भारी सख्या में साक्षरता मण्डल, सायकालीन पाठ्य-क्रम और स्कूल स्थापित किये गये। मजदूर और किसान, शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत से वर्णमाला की पुस्तको और स्कूल-सामग्री की तथा अध्यापको की मांग करते थे।

कम्युनिस्ट पार्टी और सरकार ने, अपने आप उठनेवाले इस आन्दोलन को हाथ में लिया और उसे सुसंगठित किया। मार्च १९१९ में, रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की आठवीं कांग्रेस द्वारा अंगीकृत नये कार्यक्रम में सार्वजनिक शिक्षा के बारे में एक विशेष परिच्छेद शामिल किया गया था। कार्यक्रम में सभी बच्चो के लिए मुफ्त और अनिवार्य, आम तथा बहुप्राविधिक शिक्षा, तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम में श्रमजीवी जनता के

सक्रिय रूप से भाग लेने की आवश्यकता पर बल दिया गया था। पार्टी ने मजदूरों और किसानों को आत्मशिक्षा और आत्मसुधार में हर मुमकिन मदद देने तथा पुस्तकालयों, बालिग़ों के लिए विस्तृत स्तर पर स्कूलों, जन विश्वविद्यालयों, पाठ्य-क्रमों इत्यादि को स्थापित करने का काम अपने सम्मुख रखा।

मई १६१६ में बालिग़ों की शिक्षा सम्बन्धी पहली अखिल रूसी कांग्रेस हुई जिसमें ८०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस कांग्रेस में इस क्षेत्र में किये गये पिछले डेढ़ साल के काम के नतीजों का निष्कर्ष निकाला गया।

लेनिन ने इस कांग्रेस की ओर विशेष ध्यान दिया। उसमें भाग लेनेवालों के सामने दिये गये अपने दो भाषणों में उन्होंने श्रमजीवी जनता के सांस्कृतिक पिछड़ेपन को दूर करने के लिए क़दम उठाने का आग्रह किया और निरक्षरता को दूर करने की घोर आवश्यकता पर बल दिया।

कांग्रेस द्वारा अंगीकृत 'निरक्षरता उन्मूलन' विशेष प्रस्ताव में सारे जनतन्त्र में सार्वजनीन शिक्षा की योजना की रूपरेखा दी गयी थी। परन्तु राजकीय सहायता और जनता के सक्रिय योग के बिना योजना को क्रियान्वित नहीं किया जा सकता था। यही कारण है कि कांग्रेस ने सोवियत सरकार से अनुरोध किया कि वह किशोरों और बालिग़ों में से निरक्षरता को दूर करने के संबन्ध में विशेष आज्ञप्ति जारी करे। पार्टी और सरकार ने इस अनुरोध का पालन किया।

लेनिन आज्ञप्ति

२६ दिसम्बर १६१६ को लेनिन ने 'रूसी सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतन्त्र की जनता में से निरक्षरता को दूर करने' से संबंधित जन कमिसार परिषद् की आज्ञप्ति* पर हस्ताक्षर किये। राज्य ने आठ और पचास साल के बीच की अवस्था वाले सभी निरक्षर लोगों के लिए, उनकी अपनी इच्छानुसार, मातृभाषा अथवा रूसी भाषा में पढ़ना-लिखना सीखना जरूरी करार दिया।

---

*देखिये परिशिष्ट १।

इसके लिए सोवियत राज्य ने सभी आवश्यक स्थितियां तैयार कीं। सभी मेहनतकशो को इस काम के लिए दिन में दो घण्टे छुट्टी दी जाती थी और पगार में कोई कमी नहीं की जाती थी। पढाई के लिए सरकार ने सार्वजनिक और निजी घरो, गिर्जों, क्लबो, फैक्टरियो, मिलो और दफ़्तरों में मुनासिब स्थानो का प्रयोग करने की इजाजत दे दी।

इस काम का निर्देशन शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत को करना था। परन्तु सरकार ने महसूस किया कि यह अकेले शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत के बस की बात नहीं है। इसी कारण आज्ञप्ति में इस बात का उल्लेख किया गया कि निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष में श्रमजीवी लोगो के सभी संगठन–पार्टी इकाइयां, ट्रेड-यूनियन, युवा कम्युनिस्ट लीग, महिला समितियां इत्यादि योग दें।

निरक्षर लोगो को पढ़ाने के लिए लाखो साक्षर लोग दरकार थे। और देश में ऐसे लोग बहुत कम मिलते थे। इसलिए देश ने अध्यापक भरती करने का केवलमात्र रास्ता, श्रम की अनिवार्य भरती का रास्ता, अपनाया जो उसके लिए खुला था। ऐसे साक्षर लोगो को जो सशस्त्र सेनाओ में भरती नहीं किये गये थे, निश्चित पारिश्रमिक देकर, निरक्षर लोगो को पढ़ाने के लिए भरती करने का निश्चय किया गया।

युवा जनतन्त्र में अब भी ऐसे लोग मौजूद थे–और उनकी संख्या नगण्य नहीं थी–जो सोवियत सत्ता का विरोध करते थे और लोगो को शिक्षित करने के प्रयास में बाधा डालने की कोशिश करते थे। आज्ञप्ति में विशिष्ट संगठनो को उन लोगो के खिलाफ कड़ी कार्यवाहियां करने, यहा तक कि मुकद्दमा दायर करने का अधिकार दिया गया जो निरक्षर लोगो को स्कूल जाने से रोकते थे।

आज्ञप्ति को सारे देश में प्रकाशित किया गया और कवियो, लेखको और कलाकारो ने इसका खूब प्रचार किया। हर जगह, यहां तक कि घरों की दीवारो और सड़को की पटरियों पर, 'निरक्षरता मुर्दाबाद!', 'निरक्षरता प्रतिक्रान्ति की मदद करती है!', 'साक्षरता की तलवार अज्ञान की ताकतो को परास्त करेगी!' नारे लिखे मिलते।

लेनिन आज्ञप्ति का मजदूरो, किसानो और प्रगतिशील बुद्धिजीवियो

ने मुक्तकण्ठ से स्वागत किया। शीघ्र ही उसे सम्पन्न करने के लिए किये जानेवाले आन्दोलन ने, अर्थात् निरक्षरता को खत्म करनेवाले आन्दोलन ने राष्ट्रव्यापी रूप ग्रहण किया।

अपूर्ण आंकड़ों के अनुसार, नवम्बर १६२० में, रूसी जनतन्त्र के ४१ युरोपीय गुवर्नियो और स्वायत्त प्रदेशों में १२ हजार से अधिक निरक्षरता उन्मूलन केन्द्र काम कर रहे थे जिनमें ३ लाख निरक्षर लोग पढ़ना-लिखना सीख रहे थे।

निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष में पेत्रोग्राद* के मजदूर लगभग सब से आगे थे। शुरू मे ही वहां वालिग़ो की तालीम का काम विस्तृत स्तर पर संगठित किया गया था। शहर के प्रत्येक हल्के की अपनी निरक्षरता उन्मूलन समिति थी। बालिग़ों की शिक्षा के पेत्रोग्राद विभाग में केन्द्रीय साक्षरता समिति स्थापित की गयी थी। निरक्षरता उन्मूलन स्कूलो में राजनीतिक विषयों पर भाषण देने के लिए पार्टी संगठन कम्युनिस्टो को भेजते थे। परीक्षा पास करने का दिन निरक्षरता उन्मूलन स्कूलो में उत्सव की तरह मनाया जाता था। १० जुलाई १६२० को, डिग्रियां देने की पहली रस्म के दिन, लगभग ५००० व्यक्ति जनता-भवन में इकट्ठे हुए थे।

मास्को और मास्को प्रदेश में भी विस्तृत स्तर पर निरक्षरता के विरुद्ध मोर्चा लिया गया। वहां इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया गया कि साक्षर मजदूरों को अपने निरक्षर सहकर्मियो को पढ़ाने के काम पर नियुक्त किया जाय। निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के लिए भरती किये जानेवाले हर १०० व्यक्तियों में से ८० मजदूर थे।

हर जगह साक्षरता संघर्ष का नेतृत्व कम्युनिस्टों ने किया। एक आम सभा में सार्वजनिक शिक्षा विभाग के एक प्रतिनिधि की रिपोर्ट सुनने के बाद 'त्र्योखगोर्नाया मनुफाक्तूरा' नामक मास्को की फ़ैक्टरी के पार्टी संगठन ने निरक्षर लोगो को पढ़ाने का काम कम्युनिस्टो को सौंपा। निज्नी नोवगोरोद गुवर्निया के पाव्लोवो और कनाविन हल्क़ों के पार्टी सम्मेलनो ने कम्युनिस्टो के बीच निरक्षरता के विरुद्ध आन्दोलन को तेज करने का

---

*पेत्रोग्राद – १६२४ में इसका नाम बदलकर लेनिनग्राद रखा गया। – सं०

निश्चय किया। सूरदाल हल्के के चौथे पार्टी सम्मेलन ने, लेनिन आज्ञप्ति को क्रियान्वित करने के काम में सक्रिय रूप से योग देने के लिए प्रत्येक साक्षर कम्युनिस्ट को वाध्य किया।

विस्तृत स्तर पर जनता ने पार्टी की नीति का समर्थन किया। तीख़विन हल्के के मेहनतकश किसानो की पहली गैरपार्टी कांग्रेस ने अपने प्रस्ताव में लिखा: "मजदूरो और किसानो के जनतन्त्र में एक भी निरक्षर व्यक्ति नहीं होना चाहिए और इस कारण गैरपार्टी कांग्रेस निरक्षरता उन्मूलन संवन्धी जन कमिसार परिषद् की आज्ञप्ति का स्वागत करती है और गुवर्निया की सीमाओ के अन्दर उसे क्रियान्वित करने का अनुमोदन करती है। जहालत मुर्दावाद!" येकातेरीनवर्ग गुवर्निया में दूसरी ग़ैरपार्टी कांग्रेस ने निरक्षरता ख़त्म करने के सवाल पर विचार किया और श्रमजीवी जनता से आग्रह किया कि "पूर्ण और सार्वत्रिक शिक्षा के महान और उत्कृष्ट आदर्श को पूरा करने के लिए प्रयास करे"।

परन्तु वह वक़्त अभी वहुत दूर था जव सारी की सारी आवादी पढ़-लिख सकती थी। देश के चारो ओर सैनिक मोर्चे आग उगल रहे थे। साम्राज्यवादियो और श्वेतगार्डो द्वारा छेड़ा जानेवाला गृह-युद्ध देश को तवाह कर रहा था। युवा सोवियत जनतन्त्र की आर्थिक स्थिति वड़ी विकट हो उठी थी। इस स्थिति को अव्यवस्था, दुर्भिक्ष और महामारियो ने और भी विकट वना दिया था।

इन स्थितियो में जनता को निरक्षरता के खिलाफ सक्रिय रूप से संघर्प करने के लिए अनुप्राणित करना मुश्किल काम था। इतना ही नहीं, सोवियत सत्ता के दुश्मन – धराशायी वर्गो के अवशेप, कुलक और पादरी – इस प्रयास को विफल करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे थे। रुकावट डालनेवाला एक और तत्त्व भी था – तोड़-फोड का वह काम जो पुराने वुद्धिजीवियो के एक भाग द्वारा किया जा रहा था। न तो पर्याप्त संख्या में स्कूल थे और न ही पर्याप्त मात्रा में कागज और पेंसिलें। वालिगो के लिए वर्णमाला की पुस्तकें न थीं, अध्ययन कार्यक्रम न थे, शिक्षा रीति सम्वन्धी पुस्तकें न थीं।

इन सभी वातो के कारण विशेप कदम उठाने की जरूरत थी। इसी

सोवियत संघात्मक समाजवादी जनतन्त्र की जन कमिसार परिषद् की आज्ञप्ति के अनुसार, जिसपर लेनिन ने १९ जुलाई, १९२० को हस्ताक्षर किये थे, जन शिक्षा सम्बन्धी कमिसारियत के राजनीतिक शिक्षा जेनरल बोर्ड (एक संगठन जो सारे देश में राजनीतिक शिक्षा के काम का संचालन करता था) के निर्देशन में अखिल रूसी निरक्षरता उन्मूलन असाधारण समिति स्थापित की गयी। असाधारण समिति को विस्तृत अधिकार प्राप्त थे। वह जितने भी लोग आवश्यक समझे, इस काम पर लगा सकती थी और काम में रुकावट डालनेवाले लोगों के विरुद्ध क़ानूनी कार्यवाही कर सकती थी।

पार्टी के प्रभाव को मजबूत बनाने और असाधारण समिति और श्रमजीवी जनता के बीच सम्पर्कों को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से एक स्थायी परामर्शदात्री कमीशन असाधारण समिति के साथ जोड़ दिया गया। इस स्थायी परामर्शदात्री कमीशन में रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति के महिलाओं के मामलों के विभाग और देहात के मामलों के विभाग के प्रतिनिधि, युवा कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति तथा लाल सेना के राजनीतिक विभाग के प्रतिनिधि शामिल थे। गुबर्नियों और हल्कों में भी निरक्षरता उन्मूलन असाधारण समितियों के साथ इसी प्रकार के कमीशन जोड़ दिये गये। असाधारण समिति के स्थानीय संगठनों की सहायता करने के लिए विशेष घुमक्कड़ अध्यापक नियुक्त किये गये।

असाधारण समिति ने निरक्षरता के विरुद्ध बाकायदा मुहिम शुरू कर दी।

"कैसी भी स्थितियां हों, काम करो, कुछ भी हो जाय, लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाओ"—उन वर्षों में निरक्षरता को खत्म करनेवाले आन्दोलन का इस प्रकार का नारा हुआ करता था।

अध्यापकों का सवाल बहुत परेशान करनेवाला सवाल था। असाधारण समिति ने मास्को में अध्यापकों के लिए अखिल रूसी अल्पकालिक प्रशिक्षण पाठ्य-क्रम शुरू किये। देश भर में इस प्रकार के कुल ८ हजार पाठ्य-क्रम थे।

अखबारों में विद्यार्थियों के लिए लेख और परामर्श, विशेष 'साक्षरता स्तम्भ' और परिशिष्ट प्रकाशित किये जाते। निरक्षर लोगों की सहायतार्थ

ख़ास अख़बार भी थे, जिनके नाम थे: 'शिक्षा प्रदर्शिका', 'नौसिखुओं के लिए किसान अख़बार', 'वर्ण वोध अख़बार'।

कठिनाइयां वहुत थीं, विशेषकर वर्णमाला की पुस्तको के संवंध में। "हमारी ख़ुराक है: पात गोभी का शोरवा और लपसी," "सावुन देखने में मैला हो तो भी मैल निकाल देता है"—वर्णमाला की पुरानी पुस्तको में इस प्रकार के वाक्य पाये जाते थे। इनसे जनता की राजनीतिक शिक्षा नहीं हो पाती थी। और केवल लोगो को लिखना-पढ़ना सिखाना ही काम नहीं था, उन्हें राजनीतिक दृष्टि से भी शिक्षित करना ज़रूरी था।

वालिगो के लिए वर्णमाला की एक नयी सोवियत पुस्तक की ज़रूरत थी। इस सवाल में लेनिन वहुत रुचि रखते थे, और उन्होने वर्णमाला की पुस्तक के प्रकाशन पर वहुत वल दिया। क्रूप्स्काया भी इसके वारे में वहुत चिन्ताशील थीं। असाधारण समिति ने वर्णमाला की सर्वोत्कृष्ट पाठ्यपुस्तक के लिए एक प्रतियोगिता की घोषणा की। और शीघ्र ही वह प्रकाशित की गयी।

मोर्चे पर लाल फ़ौज के सैनिको को लिखना-पढ़ना सिखाने के अपने अनुभवों को याद करते हुए, असाधारण समिति की सदस्या, द० एल्किना ने वताया कि पुरानी पाठ्यपुस्तक स्पष्टतः अनुपयुक्त थी।

"मैंने पाठ्यपुस्तक में पहला वाक्य—'माशा लपसी खाती थी'—पढ़ा ही था कि किसी की ऊंची व्यंगपूर्ण आवाज़ सुनायी दी: 'लपसी भी थी, माशा भी थी, पर अव न लपसी है न माशा'। और उस आदमी ने ऐसी अश्लील भाषा का प्रयोग किया कि लाल फ़ौज के सिपाही ठहाका मारकर हंस पड़े, और लज्जा से मेरा चेहरा लाल हो गया।

"क्षण भर के लिए तो मेरी समझ में नहीं आया कि मैं क्या करूं, इन लोगों को चुप कैसे कराऊं।

"पर प्रचारक के नाते मेरे अनुभव ने मेरी मदद की। ज्यो ही हंसी वन्द हुई मैंने विल्कुल अध्यापको की तरह, कड़ाई के साथ सैनिको से कहा:

"'क्या कारण है कि हमारे देश में, जो दुनिया के छठे भाग पर फैला हुआ है, दलिया नहीं मिलता? क्या कारण है कि हमारी माताएं, पत्नियां, प्रेमिकाएं और वहनें, अकेली, दु:ख और क्लेश का जीवन विताती

हैं? क्या कारण है कि तुम लोग अमन-चैन से न रह पाते हो, न काम कर पाते हो? इस गृह-युद्ध में तुम किस लक्ष्य के लिए लड़ रहे हो?'

"प्रत्यक्षतः इन सवालों का सीधा असर हुआ। सैनिक चुप हो गये, उनके चेहरे गम्भीर हो गये, उनमें से हरेक यही सोच रहा था कि क्या जवाब दे।

"लाल फौज के सैनिकों का मानसिक स्तर उन बालिगों से कहीं ऊंचा था जिन्हें मैं पहले पढ़ाया करती थी...

"इसलिए स्वाभाविक ही था कि 'माशा लपसी खाती थी' जैसे वाक्य सुनकर लोग हंसने लगे। ज्यों ही मैंने उनसे कोई गंभीर सवाल पूछा उनकी मनःस्थिति बदल गयी।"

एल्किना ने एक ऐसी पाठ्यपुस्तक तैयार की जिसमें वे क्रान्तिकारी विचार प्रतिबिम्बित होते थे जिन्होंने जनता को संघर्ष करने के लिए अनुप्राणित किया था। "हम गुलाम नहीं हैं, हम ज़रूर जीतेंगे," एक सैनिक ने जवाब दिया। और ये शब्द उस पाठ्यपुस्तक के पहले शब्द बन गये जिसे लपेटने के कागज़ पर, फौजी छापेखाने में छापा गया था। "यही वह तरीका था जो स्कूल और जीवन को जोड़ता था और जिसपर व्ला० इ० लेनिन सारा वक़्त बल दिया करते थे," क्रूप्स्काया ने लिखा।

नयी प्रथम पाठ्यपुस्तक ने अपना मूल्य सिद्ध कर दिया।

पुराने दिनों की बातों को याद करते हुए एल्किना ने कहा, "सदर मुकाम के एक राजनीतिक कर्मचारी ने बताया कि जिस समय सदर मुकाम को खाली किया गया उस समय वह एक कम्पनी के साथ बाहर गया हुआ था। लौटने पर उसने देखा कि राजनीतिक विभाग खाली पड़ा है और केवल टेलीफोन-आपरेटर ड्यूटी पर तैनात है। जो दृश्य उसने देखा उससे वह हैरान रह गया: दीवारों पर बिना किसी क्रम के कोयले के साथ बड़े बड़े अक्षरों में ये शब्द अंकित थे: 'हम गुलाम नहीं हैं, हम ज़रूर जीतेंगे।' जब उसने टेलीफोन-आपरेटर से पूछा कि इन शब्दों का क्या मतलब है तो उसने जवाब दिया, 'जगह छोड़ने से पहले हमारे साथी ये शब्द लिख गये हैं। वे कहते थे कि जब नीच श्वेत आयेंगे तो उन्हें पता चल जायेगा कि वे यहां ज्यादा देर नहीं टिक सकते।'

"साक्षरता की पढ़ाई वेकार नहीं गयी थी!"

इस भांति मोर्चे पर वालिगो के लिए पहली सोवियत वर्णमाला की पुस्तक नमूदार हुई थी।

१६२० में वर्णमाला की एक और पुस्तक छपकर आयी जिसका नाम था 'निरक्षरता मुर्दावाद'। इसे द० एल्किना, न० वोगुस्लाव्स्काया और अ० कुर्स्काया ने तैयार किया था। यह पुस्तक उन राजनीतिक नारो पर आधारित थी जो श्रमजीवी जनता के निकट और उसे वहुत प्यारे थे, जैसे:

हम गुलाम नहीं है।

हम दुनिया में आजादी ला रहे है।

मजदूर-किसान गठ-जोड़ अजेय है।

कम्युनिज्म हमारी फतह की मशाल है।

लोगो को पढ़ना-लिखना सिखाने के अतिरिक्त इस प्रकार की वर्णमाला की पुस्तक मेहनतकशो का सोवियत सरकार की नीति से परिचय कराती थी और नये समाजवादी समाज के लिए किये जानेवाले संघर्ष की ओर उन्हे खींचती थी।

'निरक्षरता मुर्दावाद' नाम की वर्णमाला की पुस्तक, जिसमें शिक्षा-रीति सम्वन्वी अनुक्रमणिका भी दी गयी थी, वड़ी लोकप्रिय सिद्ध हुई। शीघ्र ही एक वर्णमाला की पुस्तक लाल फौज के सैनिको के लिए और दूसरी किसानो के लिए प्रकाशित की गयी। साथ ही व्लादीमिर मयाकोव्स्की की 'सोवियत अक्षरमाला' नाम की पुस्तक भी थी जो पद्य में, तीखे राजनीतिक व्यंग के रूप में, खास तौर पर 'लाल फौज के इस्तेमाल के लिए' लिखी गयी थी।

उन कठिन वर्षों में सोवियत सरकार इस स्थिति में नहीं थी कि सभी विद्यार्थियो को पाठ्यपुस्तकें, कापियां और अन्य सामग्री जुटा पाये, इसलिए इनकी कमी को पूरा करने का कोई और ढंग निकालना जरूरी था। 'निरक्षरता संघर्षकारियो के लिए' नामक पुस्तिका में एक परिच्छेद था जिसका शीर्षक था: 'काग़ज, निवों, स्याही और पेंसिलो के विना कैसे काम चलाया जाय'। उसमें निम्नलिखित परामर्श दिया गया था: "कालिख-लगी हांडी के टुकड़ो पर स्लेट के लम्वे, नोकदार टुकड़े से लिखा जा

सकता है। गहरे रंगो से पुते हुए छोटे छोटे तख्तों पर खड़िया के साथ लिखा जा सकता है, और लिखने के बाद भिगोये हुए कपड़े से उसे साफ किया जा सकता है। सीसे के टुकड़े (पुराने वटन, छर्रे, कार्तूस, वन्दूक की गोलियां, चम्मच इत्यादि) वहुत वढ़िया पेंसिल का काम दे सकते हैं।" साथ ही स्याही तैयार करने के वारे में परामर्श दिया गया था कि उसे किस भांति चुकन्दर, एल्डर वृक्ष की लकड़ी इत्यादि से तैयार किया जा सकता है।

वहुत से गुवर्नियो में निरक्षरता विरोधी सप्ताह और दिन मनाये जाते थे, पेंसिलें, कागज़, कितावें इकट्ठी की जाती थीं, कन्सर्टो और नाटको इत्यादि के लिए टिकटो की जगह दाखला पेंसिलो, निवों और कागज़ के साथ किया जाता था।

कुछ निरक्षर लोग पढ़ना नहीं चाहते थे, उन्हें पढ़ाई की ओर आकृष्ट करने के लिए हर प्रकार की कोशिश की जाती: उनके लिए विशेष व्याख्यानों का प्रवन्ध किया जाता, उन्हें समझाया जाता और यहां तक कि उन्हें ज़वरदस्ती भी पढ़ाया जाता।

विदेशी सशस्त्र हस्तक्षेप और गृह-युद्ध के दिनो में पार्टी ने लाल फौज के सैनिको और नौसैनिकों में से निरक्षरता को दूर करने की ओर विशेष ध्यान दिया। उसने यह मांग की कि सशस्त्र सेनाओ में काम करनेवाले प्रत्येक मज़दूर और किसान को पढ़ना-लिखना सीखना चाहिए।

लाल फौज के सैनिको और नौसैनिको को तो मोर्चो पर भी पढ़ाया जाता था। सोवियत संघ के मार्शल सिम्योन वुद्योन्नी, पुराने दिनो को याद करते हुए वताते हैं:

"पहली घुड़सवार सेना के एक रेजिमेंट में मैंने यह दृश्य देखा: मोर्चो की ओर जंगी वनावट में जानेवाले घुड़सवारो की पीठ पर कमिसार, वड़े वड़े अक्षरों में लिखे हुए काग़ज़ टांक दिया करता था। किसी किसी वक़्त वह अपनी वर्छी ऊंची उठाकर, सामने वाले सैनिकों की पीठ की ओर इशारा करता और पीछे वाले घुड़सवारो से पूछता:

"'यह कौन सा अक्षर है?'

"'खे... ए... ए...'

"'खे नहीं ख...' कमिसार ठीक करके वताता, 'और यह?'

У НЕГРАМОТНОГО

СОТНИ ВРАГОВ:

ЭПИДЕМИЯ, ГОЛОД, НЕУСТРОЙСТВО, ОБИДЫ,

У ГРАМОТНОГО

МИЛЛИОН ДРУЗЕЙ—

ХОРОШИЕ, ПОЛЕЗНЫЕ КНИГИ!

इस पत्रक में कहा गया है:
"निरक्षर व्यक्ति के सैकड़ों दुश्मन होते हैं—महामारियां, भूख, अव्यवस्था, तिरस्कार। साक्षर व्यक्ति के लाखो दोस्त होते हैं: अच्छी, उपयोगी पुस्तके"—यह पत्रक पेर्म गुवर्निया की निरक्षरता उन्मूलन असाधारण समिति ने १९२० में जारी किया था।

"'स'।

"'ठीक।'

"इस तरह उन दिनों हमारे बहादुर घुड़सवारो ने पोस्टर पढ़ने सीखे: 'व्रांगेल मुर्दाबाद!' 'सालो का कचूमर निकाल दो!'"

अपने संस्मरणो में लेखिका ल० सैफुल्लीना ने बताया है कि गृह-युद्ध के दिनो में उराल में वह किस भांति पांचवीं लाल फौज के सैनिको को पढ़ाया करती थीं।

"सैनिको में हिसाब और सामाजिक विषय सीखने का बड़ा चाव पाया जाता था। पुश्किन की प्रतिभा ने उनमें पढ़ने की गहरी अभिलाषा पैदा कर दी थी। पर जहा तक व्याकरण और वाक्य-रचना

का सवालथा, इनपर उनका मन नहीं लगता था, वे उन्हें नीरस और अनावश्यक समझते थे और अक्सर क्लासों से गैरहाज़िर रहते थे। राजनीतिक कमिसार के हुक्म से कक्षा में एक सन्तरी बिठा दिया गया। सन्तरी के वहां मौजूद रहने से, पढ़नेवालो और अध्यापकों, दोनो को झेंप होती। फिर एक दिन कक्षा रूसी जनतन्त्र में निरक्षरता उन्मूलन सम्बन्धी आज्ञप्ति के मूलपाठ के व्याकरण और वाक्य-रचना का विश्लेषण करने लगी। लाल फौज के एक सैनिक ने पढ़ना शुरू किया: 'ताकि जनतन्त्र की समस्त जनता सचेत रूप से देश के राजनीतिक जीवन में भाग ले सके, जन कमिसार परिषद् यह आज्ञप्ति जारी करती है ...'

"इस स्थल पर एक आदमी ने चिल्लाकर कहा :

"'हम किस प्रकार के सचेत भागीदार हैं जब हम राजनीतिक भाषण तक ठीक भाषा में नहीं दे सकते। हम तो गंवार लोग हैं सभी विभक्तियों और कारको को गड़बड़ कर देते हैं और कुछ भी नहीं बना पाते... हमें अवश्य पढ़ना चाहिए और ख़ूब पढ़ना चाहिए!'

"उस रोज़ लाल फौज के सैनिको ने न केवल बड़ी तत्परता से बल्कि बड़े उत्साह से पढ़ाई की। आज्ञप्ति के पहले पैरे पर बड़ी गर्म जोशी से बहस हुई :

"'ज़ारशाही सैनिक राजनीति का नाम तक लेने का साहस नहीं कर सकता था!'

"'और अगर लेता भी तो फौरन उसका सिर क़लम कर दिया जाता...'"

"'और अगर 'सचेत रूप से' लेता तो फ़ाइरिंग स्क्वैड उसे गोली का निशाना बनाता!'

"'पुराने दिनो में एक सैनिक की क्या स्थिति थी? वह एक जानवर के बराबर था।'

"'और जन कमिसार परिषद् ने आज्ञप्ति जारी की है कि वह इनसान है! जनतन्त्र की सारी आबादी को इस योग्य बनाना चाहिए कि वह सचेत रूप से भाग ले सके...'

"इसके बाद सन्तरी को हटा दिया गया। हरेक व्यक्ति अपने मन में उन तबदीलियो की सही तसवीर आंकने की कोशिश करता जो नयी

राज्य पद्धति के कारण उसके जीवन में घट रही थीं, ताकि, जैसा कि लेनिन ने आग्रह किया था, वह नये जीवन को ज्यादा अच्छी तरह से समझ सके और उसके निर्माण में मदद दे सके।"

पार्टी संगठनो और कमिसारो के महान कार्य के परिणामस्वरूप सेना और नौसेना में साक्षरता स्कूलों की संख्या वड़ी तेजी से बढने लगी। जहां १६१८ के अन्त में उनकी संख्या लगभग ५०० थी वहां १६२० में वह बढ़कर ३६२५ तक जा पहुंची थी (इनमें से १५६६ मोर्चे पर की फौजो में थीं)। सेना में प्रत्येक हजार व्यक्तियो के पीछे ८२६ और नौसेना में प्रत्येक हजार व्यक्तियो के पीछे ६४२ पढ़-लिख सकते थे।

गृह-युद्ध के दिनो में लाल फौज और नौसेना में लगभग पूर्ण साक्षरता प्राप्त हो जाने से सैनिको की राजनीतिक चेतना में खूब वृद्धि हुई और वे उन लक्ष्यो को स्पष्टतः समझने में समर्थ हुए जिनके लिए वे संघर्ष कर रहे थे। विशाल स्तर पर वीरता और नि स्वार्थता, सर्वहारा क्रान्ति की सेना के स्वाभाविक गुण थे।

फौज में से निकलने के वाद, घर लौटकर, सैनिक और नौसैनिक अपने देशवासियो को पढना-लिखना सिखाते थे, राजनीतिक दृष्टि से उन्हे प्रशिक्षित करते थे।

कुर्स्काया ने, जो उस समय अखिल रूसी निरक्षरता उन्मूलन असाधारण समिति की अध्यक्षा थीं, निम्नलिखित शब्दो में उस काम का ब्योरा दिया है जो लाल फ़ौज के सैनिको ने मोर्चे पर से लौटकर किया। "वाहर से देखने में वे अध्यापको से नहीं लगते थे। उनके फटे पुराने वरान-कोट उनके कृश शरीरो को गरम नहीं रख पाते थे। टांगो पर पतली सी पट्टियां वंधी रहतीं और सिर पर फर की टोपियां, जिनके रंग फीके पड़ चुके थे। जाड़े की शामों को जव हवा चल रही होती और ठिठुरन और सर्दी वहुत होती, ये अध्यापक एक झोपड़े से दूसरे झोपडे की ओर जाते और वड़े धैर्य से किसानो के उद्दण्ड खुरदरे हाथो को उनके पहले अक्षर लिखना सिखाते..."

१६२० के अन्त तक लगभग ७० लाख लोग—जिनमें ४० लाख स्त्रियां थीं—पढ़ना-लिखना सीख चुके थे। यह वेशक वहुत वडा काम था

लेकिन निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में आगे की ओर केवल पहला कदम था। १५ और ५० के बीच की अवस्था के तमाम स्वस्थ लोगों में से ४६,८ प्रतिशत साक्षर थे। कुल आबादी के हिसाब से तो आंकड़े और भी कम बैठते थे। रूसी जनतन्त्र में नौ साल और इसके ऊपर की अवस्था के कुल लोगों में से केवल एक तिहाई पढ़ना-लिखना जानते थे।

निरक्षरता मुर्दाबाद!

गृह-युद्ध और विदेशी हस्तक्षेप में सोवियत जनता की जीत हुई। परन्तु देश की स्थिति में बहुत तनाव बना रहा। लेनिन ने कहा, "रूस की स्थिति जंग में से निकलने पर उस आदमी की सी हो रही थी जिसे मार मारकर अधमरा कर दिया गया हो: पूरे सात साल तक उसे पीटा और सताया गया है, अब अगर वह बैसाखियों के बल पर भी चल-फिर सके तो हैरानी की बात होगी!" अधिकांश फैक्टरियां और मिलें बन्द पड़ी थीं। यातायात-प्रणाली बर्बाद कर दी गयी थी। ईंधन और खुराक का संकट उत्तरोत्तर तीव्र होता जा रहा था। इसपर १९२१ में इतनी बुरी फ़सल हुई जितनी पहले कभी नहीं हुई थी, इससे स्थिति और भी अधिक विकट हो उठी। बेरोज़गारी का बोलबाला था। बहुत से मज़दूर दुर्भिक्ष और अभाव से भागकर देहात में चले गये जिससे मज़दूर वर्ग बिखर गया था। अत्यावश्यक खाद्य-पदार्थों और तैयार माल के अभाव के परिणामस्वरूप मुनाफाखोरी शुरू हो गयी।

वे किसान जिन्होंने गृह-युद्ध के दिनों में सोवियत सरकार की सहायता की थी अब राज्य को अनाज देने से इन्कार कर रहे थे जैसा कि अतिरिक्त उपार्जन प्रणाली* के अनुसार उन्हें देना बनता था। अपना

* अतिरिक्त उपार्जन प्रणाली – गृह-युद्ध और हस्तक्षेप के दिनों में राज्य द्वारा खेतीबारी की उपज को प्राप्त करने की रीति, जब किसान लोग राज्य को अतिरिक्त अनाज देने, यहां तक कि अपनी ज़रूरत के अनाज और अन्य कृषि-पदार्थों का कुछ हिस्सा तक देने पर बाध्य होते थे। – सं०

उल्लू सीधा करने के लिए अधिकार-च्युत वर्गों और प्रतिक्रान्तिकारी पार्टियों के अवशेषों ने किसानों में पाये जानेवाले असन्तोष को इस्तेमाल करने की कोशिश की।

इस प्रकटतः विकट स्थिति में से सोवियत जनतन्त्र को निकालने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी ने वीरतापूर्ण प्रयास किये।

उद्योग और यातायात को बहाल करना तथा अव्यवस्था पर काबू पाना जरूरी था। जरूरत इस बात की थी कि मजदूरों और किसानों की स्थिति को बेहतर बनाया जाय, उनकी कठिनाइयों को दूर किया जाय, जनता को नये जीवन का निर्माण करने के लिए अनुप्राणित किया जाय ताकि पिछड़े हुए रूस को एक शक्तिशाली और स्वतन्त्र समाजवादी ताकत में परिणत किया जा सके।

पर देश शुरू कहां से करता? बहाल करने के लिए धन कहां से लाता? पूंजीवादी देश ऋण देने के लिए तैयार न थे, क्योंकि वे जनतन्त्र का आर्थिक दृष्टि से गला घोटने की आस लगाये बैठे थे। विश्व पूंजीपति वर्ग ने सोवियत सत्ता को नष्ट कर देने की अपनी योजनाएं त्याग नहीं दी थीं।

परन्तु कम्युनिस्ट पार्टी ने सही रास्ता ढूंढ निकाला। लेनिन के सुझाव पर, मार्च १६२१ में होनेवाली दसवीं पार्टी कांग्रेस में यह प्रस्ताव रखा गया कि सरकार अतिरिक्त उपार्जन प्रणाली के स्थान पर उपज कर* लगाये। उन्मुक्त व्यापार फिर से लागू किया गया। नयी आर्थिक नीति में संक्रमण से देश के आर्थिक जीवन को फिर से उठाने में, देश की उत्पादन-शक्तियों को विकसित करने और औद्योगिक विकास के लिए धन-राशि का संचय करने में मदद मिली और मजदूर वर्ग और किसानों का गठ-जोड़ और सर्वहारा अधिनायकत्व सुदृढ बने।

राज्य के पास धन की बहुत कमी थी। लगभग हर चीज में उसे मितव्ययता की जरूरत थी। परन्तु उन कठिन दिनों में भी लेनिन ने

---

*उपज कर – किसानों की उपज पर लगाया जानेवाला, दृढ़ता से निश्चित, वस्तु-रूप कर। – सं०

इस वात पर वल दिया कि किसी भी संस्था के खर्च में कमी की जा सकती है लेकिन साक्षरता आन्दोलन के खर्च में कमी नहीं की जा सकती।

फिर भी, युद्ध के वाद के पहले वर्षों में स्थानीय सोवियतों के पास धन के अभाव के कारण, गांवों में वहुत से वाचनालय और पुस्तकालय तथा साक्षरता पाठ्य-क्रम वन्द करने पड़े। ऐसे पाठ्य-क्रमों की औसत संख्या प्रत्येक गुवर्निया में जहां १९२१ में १६०० थी, वहां अप्रैल १९२२ में गिरकर १५० रह गयी। यह स्थिति वरदाश्त नहीं की जा सकती थी, इसलिए पार्टी ने जनता से अपील की कि निरक्षर लोगों को स्वेच्छा से पढ़ाया जाय और इस दिशा में ट्रेड-यूनियनों, सहकार-संस्थाओं, औद्योगिक संस्थापनों और लाल फ़ौज की इकाइयों की मदद हासिल की।

फर्वरी १९२२ में निरक्षरता उन्मूलन संवन्धी पहली अखिल रूसी कांग्रेस हुई। इसमें ४४ गुवर्नियों के तथा सशस्त्र सेनाओं और ट्रेड-यूनियनों की केन्द्रीय समितियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वड़ी गर्मागर्म वहस के वाद निश्चय किया गया कि पुराने वाचनालयों, पुस्तकालयों और पाठ्य-क्रमों को फिर से खोल दिया जाय और साथ ही नये वाचनालय, पुस्तकालय तथा पाठ्य-क्रम स्थापित किये जायं।

कठिनाइयां वहुत थीं और उनसे डरकर कुछेक सार्वजनिक शिक्षा शास्त्रियों ने सुझाव रखा कि सांस्कृतिक और शिक्षा संवंधी संस्थापनों को वन्द कर दिया जाय और स्थिति के वेहतर हो जाने तक निरक्षरता विरोधी संघर्ष को स्थगित कर दिया जाय। मार्च १९२२ में होनेवाली पार्टी की ११ वीं कांग्रेस ने इन भावनाओं की भर्त्सना की और शिक्षा सम्वन्धी जन कमिसारियत के सामने सुझाव रखा कि वह राजनीतिक शिक्षा कार्य की मद में धन अलग रखे और उसकी क्रियान्विति के लिए गुवर्नियों की पार्टी समितियों को ज़िम्मेदार ठहराये।

कांग्रेस के प्रस्ताव के वाद केन्द्रीय समिति और राजनीतिक शिक्षा के जेनरल वोर्ड की ओर से एक विशेष परिपत्र जारी किया गया जिसमें स्थानीय पार्टी संगठनों को हिदायत की गयी कि वे निरक्षरता विरोधी आन्दोलन पर सारा वक़्त निगरानी रखें। शिक्षा सम्वन्धी जन

कमिसारियत के आदेश पर हल्को और वोलोस्तो* के सभी सार्वजनिक शिक्षा विभागो ने अध्यापको के विशेष दल तैयार किये। १९२३ के शुरू में निरक्षरता उन्मूलन असाधारण समिति तथा सोवियत संघ की ट्रेड-यूनियनो की केन्द्रीय परिषद् ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किये जिसके अनुसार ट्रेड-यूनियनो ने निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगो को पढाने के लिए धन जुटाने का बीड़ा उठाया।

साक्षरता पाठ्य-क्रमो की संख्या फिर बढ़ने लगी। अब की बार इनकी देख-रेख का काम औद्योगिक संस्थापनो, राजकीय फार्मो तथा लाल फौज की इकाइयो को सौंपा गया।

जहां १ अक्तूबर १९२२ को, रूस में १०१२ साक्षरता पाठ्य-क्रम थे और उनमें २५,३०० व्यक्ति शिक्षा पाते थे, वहां १ अप्रैल १९२३ को पाठ्य-क्रमो की संख्या ३६०७ और उनमें पढनेवालो की सख्या १,०४,६०६ तक जा पहुंची थी।

जनता के सांस्कृतिक विकास और साक्षरता को बढ़ाना स्वय जीवन की अनिवार्य मांग थी।

इसी बात पर लेनिन ने बार बार बल दिया। "एक निरक्षर देश में कम्युनिस्ट समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता," लेनिन ने पार्टी से कहा।

यह सर्वविदित है कि रूसी मेन्शेविक**, दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय सघ के नेताओ की भाति, अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति की वैधानिकता से इन्कार करते थे और इस बात में विश्वास नहीं रखते थे कि रूस में समाजवाद का निर्माण करना संभव है। उनका कहना था कि समाजवाद के निर्माण के लिए आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के निश्चित स्तर का होना जरूरी है और रूस आर्थिक और सांस्कृतिक, दोनो प्रकार से एक पिछडा हुआ देश था।

---

*वोलोस्त – देहात का छोटा प्रशासकीय इलाका। – अनु०

**मेन्शेविक – रूस के श्रम आन्दोलन में एक टुटपुंजिया अवसरवादी दल। – सं०

1273

इसके जवाव में लेनिन ने कहा, "आप कहते है कि समाजवाद के निर्माण के लिए सभ्यता का होना आवश्यक है। बहुत अच्छी वात है। परन्तु हम अपने देश में रूसी जमींदारो और पूंजीपतियों को निकालकर सभ्यता के ऐसे पूर्वापेक्षित तत्त्वों का निर्माण करना क्यो नहीं शुरू कर सकते और उसके वाद समाजवाद की ओर क्यो नहीं वढ़ सकते?"

ये पूर्वापेक्षित तत्त्व तैयार किये गये। समाजवादी निर्माण के महत्त्वपूर्ण आर्थिक और राजनीतिक कामों का सुलझाना अव वहुत हद्द तक श्रमजीवी जनता के सांस्कृतिक स्तर और राजनीतिक चेतना पर निर्भर करता था। दूसरी ओर, सांस्कृतिक स्तर में वृद्धि समाज के आर्थिक और राजनीतिक विकास पर निर्भर करती थी। इस परस्पर सम्वन्ध पर वल देते हुए लेनिन ने लिखा कि सोवियत जनतन्त्र की सांस्कृतिक क्रान्ति में "अत्यधिक गंभीर कठिनाइयां पायी जाती है जिनका स्वरूप सर्वथा शिक्षा से संवन्ध रखता है (क्योकि हम निरक्षर है) और भौतिक है (क्योकि सुसंस्कृत वनने के लिए ज़रूरी है कि हम उत्पादन के भौतिक साधनों के विकास में एक विशेष स्तर प्राप्त करें, ज़रूरी है कि हमारे पास कोई भौतिक आधार हो)"।

कम्युनिस्ट निर्माण की योजना वनाते हुए लेनिन ने कहा कि सांस्कृतिक क्रान्ति उसके अभिन्न अंगों में से एक है। अपनी अनेक रचनाओं और भाषणो में, विशेषकर अपने अन्तिम लेखो—"डायरी के पन्ने", "सहकारिता के वारे में" और "हमारी क्रान्ति"—में उन्होंने सांस्कृतिक क्रान्ति के सार-तत्त्वों और कार्यो की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा उसका व्योरेवार और सर्वांगीण विश्लेषण किया: अतीत की सांस्कृतिक विरासत का उपयोग; संस्कृति का मुट्ठी भर लोगों की सम्पत्ति से सभी लोगों की सम्पत्ति में रूपान्तरण; स्कूल का कम्युनिस्ट शिक्षा के एक हथियार में रूपान्तरण; पढ़ाई के अतिरिक्त तालीम का सर्वांगीण विकास (क्लवें, पुस्तकालय, सिनेमा, थियेटर, रेडियो, संग्रहालय इत्यादि); सच्चे अर्थो में जनता के वुद्धिजीवियों को तैयार करना।

लेनिन ने वताया कि समाजवाद में संक्रमण के लिए साधारण जनता के सांस्कृतिक विकास की एक पूरी कालावधि की ज़रूरत होगी।

"इस ऐतिहासिक कालावधि के बिना, सार्वत्रिक साक्षरता के बिना, कार्य-कुशलता के यथोचित स्तर के बिना, जनता को पुस्तकें पढ़ने की आदत डालने की दिशा में पर्याप्ततः प्रशिक्षित किये बिना," उन्होंने कहा, "हम अपने ध्येय को प्राप्त करने में असफल रहेंगे।"

हमारे देश में, जो उस समय पिछड़ा हुआ और निरक्षर देश था, सांस्कृतिक क्रान्ति की शुरुआत निरक्षरता के विरुद्ध चौतरफा आन्दोलन से की जानी थी। लेनिन ने बल देकर कहा कि वही पार्टी का सब से अधिक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक काम था। अक्तूबर १९२१ में, राजनीतिक शिक्षा संबन्धी दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में भाषण देते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृति के स्तर को ऊंचा उठाने का काम सब से अधिक तात्कालिक कामों में से है। उन्होंने आगे चलकर कहा कि निरक्षरता सोवियत सत्ता के सब से बुरे शत्रुओं में से है।

"जब हमारे देश में निरक्षरता जैसी चीज मौजूद है तो सचमुच, राजनीतिक शिक्षा की बात करना कठिन है," लेनिन ने कहा। "यह एक ऐसी शर्त है जिसके बिना हम राजनीति की चर्चा नहीं कर सकते ... इसके बिना कोई राजनीति संभव नहीं, इसके बिना केवल अफ़वाहें, गप्पें, परीलोक की कहानियां, पूर्वाग्रह ही संभव हैं, राजनीति संभव नहीं।"

लेनिन ने सांस्कृतिक क्रान्ति के विस्तृत महत्त्व पर बल दिया, विशेषकर, देहात में सहकारी प्रणाली को सुदृढ बनाने के लिए। और उन दिनों निरक्षर लोगों में से अधिकांश किसान हुआ करते थे। लेनिन ने बार बार बल देकर कहा कि समाजवाद की दिशा में प्रगति तभी संभव है जब गांव में सांस्कृतिक उन्नति की लहर उठे। यह बताते हुए कि इसमें मजदूर वर्ग नेतृत्वकारी भूमिका अदा करेगा, उन्होंने देहात के ऊपर नगर की सांस्कृतिक सरपरस्ती के विचार की रूपरेखा प्रस्तुत की और उसकी एक ऐसे विराट, अत्यधिक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक कार्य के रूप में व्याख्या की जो मजदूरों और किसानों के गठ-जोड़ को मजबूत बनायेगा। इस सरपरस्ती के रूपों की गणना करते हुए उन्होंने सुझाव रखा कि औद्योगिक मजदूरों की सोसाइटियां कायम की जायें जो सांस्कृतिक विकास

में देहात की मदद करने का काम अपने सम्मुख रखें। पश्चिमी साइबेरिया में प्राप्त अनुभव के आधार पर लेनिन ने सिफारिश की कि शहर के प्राथमिक संगठन देहात की सरपरस्ती का काम हाथ में लें, जहां वे गांव के प्राथमिक संगठनों की सांस्कृतिक ज़रूरतों को पूरा करने की ओर ध्यान दे सकें। हमें एक ऐसी स्थिति को प्राप्त करना चाहिए, लेनिन ने कहा, जहां "लिख-पढ़ सकने की योग्यता संस्कृति की उन्नति में, और किसान को इस योग्य बनाने में सहायक होगी कि वह इस योग्यता का प्रयोग करते हुए अपने फार्म को और अपने राज्य को बेहतर बना सके।" समाजवादी निर्माण में देहात को आकर्षित करने का यह एक साधन था।

पार्टी और सोवियत सरकार ने जनता को साक्षरता के लिए सक्रिय रूप से काम करने के लिए प्रेरित किया।

वे दिन कठिनाइयों से भरे थे।

पढ़ना आसान काम नहीं था। "जब मैं इसके बारे में सोचती हूं," क्रूप्स्काया ने लिखा, "तो मुझे वह पहला वाक्य याद आ जाता है जो पेत्रोग्राद में, नेवा-द्वार के पार स्थित मैक्सवैल फ़ैक्टरी के मेरे एक मज़दूर शागिर्द ने शाम की कक्षाओं में पढ़ते हुए लिखना सीखा था। उसने लिखा: 'एक मज़दूर के लिए पढ़ना बहुत मुश्किल है जब कि वह दिन में १२ घण्टे काम करता हो, पर अगर हम अपने हितैषियों को हमसे १५ घण्टे रोज़ काम करवाने से रोकना चाहते हैं तो हमारे लिए पढ़ना ज़रूरी है।' यह बहुत बरस पहले की बात है जब पूंजीपति लोग मालिक हुआ करते थे। इसी विचार को अब इस भांति शब्दबद्ध करना चाहिए: 'एक मज़दूर के लिए पढ़ना बहुत मुश्किल है जब कि उसके सिर पर देश के प्रशासन जैसे जटिल काम की ज़िम्मेवारी आ पड़ी हो, और ऐसे देश के प्रशासन की जो युद्ध द्वारा तबाह और बर्बाद कर दिया गया है, एक निरक्षर देश की जिसे ज़ारशाही ने भ्रष्ट कर दिया है; एक मज़दूर के लिए पढ़ना बहुत मुश्किल है जब कि उसका सारा वक़्त अव्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करने में खप जाता हो; पर यदि जनता के हितैषियों, पूंजीपतियों और ज़मींदारों को वापिस लौटने और पुरानी व्यवस्था को बहाल करने से रोकना है तो मज़दूर के लिए पढ़ना ज़रूरी है।'

"पढ़ना जरूरी है, और जल्दी से जल्दी, विना वक्त खोये।"

और इस तरह मजदूर और किसान पढने लगे—वे वडी तत्परता से, धैर्य से पढ़ते, यह समझकर कि लिखना-पढ़ना सीखने से वे नयी सामाजिक प्रणाली को सुदृढ़ वनाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

'निरक्षरता उन्मूलन' संवन्धी लेनिन आज्ञप्ति में उसकी क्रियान्विति के वारे में कोई अन्तिम तिथि निश्चित नहीं की गयी थी, परन्तु फरवरी १६२० के अन्त में लेनिन ने विश्वास के साथ कहा, "यदि हम दो साल के अर्से में एक वहुत ही कठिन सैनिक समस्या को हल करने में सफल हुए हैं, तो ५-१० सालो में हम इससे कहीं ज्यादा कठिन समस्या को—शिक्षा और सांस्कृतिक प्रगति की समस्या को—हल कर लेंगे।"

मई १६२३ में होनेवाली निरक्षरता उन्मूलन संवन्धी दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में क्रूप्स्काया ने निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के वारे में लेनिन का आदेश वताया। "व्लादीमिर इल्यीच के वीमार पड़ने से कुछ ही समय पहले," क्रूप्स्काया ने कहा, "मैंने उन्हें वताया कि अमेरिकी लोग १६२७ तक अपने देश से निरक्षरता को खत्म कर देने की चर्चा कर रहे हैं। इसपर व्लादीमिर इल्यीच ने जवाव दिया: 'हमें भी उस समय तक निरक्षरता को खत्म कर देना चाहिए।' वह इस विषय पर एक विशेष लेख लिखना चाहते थे, लेकिन वीमारी के कारण नहीं लिख पाये।"

काग्रेस ने, महान अक्तूवर समाजवादी क्रान्ति की दसवीं सालगिरह तक, अर्थात् १६२७ तक, १८ और ३५ साल के वीच की अवस्था के सभी सोवियत नागरिको में से निरक्षरता को दूर कर देने की योजना अपनायी। लेनिन की पहलकदमी पर परिष्कृत की गयी इस योजना में ५ साल के अर्से में १ करोड़ ७० लाख लोगो को लिखना-पढना सिखाने की पूर्वकल्पना की गयी थी।

कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने कांग्रेस के निश्चय का अनुमोदन किया और पार्टी के कार्यकर्ताओ से अनुरोध किया कि वे निरक्षरता को दूर करने में हर प्रकार की मदद दें। लेनिन द्वारा सुझायी गयी निश्चित अवधि को कानून का रूप देने का निश्चय करते हुए,

सोवियत सरकार ने अगस्त १९२३ में इस आशय की एक विशिष्ट आज्ञप्ति जारी की।

इस काम के लिए धन का सवाल फिर उठा। राज्य अब भी इस स्थिति में नहीं था कि आवश्यक धन-राशि इस मद में निर्धारित कर सके। पर हजारों-लाखों श्रमजीवी लोगों ने राज्य की यह कठिनाई दूर कर दी। साधारण जनता की पहलकदमी और पार्टी की सहायता से १९२३ में 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा नाम का एक स्वयंसेवक जन संगठन (ओ० द० न०) कायम किया गया। इसके पहले सदस्य थे: लेनिन, मिखाइल कालिनिन, क्रूप्स्काया तथा लुनाचार्स्की। कालिनिन, जो निरक्षरता दूर करने की दिशा में विशेष रूप से उत्सुक थे, सभा के स्थायी अध्यक्ष थे।

सभा के संस्थापकों और उसके पहले बोर्ड, (क्रुस्कोया, एल्किना, कवि देम्यान बेद्नी, सार्वजनिक शिक्षा के साइबेरियाई विभाग की प्रतिनिधि ओ० काइदानोवा, शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत का एक अधिकारी म० इप्स्तीन इत्यादि) ने पार्टी, सरकार और ट्रेड-यूनियन के सभी संगठनों को एक परिपत्र भेजा जिसमें आग्रह किया गया था कि वे 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा की शाखाएं खोलने में मदद करें। साक्षरता आन्दोलनों को संगठित और क्रियान्वित करने में यह सभा अखिल रूसी निरक्षरता उन्मूलन असाधारण समिति की प्रमुख सहायिका बनी।

निरक्षरता मुर्दावाद! ये शब्द देश के कोने कोने में गूंज गये। इन शब्दों ने सभाओं और बैठकों में नारों का रूप लिया, पोस्टरों और प्रदर्शन-पट्टों पर ये शब्द लिखे गये। हर जगह, यहां तक कि दूरस्थ गुबर्नियों में भी 'निरक्षरता मुर्दावाद' नाम के अखबार प्रकाशित किये गये। उन अखबारों में ब्योरे के साथ बताया जाता कि जनता किस भांति निरक्षरता से मोर्चा ले रही है, और 'अक्तूबर क्रान्ति की दसवीं सालगिरह तक निरक्षरता को खत्म करो!' 'अगर स्वयं पढ़ना जानते हो तो निरक्षरों को पढ़ाओ!' जैसे नारे छापे जाते।

नगर और देहात में 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा की शाखाएं धड़ाधड़ खुलने लगीं। पार्टी, युवा कम्युनिस्ट लीग, ट्रेड-यूनियन संगठन,

राजनीतिक शिक्षा संस्थान, प्रान्तीय तथा हल्का कार्यकारिणी समितियां, और बुद्धिजीवी लोग, विशेषरूप से अध्यापक लोग उन्हे स्थापित करते थे।

आन्दोलन में विद्यार्थियो ने सक्रिय रूप से भाग लिया। मास्को में सभा की हल्का शाखाओ के संस्थापको में ६० विद्यार्थी थे जिनमें से २३ कम्युनिस्ट थे। १६२४ में, कुछ ही महीनों के अन्दर, १ हजार से अधिक विद्यार्थी मास्को सभा के सक्रिय सहायक बन गये थे।

सभा का भौतिक आधार खडा करने में सभा के सदस्यो ने बहुत कुछ किया। जिस धन से वे काम चलाते थे वे सदस्यता के चन्दे और दान में दी गयी बड़ी रक़मो से आता था। इस प्रकार का पहला बड़ा दान–१० हज़ार रूबल–'इज़्वेस्तिया' अख़बार ने दिया। सभा के केन्द्रीय बोर्ड ने १५ हजार बिल्ले बनवाये। बिल्ले की शक्ल पांचकोने सितारे की सी थी जिसमें एक पुस्तक पर बायीं ओर लेनिन का चित्र और दायीं ओर ये शब्द अंकित थे: 'अक्तूबर क्रान्ति की दसवीं सालगिरह तक निरक्षरता को खत्म करो!' ऐसे बिल्ले सारे देश में बांटे जाते, इन बिल्लो से प्राप्त होनेवाली रक़म सभा को जाती थी।

सभा क्या काम करती थी? वह साक्षरता पाठ्य-क्रम खोलती तथा उनका खर्च चलाती थी और उन्हें अध्यापक जुटाती थी। १६२४-२५ के पाठ्य-वर्ष में सभा ने १२ हज़ार पाठ्य-क्रम चलाये जिनमें से अधिकांश देहात में थे। सभा की शाखाएं इन पाठ्य-क्रमों को स्कूल की आवश्यक सामग्री जुटाती रहती थीं। उसके सदस्य विस्तृत स्तर पर प्रचार-कार्य करते, एकदिवसीय, त्रिदिवसीय और सप्तदिवसीय निरक्षरता विरोधी आन्दोलन सगठित करते। सभा के विचारो के प्रचार तथा निरक्षरता को दूर करने में मई १६२४ के त्रिदिवसीय राष्ट्रव्यापी आन्दोलन ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की। उसके नारे थे· 'प्रत्येक व्यक्ति निरक्षरता विरोधी सग्राम में शामिल हो जाय!'. 'यदि आप पढ़ना-लिखना जानते है तो 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा में शामिल हो जाइये और निरक्षरो को पढ़ाने में मदद कीजिये!' तथा 'लेनिन के आदेश का पालन करने में हमें अभी क्या करना है?'

इस त्रिदिवसीय आन्दोलन के वाद सभा की नयी शाखाएं खुल गयीं। कुछेक हल्को में सारे के सारे गांव सभा में शामिल हो गये। निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष देश के सभी भागो में फैल रहा था।

इवानोवो-वोज़्नेसेन्स्क गुवर्निया का जंगलो से भरा मकारियेव हल्का उन दिनो वहुत ही पिछड़ा हुआ था। सैकड़ो मील तक घने, अलंघ्य देवदार के जंगल फैले हुए थे। गांवो के झुरमुट केवल उन्ज़ा, नेया तथा नेम्दा नदियो के तटो के निकट वसे हुए थे। आवादी वहुत विरल थी। गुवर्निया में दस रेलवे लाइनें थीं लेकिन उनमें से एक भी इस हल्के में से गुज़रकर नहीं जाती थी। गुवर्निया के अन्य भागो के साथ इसका वहुत कम सम्पर्क था, और जाड़ो में तो लगभग न के वरावर था। निरक्षरता का वोलवाला था। स्कूलो में आधे से कुछ ही ज्यादा वच्चे पढ़ने जाते थे। जहां तक वालिगो का सवाल है, स्थिति इससे भी वुरी थी। कुछेक गांवो में तो एक भी आदमी ऐसा न था जो पढ़-लिख सकता हो।

१६२४ के पतझड़ में 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा ने यहां पर एक शाखा खोली। सभी अध्यापक इसमें शामिल हो गये। सभा की शाखा ने ३२ दल कायम किये जिनमें ५५० निरक्षर किसान शामिल हुए। कक्षायें स्कूलो और किसानो के झोंपड़ों में वैठती थीं। सभा इन दलो को कागज़ और पेंसिलें जुटाती, सहकारी संगठन मिट्टी का तेल और लैम्प जुटाते, और स्वयं किसान जलाने के लिए लकड़ी दे जाते। शीघ्र ही मकारियेव शाखा की २३ उपशाखाएं खुल गयीं जिनके १०६३ सदस्य थे। शिक्षा ने इस पिछड़े हुए इलाके में नया जीवन डाल दिया।

१६२७ में, 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा की सर्वोत्कृष्ट साक्षरता कक्षा और शाखा की अखिल रूसी प्रतियोगिता में पहला इनाम – छोटा सा एक फिल्म-प्रोजेक्टर – कुवान के गांव वास्यूरिन्स्काया ने जीता।

१२ हज़ार की आवादी वाले इस पुराने कज्ज़ाक गांव में क्रान्ति से पहले जहालत और अन्धकार छाया हुआ था। अक्तूवर क्रान्ति ने गांव के लोगो में नयी रूह फूंक दी, नये जीवन के पथ पर उन्हें अग्रसर किया। 'निरक्षरता मुर्दावाद' का नारा, जो देश भर में गूंज रहा था,

वास्यूरिन्स्काया में भी सुनायी देने लगा। वहां पर खुलनेवाली 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा की शाखा ने सभा की केन्द्रीय परिषद् के साथ सम्पर्क स्थापित किया और आवश्यक पुस्तकें तथा स्कूल का साज-सामान हासिल किया।

शाखा बड़ी तेजी से पनपने लगी। स्थापना के साल भर बाद ही इसकी सदस्य-संख्या बढ़कर ८०० से ऊपर तक जा पहुंची। सदस्यता का चन्दा गेहूं, जौ, और सूरजमुखी के बीजों के रूप में दिया जाता था। शीघ्र ही सहकारी संगठन, ट्रेड-यूनियन तथा ग्राम सोवियत, सभा में शामिल हो गये। दिन पर दिन उसकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी, उसका कोष बढ़ने लगा।

बहुत से ग्रामवासी बड़े उत्साह के साथ पाठ्य-मण्डलों में शामिल हो गये। इतना ही नहीं, बहुत से ग्रामवासियों ने और लोगों में साक्षरता का प्रचार किया। उनमें से एक—द्मीत्री प्रोकूदा—ने १०० से अधिक कज्जाकों के नाम दर्ज करवाये। इसके लिए उसे पुरस्कृत किया गया: एक विशेष सभा में उसे एक कमीज और कपड़े का टुकड़ा—जो उन दिनों के लिए बहुमूल्य उपहार थे—इनाम में दिये गये।

सभा की शाखा के कार्य-कलाप का स्वरूप बहुमुखी था और इसमें भाषण तथा नाटक-अभिनय भी शामिल थे। फसल-कटाई की छुट्टियों में, अध्यापक और सभा के सक्रिय सदस्य जनाकीर्ण सड़कों पर, खूब सजी-धजी बैल-गाड़ियों में निकलते और लोगों को सभा के उद्देश्य समझाते और शिक्षा के लिए धन उगाहते। नकदी के अतिरिक्त, गांव के लोग गेहूं, अण्डे, सब्जियां आदि दान में देते। ये सब सामान सहकारी को दे दिया जाता और उनसे प्राप्त होनेवाली नकदी सभा के कोष में चली जाती। पनचक्कियों और मक्खन बनाने के कारखानों के मजदूर सुब्बोत्निक और वोस्क्रेस्निक* संगठित करते और अपनी कमाई सभा को दे देते। आय के अन्य साधनों में लाटरी, नीलाम यहां तक कि आईस-क्रीम की बिक्री भी शामिल थी।

---

*सुब्बोत्निक और वोस्क्रेस्निक शनिवार और इतवार के दिन, राज्य को स्वेच्छा से मुफ्त दिया जानेवाला श्रम।—सं०

वास्यूरिन्स्काया में साक्षरता के संघर्षकारियों के सामने बड़ी गंभीर कठिनाइयां थीं। गांव के गुण्डे और कुलक काम को चौपट करने के लिए हर तरह के उपद्रव मचाते थे। दिन में खेतों में काम करने के बाद जब किसान स्त्रियां साक्षरता कक्षा की ओर, जो दो मील की दूरी पर स्थित थी, या लड़का स्कूल की ओर जा रहे होते तो ये लोग उन्हें पीट देते, उनपर कीच पोत देते, उनकी किताबें और कापियां फाड डालते: "तुम पढ़ना चाहते हो न! लो अब पढ़ो!" कहकर उन्हें धमकाते।

परन्तु उन लोगों को कोई भी ताकत डरा नहीं सकती जिन्होंने समझ लिया हो कि ज्ञान में शक्ति निहित है। अक्तूबर १९२७ तक गांव के कुल १२३० निरक्षर लोगों में से १००० पढ़ना-लिखना सीख चुके थे। सभा की शाखा ने हर मुमकिन तरीके से उन्हें अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रोत्साहित किया। गांव के पुस्तकालय के प्रत्येक चन्देदार से कहा जाता कि जिस किसी पुस्तक को उसने पढ़ा है उसके बारे में अपनी राय लिखे। पुस्तकालय का अध्यक्ष उसे वहीं पर पढ़ता और उसकी ग़लतियां ठीक कर देता था।

उस समय वास्यूरिन्स्काया सरीखे कज्जाक गांव बहुत नहीं थे। परन्तु बहुत से गांवों में ज्ञान की भूख और पढ़ने-लिखने में जनता की मदद करनेवालों का उत्साह उतना ही तीव्र हुआ करता था।

उन वर्षों में, निरक्षरता के उन्मूलन में, विशेषकर देहात में, युवा कम्युनिस्ट लीग ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की। लीग के सदस्य सक्रिय रूप से सभा में काम करते थे। मिसाल के तौर पर, सरातोव गुवर्निया में सभा के आधे से अधिक सदस्य युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य थे और उनकी मदद से, देहातों में एक हज़ार से अधिक साक्षरता पाठ्य-क्रम शीघ्र ही संगठित किये गये थे। युवा पायोनियरों ने भी हाथ बंटाने में अपना अंशदान देने की कोशिश की। बच्चों की दृढ़ता के फलस्वरूप बहुत अच्छे परिणाम प्राप्त हुए। अर्खानगेल्स्क गुवर्निया में एक स्कूल के युवा पायोनियरों ने गांव के सभी निरक्षर परिवारों की सूची तैयार की। प्रत्येक घर के साथ एक युवा पायोनियर लगा

'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा के युवा मित्र मजदूरों की बस्ती में किताबें बांट रहे हैं।

दिया जाता। उसका काम किसानों के लिए चिट्ठियां लिखना, उन्हें अख़बार पढ़कर सुनाना, उन्हें गांव के वाचनालय के काम के बारे में बताना और उन्हें पढ़ना-लिखना सिखाना था।

निरक्षरता उन्मूलन संबन्धी लेनिन आज्ञप्ति की उद्घोषणा के वार्षिकोत्सव से लोगों को निरक्षरता विरोधी आन्दोलन की ओर आकृष्ट करने में बड़ी मदद मिली। पार्टी तथा सोवियत संस्थाओं ने निश्चय किया कि आज्ञप्ति की पांचवीं वर्षगांठ का दिन – २६ दिसम्बर, १९२४ – एक पर्व के रूप में, एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना के रूप में मनाया जाय। जयन्ती की तैयारी में जो आन्दोलन चलाया गया उसमें पिछले काम का पुनर्निरीक्षण करने और विद्या को लोकप्रिय बनाने के लिए सांध्यकालीन

समारोह तथा सभाएं करने का निश्चय किया गया था। सांध्यकाली समारोहों में साक्षरता पाठ्य-क्रमों के स्नातक, अभिनय प्रस्तुत करते औ साहित्यिक प्रचारात्मक गीत गाते थे।

मास्को में, इस अवसर पर एक विराट सभा की गयी जिस सभापति कालिनिन थे। हाल लोगो से खचाखच भरा था। वक्ता ने वडे उत्साह के साथ उस काम का व्योरा दिया जो उन्होंने पूरा किय था तथा उन लोगो के वारे में वताया जिन्होंने पढ़ना-लिखना सीर लिया था।

यह समारोह राष्ट्रव्यापी स्तर पर मनाया गया।

मई १६२५ में ''निरक्षरता मुर्दावाद' सभा द्वारा किये गये काम पर' पार्टी की केन्द्रीय समिति ने एक प्रस्ताव अपनाया। केन्द्रीय समिति ने सुझाव दिया कि सभा को चाहिए कि स्थानीय, विशेपकर देहात की शाखाओ की सरगर्मियो की ओर ज्यादा ध्यान दे, और जनता के साथ अधिक गहरे सम्पर्कों को प्रोत्साहित करे। उसने यह मांग भी की वि पार्टी संगठन, निरक्षरता के विरुद्ध आन्दोलन में सभा को सार्वजनिक पहलकदमी का केन्द्र वनने में मदद दें।

केन्द्रीय समिति के प्रस्ताव में कहा गया था कि सभा के लिए स्कूली साल शुरू होने से पहले पिछले काम के परिणामो पर विचार करने के लिए एक कांग्रेस का आयोजन करना उपयोगी होगा। उसमें यह भी कहा गया था कि सभा को चाहिए कि यथासम्भव, अधिकाधिक संख्या में उन लोगो को आमन्त्रित करे जो देहात में निरक्षरता को खत्म करने का काम कर रहे है। इतना ही नहीं, प्रस्ताव में 'निरक्षरता मुर्दावाद' प्रकाशन गृह को नये स्कूली वर्ष के लिए पर्याप्त संख्या में वर्णमाला की पुस्तकें, वर्णमाला के अक्षर, तथा शिक्षा-रीति सम्वन्धी पुस्तके प्रकाशित करने पर वाध्य किया गया था। यह प्रस्ताव वड़ा महत्त्वपूर्ण था और इससे सभा को अपने काम में वड़ी मदद मिली।

'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा की पहली अखिल रूसी कांग्रेस, जनवरी १६२६ में हुई और इसमें २०० से अधिक प्रतिनिधियों—अध्यापको, मज़दूरो, किसानों तथा इंजीनियरों—ने भाग लिया। कांग्रेस

में सभा की पंक्तियो में होनेवाली वृद्धि की चर्चा की गयी और बल देकर कहा गया कि यह वृद्धि उस जीवन-शक्ति का प्रमाण है जो इस जन सगठन में पायी जाती है। जनवरी १९२४ में जहा इसकी शाखाओ की संख्या २००० और सदस्य-संख्या एक लाख थी, वहा अक्तूबर १९२५ में इसकी शाखाओ की संख्या बढकर २८ हजार और सदस्य-संख्या १६ लाख तक जा पहुंची थी। इसने अपने कोष से ५० लाख वर्णमाला की पुस्तकें भी प्रकाशित की थीं।

कांग्रेस ने सभा के सदस्यों से आग्रह किया कि वे देहात में अपनी सरगर्मियो को और तेज करें और इस बात का ख्याल रखें कि जिन लोगो ने पढ़ना-लिखना सीखा है वे उसे भूल नहीं जायं। निश्चय किया गया कि उन अखबारो और किताबो की सख्या बढायी जाय जो विशेष रूप से अर्धनिरक्षर लोगो के लिए छापी जाती थीं और अधिक संख्या में विश्राम-केन्द्र* तथा वाचनालय खोले जाय। कांग्रेस ने सभा के सभी सदस्यो से निरक्षरता विरोधी आन्दोलन म सक्रिय रूप से शामिल होने का आग्रह किया।

'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा ने अपने काम को केवल बालिगो को पढ़ाने तक ही सीमित नहीं रखा। नया जीवन नयी मांगें पेश कर रहा था और धीरे धीरे सभा अपना कार्य-कलाप उन किशोरो तक भी फैलाने लगी थी जो स्कूल-दाखले की अवस्था पार कर चुके थे। उसकी शाखाएं मजदूरो तथा रविवासरीय विश्वविद्यालयो को तथा व्यावसायिक टेक्निकल स्कूलो की सहायता करती थीं।

सोवियत सत्ता के पहले दिनो से ही शत प्रतिशत साक्षरता के लिए आन्दोलन, स्त्रियो को आर्थिक तथा सरकारी कामो में आकृष्ट करने के

---

* विश्राम-केन्द्र — क्लब जैसी सांस्कृतिक-शैक्षणिक सस्था, जो छोटे कारखानों, मजदूरो के बोर्डिंग-हाउसो तथा रिहायशी मकानो में स्थापित की जाती है और जिसमें पत्र-पत्रिकाएं ऊंचे स्वर में पढ़ी जाती हैं, व्याख्यान दिये जाते हैं, विभिन्न प्रकार की मंडलिया सगठित की जाती हैं आदि, आदि।

आन्दोलन के साथ साथ क़दम-ब-कदम चल रहा था। लेनिन ने एक बार कहा था कि समाजवादी निर्माण को तभी दृढ़ आधार मिल सकता है जब स्त्रियां, सैकड़ो की संख्या में नहीं, बल्कि करोड़ों की संख्या में उसमें भाग लेंगी।

अधिकांश स्थितियों में साक्षरता की ओर स्त्री का पथ कांटों से भरा था: उसे परिवार की देख-भाल करनी होती, पति उसे स्कूल न जाने देता, परिस्थितियां चट्टान बनकर उसका रास्ता रोके रहतीं। उसे काम पर जाना पड़ता, घर का-काम करना पड़ता और साथ में पढ़ना पड़ता। सोवियत सत्ता के पहले सालों में, उन स्त्रियो की स्थिति विशेषरूप से कठिन थी जो कुलको तथा वैयक्तिक व्यापारियों के लिए काम करती थीं। मज़दूर तथा किसान महिलाओ के अखिल संघीय सम्मेलन में लेनिनग्राद प्रदेश की एक प्रतिनिधि ने बताया कि पढ़ाई के लिए किसी खेत-मज़दूरिन अथवा नौकरानी को ला पाना बेहद कठिन है। "काफ़ी संख्या में स्त्रियां पढ़ना चाहती है," उसने कहा, "पर अक्सर उन्हें नौकरी देनेवाले मालिक, कुलक अथवा व्यापारी उनसे कह देते है कि पढ़ना हो तो नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। और जाड़े के दिनो में वे जायं भी तो कहां, जब कि उनके पास रहने के लिए अपना कोई ठौर-ठिकाना नहीं है। इसलिए, वे चाहें या न चाहें, उन्हें पढ़ाई छोड़नी पड़ती है।"

परन्तु ज्ञान और बुद्धि-प्रकाश के लिए अदमनीय इच्छा पायी जाती थी। युवा स्त्रियां तथा वृद्धा स्त्रियां, वे सब स्त्रियां जिन्होंने अपना अधिकांश जीवन जारशाही के अधीन बिताया था, पढ़ने लगीं।

सोवियत वर्णमाला की पुस्तक को पहली बार हाथ में लेने पर स्त्रियों पर कैसा असर हुआ, इसका ब्योरा एक बार म० बुराकोव्स्काया ने दिया जो उन दिनों मज़दूर और किसान स्त्रियों को लिखना-पढ़ना सिखाया करती थी। तब वह युवा कम्युनिस्ट लीग की सदस्या थी और अब पेंशन पाती है। "'हम गुलाम नहीं है,' बड़ी उम्र की, एक घरेलू नौकरानी, चाची पॉलीना ने रुक रुककर ये शब्द पढे; पहले ये शब्द उसकी समझ में नहीं आये। उसने आंखें ऊपर को उठायीं, लगता था

सरातोव में साक्षरता कक्षा (१९२४)।

जैसे वह विचारो में खो गयी है, फिर कुछ कुछ फुसफुसाकर उन शब्दों को दोहराया, और फिर तनकर खडी हो गयी, अपनी खुरदरी उंगली ऊपर को उठायी और बडे आनन्दपूर्वक और विजयोल्लास के साथ बोली: 'हम गुलाम नहीं हैं, देखा!'

"उसके बाद स्थिति बेहतर होने लगी, पढना ज्यादा आसान हो गया। प्रत्येक व्यक्ति चाहता था कि जितनी जल्दी हो सके वह पढने लगे, उन अद्भुत बातो का अर्थ समझने लगे जिनके बारे में पुस्तको में लिखा रहता है।"

साक्षरता ने स्त्रियो को अपनी रचनात्मक क्षमताओ को प्रदर्शित करने, देश के प्रशासन में भाग लेने, पार्टी तथा सरकार की नीति को समझने में मदद दी।

और इस तरह सैकडो की सख्या में स्त्रिया प्रगति करके वर्णमाला की पुस्तक से वालिगो के स्कूल तक, रसोई घर से दफ्तर तक, घरेलू

कामों के छोटे से संकीर्ण संसार से सचेत सामाजिक कार्यशीलता के पथ पर आ गयीं।

उन दिनो साक्षरता के ध्येय को आगे ले जाने में व्लादीमिर वेस्तेरेव, व्लादीमिर मायाकोव्स्की, अलेक्सान्द्र सेराफिमोविच, देम्यान वेद्नी, वलेरी ब्र्यूसोव और अलेक्सान्द्र नेवेरोव जैसे रूसी बुद्धिजीवियो के प्रतिष्ठित प्रतिनिधियो ने बहुत काम किया। मक्सीम गोर्की ने बहुत बड़ा अंशदान दिया। अप्रैल १९२० में, निरक्षरता दूर करने के विषय पर दिये गये अपने एक भाषण में उन्होंने बुद्धिजीवियो से अनुरोध किया कि वे अशिष्टता और अज्ञान का मुकाबला करें।

गोर्की स्कूलों में जाते, निरक्षर लोगों के साथ बातें करते, उनके दिल में पुस्तकों के लिए प्रेम पैदा करते। १९२० में उन्होंने पुस्तिका के रूप में अपना निबन्ध 'मैंने कैसे शिक्षा प्राप्त की' प्रकाशित किया। इस निबन्ध के अन्तिम शब्द थे: "ज्ञान के स्रोत पुस्तक से प्रेम करो, क्योंकि ज्ञान का अर्थ है मुक्ति, केवल ज्ञान ही हमें आध्यात्मिक दृष्टि से बलवान, ईमानदार और समझदार बना सकता है..."

गोर्की की पहलकदमी पर, १९२० की पतझड़ में, 'निरक्षरता मुर्दाबाद' नामक पत्रिका में कुछेक विचित्र लेखको के लेख छपने लगे। गोर्की ने उन स्त्रियो के लेख छापने का सुझाव रखा, जिन्होंने लिखना-पढ़ना सीख लिया था, कि वे बतायें कि जारशाही के दिनों में उन्होंने कैसा कष्टमय जीवन बिताया और सोवियत सत्ता से उन्हें क्या कुछ मिला। ये लेख बहुत ही लोकप्रिय साबित हुए और साक्षरता के ध्येय को आगे ले जाने में बड़े सहायक सिद्ध हुए।

लेखक नेवेरोव ने भी, जिसकी सोवियत शासन के पहले वर्षों में ही मृत्यु हो गयी थी, इस दिशा में बहुत काम किया था। समारा गुबर्निया के एक किसान का बेटा, वह अपनी मेहनत के बल पर गांव के स्कूल का अध्यापक बना और किसानो को शिक्षित करने के ध्येय के लिए अपना तन-मन न्योछावर किया। महान अक्तूबर क्रान्ति के बाद नेवेरोव क्रान्तिकारी देहात और उसके प्रगतिशील लोगो के बारे में लिखने लगा था। उसके छोटे छोटे कहानी-संग्रह साक्षरता पाठ्य-क्रमो के

स्नातको में वहुत ही लोकप्रिय हुए। बर्फ से ढके झोपडो में, धुम्रा छोड़नेवाले लैम्पो की रोशनी में किसान नेवेरोव की कहानिया पढा करते और नये, सोवियत ढग से जीवन विताना सीखते।

प्रसिद्ध रूसी मानसरोग-चिकित्सक तथा स्नायु विशेषज्ञ, वेख़्तेरेव, लगातार पांच साल तक लेनिनग्राद सोवियत के लिए निर्वाचित होते रहे, और इन सभी सालो में उन्होंने सार्वजनिक शिक्षा विभाग में काम किया। लेनिनग्राद प्रदेश के दूरस्थ गावो में रहनेवाले निरक्षर लोगों के भाग्य के प्रति वेख़्तेरेव वहुत ही चिन्ताशील थे। उन्होंने सुझाव रखा कि चलते-फिरते स्कूल संगठित किये जायं, जिनके अध्यापक एक गाव से दूसरे गाव में जाया करें। वेख़्तेरेव स्वयं तो १९२७ में चल बसे, किन्तु जिस 'स्कूल' का वह सुझाव दे गये थे वह जीता रहा और घुमक्कड अध्यापक देहात में विद्या का प्रकाश देहात के लोगो तक पहुंचाते रहे।

साल दर साल निरक्षरता विरोधी आन्दोलन की संभावनाएं और विस्तार वढते गये। १९२५ के अन्त तक वहुत से प्रमुख उद्यम यह घोषणा करने की स्थिति में थे कि उनके सभी मजदूरो ने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर ली है। देहात में भी कुछ सफलता प्राप्त हुई थी। १९२५-२६ में लगभग ३० लाख वालिग सोवियत संघ में साक्षरता पाठ्य-क्रमो में शिक्षा ग्रहण करते थे और इनमें से ९० प्रतिशत देहात में थे। राष्ट्रीय इलाको में निरक्षरता दूर करने की दिशा में पहले कदम उठाये जा चुके थे।

परन्तु उन कठिनाइयों से अव भी दामन नहीं छटा था जो निरक्षरता दूर करने के रास्ते में रुकावट डाले हुए थीं। अक्तूवर क्रान्ति के वाद के पहले दस सालो में साक्षर लोगो की संख्या में औसत वार्षिक वृद्धि २६ प्रतिशत रही। १९२६ की जन-गणना से पता चला कि नौ साल से ऊपर की उम्र के लोगो में से ४८.९ प्रतिशत लोग अभी तक पढना-लिखना नहीं जानते थे।

सोवियतो की ११ वीं कांग्रेस ने तो यह काम अपने सामने रखा था कि अक्तूवर क्रान्ति की दसवीं सालगिरह तक रूसी संघ में से निरक्षरता को नेस्त-नावूद कर दिया जाएगा, फिर किस कारण वह काम पूरा नहीं हो पाया?

क्या इस दिशा में जो कोशिश की गयी वह अधूरी थी? या शायद इस काम को काफी जोश के साथ हाथ में नहीं लिया गया? नहीं। कम्युनिस्टों, युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों तथा प्रगतिशील मज़दूरों, किसानों और बुद्धिजीवियो ने देश को शत प्रतिशत साक्षर बनाने की दिशा में बड़े सचेष्ट और उत्साहपूर्ण ढंग से काम किया था। परन्तु इतने विस्तृत काम के लिए उपलब्ध साधन बिल्कुल काफी नहीं थे। भारी उद्योग तब पनपने ही लगा था। अभी तक नगर इस स्थिति में नहीं थे कि देहात को आवश्यक मदद जुटा सकें। देश में अभी तक काफी तादाद में स्कूल नहीं थे, बच्चो को अनिवार्य माध्यमिक शिक्षा नहीं दी जाती थी और बहुत से बच्चे तो प्राथमिक स्कूलो में भी पढ़ने नहीं जाते थे। इसके परिणामस्वरूप निरक्षर लोगो की संख्या में कमी नहीं हुई। विश्राम-केन्द्रों और वाचनालयों, पुस्तकालयों तथा अन्य सांस्कृतिक और शिक्षा संबन्धी संस्थापनो की संख्या बहुत कम थी। जो लोग पढ़ना-लिखना सीखते भी थे अक्सर उन्हें अपनी जानकारी को मजबूत बनाने का अवसर नहीं मिलता था, और सारा काम नये सिरे से शुरू करना पड़ता था। परन्तु मुख्य कारण यह था कि व्यापक स्तर पर जनता निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में शामिल नहीं हुई थी। यह बाद में, पुनर्निर्माण के काल में, पहली पंचवर्षीय योजनाओ के काल में हुआ जब बड़ी तेजी से देश का रूप बदलने लगा था और पिछडे हुए रूस का स्थान समाजवादी रूस लेने लगा था।

परन्तु सांस्कृतिक क्रान्ति के लक्ष्य की दिशा में पुनर्स्थापना काल में काफ़ी प्रगति हुई थी। उन सालो में बहुत मूल्यवान अनुभव प्राप्त हुआ था और जो पुरुष और स्त्रियां इसके साथ साथ बड़े हुए थे, वे आगे चलकर समाजवादी संस्कृति के लिए लड़नेवाली विराट सेना के अग्रणी बने थे।

लाखों निकल पड़े

> निरक्षरता तथा संस्कृति के अभाव के विरुद्ध किये जानेवाले संघर्ष को श्रमजीवी जनता का ध्येय बनाना चाहिए।
>
> व्ला० इ० लेनिन

संयुक्त मोर्चा

१९२६ तक देश का युद्धपूर्व का औद्योगिक स्तर, समूचे तौर पर, बहाल किया जा चुका था। पुनर्स्थापना काल ख़त्म हुआ और राष्ट्र समाजवादी आधार पर अपनी अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण करने निकल पड़ा। औद्योगीकरण, कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत जनता की सामान्य नीति बना। औद्योगीकरण को ही बड़े पैमाने की समाजवादी खेती-बारी, देहात में सामूहीकरण में संक्रमण के लिए आधार बनना था।

अर्थव्यवस्था में चौतरफा हमले का समाजवादी कार्यक्रम पहली पंचवर्षीय योजना (१९२९-३२) थी जिसने समाजवादी अर्थव्यवस्था की नींव रखने और नगर तथा देहात में पाये जानेवाले पूंजीवादी तत्त्वों को और अधिक उखाड़ने का प्रबन्ध किया था।

समाजवाद के लिए किये जानेवाले युद्ध में दो मोर्चे—औद्योगीकरण तथा सामूहीकरण—सांस्कृतिक क्रान्ति—तीसरे मोर्चे—के साथ घनिष्टता से जुड़े हुए थे।

सभी कोशिशों के बावजूद, १९१७ में साक्षरता के स्तर के नाते सोवियत संघ का स्थान यूरोप में उन्नीसवां था। देहात में विशेषरूप से

निरक्षर लोगों की संख्या बहुत अधिक (५४.८ प्रतिशत) थी। औद्योगीकरण के सालों में किसानों के भारी संख्या में शहरो में चले आने से, शहरों में भी निरक्षर लोगो की संख्या बढ़ गयी थी।

पहली पंचवर्षीय योजना में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू करने, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की सभी शाखाओ के लिए विशेषज्ञ तैयार करने तथा स्कूलो और सांस्कृतिक संस्थाओ की संख्या बढ़ाने की पूर्वकल्पना की गयी थी। इन पांच सालो में साक्षरता पाठ्य-क्रमों द्वारा १ करोड़ ८२ लाख लोगो – जिनमें से १ करोड़ ७० लाख गांवो के लोग थे – स्नातक बनाने की योजना थी।

पार्टी की अपील के जवाब में निरक्षरता विरोधी आन्दोलन को नये उत्साह के साथ फिर से शुरू किया गया। मुख्य काम था अधिकाधिक संख्या में निरक्षर लोगो को पढ़ने पर रजामंद करना, और मुख्य माध्यम था संस्कृति के लिए आन्दोलन। यह लेनिन की शिक्षा पर आधारित था कि प्रत्येक साक्षर व्यक्ति को चाहिए कि "अनेक निरक्षर लोगों को पढ़ाना अपना कर्त्तव्य समझे"।

इस आन्दोलन का विचार, जिसने निरक्षरता को खत्म करने में निर्णायिक भूमिका अदा की, युवा कम्युनिस्ट लीग की ओर से आया। बहुत पहले, अप्रैल १९२० में, रूसी युवा कम्युनिस्ट लीग की तीसरी कांग्रेस में भाषण देते हुए लेनिन ने कहा था: "आप जानते हैं कि जहालत से भरे, निरक्षर रूस को जल्दी से एक साक्षर देश में बदलना संभव नहीं होगा। परन्तु यदि युवा लोग इस काम को हाथ में ले, यदि सभी युवाजन सभी लोगो के हित में काम करने लगें, तो लीग जिसकी सदस्य-संख्या ४ लाख है, वास्तव में युवा कम्युनिस्ट लीग कहलाने की अधिकारी होगी।"

सोवियत नेता के इस आह्वान का युवा कम्युनिस्ट लीग ने बड़े उत्साह से पालन किया और साबित कर दिखाया कि वह निरक्षरता और अशिष्ठता के विरुद्ध निःस्वार्थ और विश्वसनीय संघर्षकारी है।

मई १९२८ में अखिल संघीय लेनिन युवा कम्युनिस्ट लीग की आठवीं कांग्रेस ने संस्कृति के लिए, निरक्षरता के विरुद्ध, पियक्कड़ी तथा

युवा कम्युनिस्ट लीग की तीसरी कांग्रेस के सदस्यों के बीच लेनिन।
चित्रकार. प० बेलोऊसोव

गन्दगी के विरुद्ध आन्दोलन शुरू कर दिया। कांग्रेस के निरक्षरता उन्मूलन संबन्धी प्रस्ताव में निर्धारित किया गया था:

१ अगस्त से १ सितम्बर १६२८ तक निरक्षरता विरोधी आन्दोलन चलाना;

स्थानीय निरक्षरता विरोधी समितियो की सहायतार्थ युवा कम्युनिस्ट लीग के १००० सदस्यो को भरती करना;

युवा कम्युनिस्ट लीग के हर साक्षर सदस्य को एक निरक्षर व्यक्ति को पढ़ाना;

युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यो में से निरक्षरता को दूर करना;

'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा के काम में युवा कम्युनिस्ट लीग के संगठनों द्वारा सर्वोत्कृष्ट अंशदान के लिए एक प्रतियोगिता का प्रवन्ध करना। प्रस्ताव में लीग के प्रत्येक साक्षर सदस्य को एक निरक्षर व्यक्ति को पढ़ाने के लिए उत्तरदायी ठहराया गया था।

इस पहलकदमी का लाखो की संख्या में युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यो ने अनुकरण किया। कांग्रेस द्वारा प्रस्तावित निरक्षरता विरोधी मास ने फैलकर संस्कृति के लिए एक जन आन्दोलन का रूप ले लिया जो कितने ही सालो तक, निरक्षरता के पूर्ण रूप से खत्म हो जाने तक चलता रहा।

निरक्षरता को दूर करना आन्दोलन का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य तो था लेकिन एकमात्र लक्ष्य नहीं था। वालिगो को पढ़ना-लिखना सिखाने के अतिरिक्त, इसमें भाग लेनेवाले व्यक्ति यह भी देखते थे कि सभी वच्चे स्कूल जायं, वे घर में और काम पर सफाई और संस्कृति का प्रचार करते, कृपिकला और टेक्नोलाजी इत्यादि के वारे में लोगो को वताते।

विशेपरूप से प्रकाशित 'सांस्कृतिक आन्दोलन' नाम के अखवार में कवि अलेक्सान्द्र वेज़िमेन्स्की ने लिखा:

"भाइयो, आओ, आलस्य और
पियक्कड़ी के खिलाफ
गन्दगी, जहालत और अशिष्टता
के खिलाफ हथियार उठा लें;

आओ प्रतिज्ञा करें कि अपनी
सारी शक्ति
पुराने, गन्दे-सड़े अतीत को मिटाने में
लगा देंगे।"

युवा कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति ने सिफारिश की कि सदस्यता-कार्ड के साथ एक सर्टिफिकेट जोड़ दिया जाय जिससे यह पता चले कि सदस्य ने एक निरक्षर व्यक्ति को पढ़ना-लिखना सिखाया है। निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में लीग-संगठनों द्वारा दिखाये जानेवाले सर्वोत्कृष्ट नतीजों के लिये विशेष प्रतियोगिताएं सभी इलाकों, प्रदेशों तथा जनतन्त्रों में आयोजित की जातीं।

युवा कम्युनिस्ट लीग के 'निरीक्षक' निरक्षर लोगों के नाम दर्ज करने के लिए घर घर जाते। लीग के सदस्य साक्षरता कक्षाओं के लिए स्थान का प्रबन्ध करते, अक्सर इस काम के लिए अपने कमरे इस्तेमाल करने के लिए दे देते, प्रथम पाठ्यपुस्तकें और कापियां खरीदने के लिए पैसे इकट्ठे, करते, सुब्बोत्निक व्यवस्थित करते, शिशु-गृह खोलते ताकि माताएं बच्चों को वहां छोड़कर कक्षाओं में जा सकें, निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में सहायता करने के लिए जवानों में से स्वयंसेवक भरती करते और स्वयं अन्य लोगों को पढ़ाते।

करने को बहुत काम था। अकेले १९२८ में ही लगभग ६० लाख युवतियां और युवक निरक्षर थे और इनमें लीग के एक लाख सदस्य शामिल थे। स्कूलों का विस्तृत जाल अभी तक सारी जरूरतों को पूरा करने में असमर्थ था।

'अगर तुम लीग के पढ़े-लिखे सदस्य हो तो एक निरक्षर व्यक्ति को खोजकर पढ़ाओ'—यह नारा शीघ्र ही पुराना पड़ गया। युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों ने तीन तीन पांच पांच, यहां तक कि दस दस लोगों को पढ़ाने की मांग की जाती।

ऐसा ही एक युवा अध्यापक वान्या कुद्र्यावत्सेव था—दुबला-पतला, लम्बी लम्बी टांगोंवाला, जो अक्सर खाकी कमीज पहने और उसपर

पेटी बांधे रहता था। दिन के वक़्त वह रन्दा करने का काम करता, शाम को बड़े उत्साह के साथ अपनी उम्र के युवकों और युवतियों को पढ़ना-लिखना सिखाया करता था।

"नौवें पृष्ठ पर किताब खोलो। कवेरिना, तुम पढ़ो," अपने एक छात्र को संबोधन करके वह कहता।

वर्णमाला की पुस्तक की जटिल पंक्तियों पर आंखों की सोलह जोड़ियां केन्द्रित हो जातीं।

तान्या कवेरिना, छोटी सी युवती, धीरे धीरे, झिझक झिझककर पढ़ती :

"हम पूं... जी... के गु... लाम थे..."

दूसरे शब्द पर वह दो बार हकला जाती, और उसका चेहरा झेंप से लाल पड़ जाता।

तीसरी वार, माथे पर से पसीना पोछकर वह बिना रुके सारा वाक्य पढ़ जाती।

"अब तुम आगे पढो, कुज्नेत्सोव।"

उलझे वालों और चौड़ी छाती वाला एक युवा मजदूर गहरी सांस लेता और गाती हुई सी आवाज़ में पढ़ता :

"ले... निन हमारे ने... ता है। फै... क्टरि यां हमारी स... म्प... त्ति है।"

प्रत्येक वाक्य के बाद कुद्र्याशोव सरल भाषा में उन शब्दों की व्याख्या करता जो उसके छात्रों ने पढ़े थे।

"फैक्टरियां एकदम ही हमारी सम्पत्ति नहीं बन गयीं," वह कहता। "आप में से बड़ी उम्र के छात्र युवा छात्रों को बताइये कि उन्होंने सोवियत सत्ता के लिए कैसे मोर्चा लिया था। कुज्नेत्सोव और कवेरिना बहुत छोटे हैं, इन्होंने ज़ारशाही पुलिसमैनों को केवल तसवीरों में देखा है। उन्हें पता लगना चाहिए और याद रखना चाहिए कि उनसे पहली पीढ़ी के लोगों ने फैक्टरियों को हम सब की मिल्कियत बनाने के लिए किस प्रकार लड़ाई लड़ी थी..."

और इस तरह देश भर में कुद्र्याशोव जैसे सैकड़ों युवा कम्युनिस्ट

लीग के सक्रिय सदस्यो ने लोगो को पढ़ना-लिखना सिखाया। वह सच्चे अर्थों में संस्कृति और साक्षरता के लिए की गयी मुहिम थी; अकारण ही इसमें भाग लेनेवालो को संस्कृति-सेना के सैनिक का नाम नहीं दिया गया था। कुछेक पदाधिकारियों की रूढिवादिता, सन्देहवाद, नौकरशाही और उदासीनता पर काबू पाते हुए युवा कम्युनिस्ट लीग ने दृढता के साथ संस्कृति और साक्षरता के लिए संघर्ष किया।

पार्टी के पथ-प्रदर्शन में, नगर और ग्राम सोवियतो, ट्रेड-यूनियनों, 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा, शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत, सहकारों तथा विभिन्न सार्वजनिक संगठनो ने मिलकर निरक्षरता को दूर करने और संस्कृति को प्रोत्साहित करने का काम किया।

निरक्षरता के विरुद्ध चौतरफा आन्दोलन सब से पहले निचले वोल्गा इलाके के प्रशासन-केन्द्र, सरातोव तथा मास्को के वाउमन हल्के ने शुरू किया।

१९२६ की राष्ट्रव्यापी जन-गणना से पता चला कि सरातोव की आबादी में, सोलह से पचास साल की उम्र तक के लोगों में से ८६.६ प्रतिशत लोग पढ़-लिख सकते थे। निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के पहले साल (१९२८) के शुरू में ली गयी जन-गणना से पता चला कि पिछले दो सालो में साक्षर लोगो की प्रतिशतता में न के बराबर वृद्धि हुई थी – ०.२ प्रतिशत से भी कम। १९२९ में, अर्थात् आन्दोलन शुरू करने के एक साल बाद, प्रतिशतता बढकर ९०.३ तक जा पहुंची थी और १९३१ में सरातोव सोवियत संघ में पहला नगर था जहां पूर्ण साक्षरता पायी जाती थी। बर्लिन और प्राग के बाद संसार भर में वह ऐसा तीसरा नगर था। जिस रफ़्तार से यह स्थिति प्राप्त की गयी थी उसकी मिसाल कहीं नहीं मिलती।

सरातोववासियों ने यह सफलता कैसे प्राप्त की? एक सुव्यवस्थित पद्धति को परिष्कृत करके, एक सुसम्बद्ध केन्द्रीकृत संगठन – विशेष निरक्षरता विरोधी समितियो, प्रादेशिक से लेकर नीचे निवासीय (अर्थात् फ़्लैटोंवाले बड़े बड़े घरो में काम करनेवाली समितियो) का संगठन खड़ा करने के द्वारा। इससे पहले, अन्य स्थानों की तरह, सरातोव में

निरक्षरता विरोधी आन्दोलन केन्द्रीकृत नहीं था: सार्वजनिक शिक्षा संस्थाएं, 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा, ट्रेड-यूनियनें और सहकार सभी निरक्षरता का मुकाबला अलग अलग तौर पर करती थीं। एकसूत्रता के इस अभाव से ध्येय को नुकसान पहुंचता था। अब पार्टी, सोवियत और सार्वजनिक संगठन तथा संस्थाएं समन्वित रूप से काम करती थीं। नगर को विभागों में बांट लिया गया, प्रत्येक विभाग की बागडोर एक संगठनकर्ता के हाथ में दे दी गयी जिसकी सहायतार्थ एक परामर्शदाता, एक शिक्षा रीति-विशेषज्ञ तथा स्वेच्छा से काम करनेवाले अध्यापकों का एक दल होता। आन्दोलन के प्रवर्त्तक पुस्तकालयों, क्लबों और थियेटरों को भी काम सौंपते।

सरातोव में सब से पहले निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के संगठनों ने अपना कार्य नगर और नगर के इर्द-गिर्द १० किलोमीटर दूर तक के घेरे तक सीमित रखा और निरक्षरता संघर्षकारियों की सेना खड़ी करने में जुट गये। पहले अनुमानों से पता चला कि ५०० संगठनकर्ताओं और २५० शिक्षा रीति-विशेषज्ञों के अतिरिक्त कम से कम ३००० स्वेच्छा से काम करनेवाले अध्यापकों की जरूरत होगी। इस बात की भी जरूरत थी कि लगभग ३००० क्लासरूमों की खोज की जाय और स्कूल की सामग्री सुनिश्चित रूप से बराबर जुटाने का प्रबन्ध किया जाय। सन्देहवादियों का कहना था कि इस समस्या को हल नहीं किया जा सकता।

इसके बाद एक स्पष्टीकरण आन्दोलन शुरू किया गया। अखबारों और रेडियो द्वारा तथा बैठकों और सभाओं में जनता का ध्यान बराबर निरक्षरता विरोधी आन्दोलन की जरूरतों की ओर आकर्षित किया जाता (इस काम के लिए 'आगे बढ़ो' नाम का खास अखबार प्रकाशित किया जाता था)। प्रत्येक संगठन कर्तव्यबद्ध था कि निरक्षरता दूर करने के काम में सहायता करे। प्रत्येक कारखाना और फ़ैक्टरी, प्रत्येक घर ने यह देखने का बीड़ा उठा रखा था कि कहीं एक भी व्यक्ति ऐसा न रह जाय जो पढ़ना-लिखना न जानता हो, एक भी व्यक्ति ऐसा न रह जाय जिसने स्कूल में अपना नाम दर्ज न करवाया हो।

निरक्षरता उन्मूलन ग्रान्दोलन में सफलता प्राप्त करने पर सरातोव को लाल झण्डे से पुरस्कृत किया गया (१९३१)।

इलाके की पार्टी समिति ने सभी उच्च शिक्षा संस्थानो टेकनिकल स्कूलों ग्रौर माध्यमिक स्कूल की उच्च कक्षाग्रो को वाध्य किया कि वे योजना को ग्रमली जामा पहनाने में सक्रिय रुप से भाग लें। संस्कृति-सेना की पंक्तियां वुद्धिजीवियो ग्रौर मजदूरो से भर गयीं, इनमें पार्टी सदस्य भी थे ग्रौर वे लोग भी जो पार्टी सदस्य नहीं थे। १९३०-३१ के स्कूली वर्ष में उनकी संख्या ४७०५ पुरुषो ग्रौर स्त्रियो तक जा पहुंची थी।

साक्षरता कक्षाएं न केवल वच्चो के स्कूलो में, वल्कि पार्टी ग्रौर युवा कम्युनिस्ट लीग के दफ्तरो, ट्रेड-यूनियनो के दफ्तरो, विश्राम-केन्द्रो, यहां तक कि लोगो के निजी फ्लैटो में भी लगती थीं, जिन्हे निवासी स्वेच्छा से ग्रान्दोलन के लिए खोल देते थे। युवा पायोनियर मेज ग्रौर कुर्सियां मांग लाते, कक्षाग्रो के वाद उन्हें उनके मालिको के पास लौटा ग्राते ग्रौर कमरो को साफ कर देते।

निरक्षर लोगों को पढ़ाने की दिशा में सरातोव के निवासियों ने कोई कोशिश उठा नहीं रखी। उन्होंने ऐसी कामगार-स्त्रियो के लिए जो अपने बच्चों को किसी के पास छोड़ नहीं सकती थीं, खास शिशु-गृहो और किन्डरगार्टनो की व्यवस्था की। वे पढ़नेवालों के लिए व्याख्यानों तथा पढ़ने के लिए साहित्यिक बैठकों का आयोजन करते, चलते-फिरते पुस्तकालय संगठित करते, चिकित्सा संबन्धी तथा क़ानूनी मश्विरो की व्यवस्था करते, शहर की बाहरी सीमाओं पर आरामदेह चायपान गृह खोलते, और निरक्षर लोगो के बीच शौकिया नाटकों इत्यादि को प्रोत्साहित करते। सोमवार के दिन नगर का थियेटर अपनी नाटक-सूची में से सब से अच्छा नाटक साक्षरता पाठ्य-क्रमों के विद्यार्थियो को मुफ्त दिखाता। इतवार की सुबह और सोमवार की शाम को उन्हें सिनेमा घरों में भी फिल्में मुफ्त दिखायी जातीं।

निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में विस्तृत स्तर पर जनता के भाग लेने के कारण वित्तीय कठिनाइयों पर पार पाना भी तुलनात्मक दृष्टि से आसान हो गया। मिसाल के तौर पर १६२६ में, जहां नगर सोवियत ने अपने बजट में से १६ हजार रूबल साक्षरता आन्दोलन की मद में निर्धारित किये, वहां १ लाख ८० हज़ार रूबल की रक़म दान से प्राप्त हुई।

जनता की पहलकदमी ने धन की कमी को पूरा कर दिया। अक्सर सड़कों पर एक आदमी हाथ में एक प्लेट और वर्णमाला की पुस्तकों का पुलिन्दा उठाये नज़र आता था, और उसके पीछे पीछे निरक्षरता विरोधी समिति का एक प्रतिनिधि हुआ करता। अगला आदमी राहजाते लोगों को आन्दोलन की सहायतार्थ वर्णमाला की पुस्तक खरीदने का अनुरोध करता और पिछला उसी पुस्तक को साक्षरता पाठ्य-क्रमों और स्कूलो को दान कर देने का अनुरोध करता। फ़ैक्टरियों और दफ़्तरों के कामगार सुब्बोत्निकों की व्यवस्था करते और उनमें से प्राप्त होनेवाला धन आन्दोलन के फ़ंड में डाल दिया जाता। युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य नाटकों आदि का प्रदर्शन करते और उनसे प्राप्त होनेवाला धन निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के फ़ंड में दे देते।

साक्षरता ग्रान्दोलन की बागडोर नगर के पार्टी संगठन के हाथ में थी। इलाका तथा नगर पार्टी समितियों ने तीन तीन ग्रादमियो की राजनीतिक कमीशनें संगठित कीं ग्रौर उन्हें ग्रान्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए पार्टी सदस्यो को भरती करने तथा उनके काम में उनका पथ-प्रदर्शन करने का कार्य-भार सौंपा। निरक्षरता विरोधी कमीशनें तथा ग्रन्य संगठन ग्रान्दोलन की प्रगति के बारे में पार्टी समितियो को तथा पार्टी की शाखा-सभाग्रो को रिपोर्ट देते। प्रत्येक कम्युनिस्ट को निरक्षरता विरोधी ग्रान्दोलन सम्बन्धी कोई निश्चित काम दिया जाता ग्रौर उस काम को पूरा करना उसका महत्त्वपूर्ण पार्टी कर्त्तव्य होता। इस दिशा में पहलकदमी का श्रेय सरातोव के लेनिन कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय को था। उसके पार्टी संगठन के सभी सदस्य निरक्षरता विरोधी सग्राम में शामिल हो गये।

जिस समय सरातोव साक्षरता के लिए संघर्ष कर रहा था, उसी समय मास्को के बाउमन हल्के ने भी निरक्षरता के विरुद्ध जबर्दस्त मुहिम चलायी। ग्रौर सरातोव ही की तरह उसने भी स्वयसेवको को भरती करने की रीति ग्रपनायी। हर रोज सैकड़ो की संख्या में ग्रान्दोलन की सहायता के लिए लोग ग्रपने नाम लिखवाते।

...युवा कम्युनिस्ट लीग की हल्का समिति के दोनों कमरे, जहां ग्रान्दोलन का सदरमुकाम था, सारा वक्त लोगों से खचाखच भरे रहते। वे एक एक करके या दलों के रूप में रिपोर्ट देने के लिए ग्राने ग्रौर बताते कि उन्होंने कितना काम किया है ग्रौर नये काम की मांग करते। ग्रौर ग्रपनी ग्रपनी बारी के इन्तजार में एक दूसरे ने ग्रपने ग्रपने ग्रनुभवो का ग्रादान-प्रदान करते।

"ग्राप को मालूम है, मैंने पांच कक्षाग्रों के लिए जगह का इन्तजाम कर लिया है," एक युवक कहता। "मेरे पास केवल ६५ विद्यार्थी हैं, बस, ग्रब सब से बड़ी समस्या तो हल हो गयी है..."

"यह तुम्हारा ख्याल है," जवाब में उसका दोस्त कहता। "मेरी सुनो। एक मजदूर को इस बात पर राजी करने के लिए कि वह ग्रपनी पत्नी को पढ़ने के लिए भेजे, मुझे दो घण्टे तक उनके साथ माथा-पच्ची

करनी पड़ी। 'मैं खुद पढ़ने के लिए तैयार हूं' वह कहता, 'मगर अगर बीवी भी स्कूल जाने लगेगी तो खाना कौन बनायेगा?' बड़ी मुश्किल से मैं उसे मना पाया।"

आन्दोलन के मुख्य आधार कम्युनिस्ट तथा युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य थे। बाउमन हल्का पार्टी तथा युवा कम्युनिस्ट लीग संगठनो ने अपने संगठको में से २०० सर्वोत्तम संगठक इस काम के लिए नियुक्त किये तथा रूसी जनतन्त्र के शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत की ट्रेड-यूनियन समिति ने ६० शिक्षा रीति-विशेषज्ञ देकर मदद की।

हल्के को २२० भागो में बांट दिया गया और प्रत्येक भाग में अनुभवी संगठक नियुक्त कर दिये गये। आन्दोलन के सदरमुकाम को ८९५ निरक्षरता-संघर्षकारियो की सेवाएं उपलब्ध थीं और इन्हें नवस्थापित स्कूलो में भेजा गया।

लोगो की सहायता से उसने ६७ किंडरगार्टनो, २७ खेल के मैदानो, और स्कूलो की इमारतो में ७२ सांध्यकालीन शिशु-गृहो को संगठित किया और किताबें और खिलौने इकट्ठे किये। अध्यापक, युवा पायोनियर और अध्यापन-स्कूलो के विद्यार्थी बच्चो की देख-भाल करने में हाथ बंटाते ताकि उनकी माताएं निश्चिन्त होकर स्कूलो में जा सके।

बाउमन हल्का की संस्कृति-सेना का काम आसान नहीं था। बेशक, निरक्षर लोगो में से अधिकाश बड़ी उत्सुकता से स्कूलो में जाते थे, फिर भी कुछ लोग ऐसे थे जो खुल्लमखुल्ला इस सारे विचार का ही विरोध करते थे। सीरोम्यात्निकी में, जहां ठेला चलानेवाले रहा करते थे जब युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्य निरक्षरो के नाम दर्ज करने आये तो उनपर उबलता पानी डाला गया। ब्लागूशा में लोगो ने उनपर कुत्ते छोड़ दिये। बहुत से आदमी अपनी पत्नियो को पढ़ने की इजाज़त नहीं देते थे।

"मैं तुम्हें अपनी बीवी को बिगाड़ने नहीं दूंगा!" एक आदमी चिल्लाकर कहता। "उसने लिखना-पढ़ना सीख लिया तो वे मेरा कहा नहीं मानेगी!"

युवा सांस्कृतिक कर्मचारियो को घरो के अन्दर नहीं घुसने दिया

जाता था, उन्हे अक्सर गालियां सुननी पड़तीं। पर इससे वे पस्त-हिम्मत नहीं हुए। धीरे धीरे, कठिनाइयो पर पार पाते हुए, और एक एक विभाग के लिए संघर्ष करते हुए, वे कामयाबी से अपने लक्ष्य की ओर बढते गये।

१६२८-२६ के स्कूली साल में उन्होने बाउमन हल्के के १८,००० लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाया, और यह एक साल पहले की सख्या से ३६ गुना था।

१ मई, १६३० से कुछ पहले निम्न बोल्गा प्रदेश के निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के सदरमुकाम ने मास्को-यात्रा का आयोजन किया। साक्षरता स्कूलो के ६०० से अधिक छात्र तथा अध्यापक—मजदूर मर्द और औरते और सामूहिक किसान—मई-दिवस समारोह में भाग लेने और अपने मास्को सहकर्मियो के साथ अपने अनुभवो का आदान-प्रदान करने के लिए राजधानी में पहुचे। अधिकांश यात्री पहली बार मास्को आये थे और बहुत से यात्रियों ने तो पहली बार रेलगाड़ी का सफर किया था।

२८ अप्रैल को, मास्को के सरातोव रेलवे स्टेशन पर बाउमन हल्के के सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं के प्रतिनिधि-मण्डल ने उनका स्वागत किया। ३० अप्रैल को श्रम-प्रासाद में बाउमन-सरातोव जुटाव के सामने क्रूप्स्काया ने भाषण दिया। मेहमानों का स्वागत करते हुए उन्होंने कहा, "सरातोव वालो को निरक्षरता विरोधी आन्दोलन को संगठित करने में सब से अधिक कामयाबी हुई है। सांस्कृतिक आन्दोलन में सरातोव और बाउमन हल्के के निवासी नये नये पथ प्रशस्त कर रहे हैं।"

उनके बाद रूसी जनतन्त्र के शिक्षा सम्बंधी जन कमिसार ने भाषण दिया। "बाउमन और सरातोव निवासियो का यह जुटाव महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह उन दो हरावल-दस्तो का जुटाव है जिन्होंने एक शानदार मिसाल पेश की है कि सांस्कृतिक क्रांति को किस भांति संगठित करना चाहिए .."

यात्रियो ने मई-दिवस के जुलूस में भाग लिया, मास्को की सड़को और लाल चौक पर उन्होंने अलग टुकडी के रूप में मार्च किया। उन्होंने

राजधानी की फैक्टरियो तथा कारखानों, संग्रहालयों तथा थियेटरो का भी दौरा किया।

सरातोव और मास्को के वाउमन हल्के के काम का विस्तार आश्चर्यजनक था। इससे पहले पढ़ना-लिखना सीखनेवालो की संख्या कभी भी २०० से अधिक न हुई थी। और अब लाखो की संख्या में लोग पढ़-लिख रहे थे।

निरक्षरता दूर करने का जो ढंग सरातोव ने अपनाया था, उसका कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने समर्थन किया। और युवा कम्युनिस्ट लीग और उसके अखवार 'कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा' ने सरातोव और वाउमन हल्के के लीग सदस्यों की पहलकदमी का स्वागत करते हुए उनके नाम एक विशेष सन्देश प्रकाशित किया। सरातोव और मास्को के वाउमन हल्के में विस्तृत स्तर पर होनेवाला निरक्षरता विरोधी आन्दोलन सारे राष्ट्र की चर्चा का विषय वन गया। सभी प्रदेशों और जनतन्त्रों में उनकी कामयावियों और अनुभव के प्रति लोगो में दिलचस्पी पैदा होने लगी।

१७ मई, १९२९ को पार्टी की केन्द्रीय समिति ने 'निरक्षरता दूर करने के काम के वारे में' एक निश्चय अपनाया। इस वात की जरूरत है, उसमें कहा गया कि "प्राप्त अनुभव के संचित परिणामो के आधार पर काम की सारी प्रणाली में आमूल संशोधन किया जाय, और निरक्षरता दूर करने के काम को एक ही योजना के आधार पर तथा निरक्षरता दूर करने के काम में लगी हुई सभी संस्थाओं को उपलब्ध, जनता की पहलकदमी के सभी प्रयासो तथा साधनों के केन्द्रीकरण के आधार पर, क्रमवद्ध तरीके से संगठित किया जाय"।

केन्द्रीय समिति ने देहात के लोगों, स्त्रियों, पूर्वी जनतन्त्रो तथा प्रदेशों और अल्पसंख्यक जन-जातियों के वीच किये गये काम की ओर विशेष ध्यान दिया। केन्द्रीय समिति के निश्चय में काम के नये तरीको का विस्तृत स्तर पर प्रयोग करने की सिफ़ारिश की गयी थी: नगर तथा ग्राम सोवियतों में साक्षरता प्रोत्साहन दल संगठित करना, स्कूलों द्वारा किये जानेवाले काम की सार्वजनिक जांच, निरक्षर लोगों के सम्मेलनों का आयोजन, साक्षर लोगो द्वारा निरक्षर लोगों की सरपरस्ती,

विभिन्न प्रकार का राजनीतिक शिक्षा संबन्धी काम। केन्द्रीय समिति ने इस बात की जरूरत पर भी बल दिया था कि शिक्षा के विभिन्न रूपो, कार्यक्रमो, स्कूल-सामग्री तथा शिक्षा रीति को निरक्षर लोगों के काम और रहन-सहन की स्थितियो के अनुसार ढालने की ओर और अधिक ध्यान दिया जाय।

केन्द्रीय समिति ने पार्टी, सरकार, और ट्रेड-यूनियन संगठनो तथा 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा से आग्रह किया कि वे सब से पहले शहरों में औद्योगिक मजदूरो, देहात में खेत मजदूरो, मौसमी मजदूरो, ग़रीब किसानो, सामूहिक किसानों तथा राजकीय फार्मों के मजदूरो को पढना-लिखना सिखाएं और इस तरह निरक्षरता के विरुद्ध आन्दोलन को दृढ़ता से आगे बढ़ाएं।

राजकीय प्रकाशन गृह को हिदायत की गयी कि ज्यादा सस्ती वर्णमाला की पुस्तको, पाठ्यपुस्तको, गल्प-साहित्य तथा सामाजिक और राजनीतिक साहित्य को पर्याप्त मात्रा में जुटाना सुनिश्चित करे।

निरक्षरता और अर्धनिरक्षरता के विरुद्ध आन्दोलन के लिए ट्रेड-यूनियनो तथा सहकारों के कोश में से किये जानेवाले खर्च की मद में काफी वृद्धि की गयी।

संचित अनुभव के आधार पर निरक्षरता को दूर करने के काम को जोरदार तरीके से जारी रखने के लिए पार्टी का निश्चय एक कार्यक्रम की रूपरेखा बन गया था। इससे पार्टी, सरकार और सार्वजनिक सगठनो को देश के मेहनतकशों की १०० प्रतिशत साक्षरता के लिए सघर्ष में अपने प्रयासों को एकबद्ध करने, इस संघर्ष को राष्ट्रव्यापी आन्दोलन में बदलने तथा निरक्षरता को दूर करने के कार्यक्रम को जल्दी से जल्दी अमली जामा पहनाने में मदद मिलती थी।

सोवियतों की चौदहवीं अखिल रूसी कांग्रेस ने, सांस्कृतिक निर्माण के चालू कामों के संबन्ध में दी जानेवाली रिपोर्ट पर अपने १८ मई, १९२९ के प्रस्ताव में, स्थानीय सोवियतो को आग्रह किया कि वे बालिगो में निरक्षरता उन्मूलन संबन्धी पंचवर्षीय योजना की पूर्ति का कड़ाई से नियन्त्रण करें।

जून १६२६ में निरक्षरता उन्मूलन संवन्धी चौथी अखिल रूसी कांग्रेस तथा 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा की केन्द्रीय परिषद् की विस्तृत, पूर्ण वैठक संयुक्त रूप से की गयी। सांस्कृतिक आन्दोलन के हरावल दस्ते के लिए इस तरह के प्रतिनिधि सम्मेलन में मिल वैठने का यह पहला अवसर था। कांग्रेस ने निरक्षरता उन्मूलन के लिए समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा आन्दोलन शुरू करने का निश्चय किया और निरक्षरता उन्मूलन संवन्धी चौथी अखिल उक्रइनी कांग्रेस के सामने प्रस्ताव रखा कि दोनों मिलकर रूसी जनतन्त्र और उक्रइन के वीच प्रतियोगिता का प्रतिपादन करें।

६ जुलाई १६२६ को, युवा कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति ने 'निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों की भूमिका के संवन्ध में' एक प्रस्ताव अपनाया जिसके अनुसार प्रत्येक सदस्य को आन्दोलन में भाग लेने पर वाध्य किया गया।

इस तरह साल दर साल साक्षरता के लिए आन्दोलन तेज़ होता गया और उसमें सार्वजनिक संगठनो की नेतृत्वकारी भूमिका उत्तरोत्तर वढ़ती गयी। उन दिनों सरकार या सार्वजनिक संगठनों का एक भी ऐसा सम्मेलन या कांग्रेस नहीं हुई होगी जिसमें निरक्षरता उन्मूलन की प्रगति पर रिपोर्ट पेश न की गयी हो। हर जगह विशिष्ट स्थानीय समितियां खड़ी की गयीं जिनका काम निरक्षरता और अर्धनिरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष में सभी प्रयासो को एकवद्ध करना तथा साधनों को केन्द्रित करना था। कुछेक प्रदेशों और इलाकों में वे सार्वजनिक शिक्षा विभागो के अधीन काम करती थीं, अन्य स्थानों पर सोवियतों की कार्यकारिणी समितियो के अधीन अथवा पार्टी समितियों के अधीन। स्वभावतः, इस तरह, सांस्कृतिक आन्दोलन, संगठन की दृष्टि से वहुरंगा और पंचमेली हो जाता था। 'निरक्षरता और अर्धनिरक्षरता को दूर करने के लिए विशिष्ट स्थानीय कमीशनों की स्थापना के संवंध में' २६ जनवरी १६३० को एक आज्ञप्ति जारी की गयी। उसमें अखिल संघीय केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति तथा रूसी जनतन्त्र की जन कमिसार परिषद् ने करार दिया कि इस प्रकार के कमीशन सभी प्रादेशिक, इलाकाई, क्षेत्रीय, हल्का कार्यकारिणी समितियो तथा नगर और ग्राम सोवियतों के अधीन स्थापित किये जायं

ग्रौर उनमें पार्टी, सरकार तथा सार्वजनिक संगठनों के प्रतिनिधि शामिल किये जायें। अब ये कमीशन, एक ही योजना के आधार पर निरक्षरता को दूर करने के काम को जारी रखने लगे।

निरक्षरता विरोधी ग्रान्दोलन को ग्रागे बढ़ाने की दृष्टि से सोलहवीं पार्टी कांग्रेस (जून-जुलाई १९३०) का प्रस्ताव ग्रत्यधिक महत्त्वपूर्ण था। यह कांग्रेस, समूचे मोर्चे पर, ग्रर्थव्यवस्था ग्रौर संस्कृति के सभी क्षेत्रो में समाजवाद के पूरे पैमाने पर किये जानेवाले हमले की कांग्रेस थी। यह देखते हुए कि सांस्कृतिक क्रान्ति में कुछेक कामयाबियां मिली हैं, कांग्रेस ने ग्राग्रह किया कि सांस्कृतिक निर्माण के काम को ग्रौर तेजी से ग्रागे बढाया जाय ग्रौर एक निश्चय ग्रपनाया जिसमें इस बात पर बल दिया गया था कि "सार्वत्रिक ग्रौर ग्रनिवार्य प्रारम्भिक शिक्षा की स्थापना ग्रौर निरक्षरता के उन्मूलन को निकट भविष्य में पार्टी का सैनिक कार्य-भार करार दिया जाय"।

सितम्बर, १९३० में, निरक्षरता उन्मूलन संबन्धी पाचवा ग्रखिल रूसी सम्मेलन मास्को में हुग्रा। इस सम्मेलन में साक्षरता पक्षाग्रो के छात्रो के लिए राजनीतिक शिक्षा के सवाल पर ग्रौर काम को ग्रौर ज्यादा तेज रफतार से करने के साधनो पर विचार किया गया। सम्मेलन ने निश्चय किया कि ग्रखिल रूसी निरक्षरता उन्मूलन ग्रसाधारण समिति के स्थान पर शिक्षा सम्बन्धी जन कमिस्सारियत की ग्रखिल रूसी निरक्षरता उन्मूलन सदरमुकाम नामक एक नयी संस्था स्थापित की जाय। साथ ही उसने साक्षरता ग्रान्दोलन में भाग लेनेवाले सगठनो के बीच सामान्य समझौते पर भी ग्रपनी स्वीकृति दी। यह बडा महत्त्वपूर्ण समझौता था क्योंकि इसमें सांस्कृतिक ग्रान्दोलन में भाग लेनेवाले सभी संगठनों के लिए काम की एक ही योजना की व्यवस्था की गयी थी।

जनता के बीच रोजाना प्रचार के बिना निरक्षरता विरोधी ग्रान्दोलन की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। हर जगह निरक्षर लोगो के बीच व्याख्यात्मक काम किया जाता: फैक्टरियों ग्रौर मिलों में, सार्वजनिक बाग़ो ग्रौर पार्कों में, थियेटरो, सिनेमाग्रो ग्रौर क्लबों में। इस काम के लिए हर प्रकार के साधनो का प्रयोग किया जाता: ग्रखबार

ग्रौर रेडियो, व्याख्यान ग्रौर संवाद, व्यक्तिगत भाषण तथा सभाएं, खेल-कूद के पेरेड ग्रौर जुलूस, प्रदर्शन-पट्ट ग्रौर इश्तहार। इनके ग्रतिरिक्त 'साक्षरता के लिए' पार्टियां ग्रायोजित की जाती थीं।

इस व्याख्यात्मक प्रचार ग्रान्दोलन में साक्षरता तथा शिक्षा दिवस प्रमुख भूमिका ग्रदा करते थे। उस दिन सड़कों पर जुलूस ग्रौर झांकियां निकाली जातीं। उनका नारा था: 'प्रत्येक निरक्षर ग्रथवा ग्रर्धनिरक्षर व्यक्ति को स्कूल जाना चाहिए'। कार्यक्रम के ग्रन्य पहलू थे: बड़ी बड़ी सभाग्रो का ग्रायोजन, सिनेमा, खेल-कूद प्रतियोगिताएं, शौकिया नाटक-ग्रभिनय, कठपुतलियों के तथा चलते-फिरते रंगारंग के तमाशे इत्यादि। इनके ग्रतिरिक्त ब्राडकास्ट करनेवाली खास गाड़ियां, ट्रामें तथा ग्रन्य गाड़ियां हुग्रा करती थीं जिनमें दल साक्षरता का प्रचार करते थे।

ग्रौर हर जगह ऐसे नारोंवाले प्रदर्शन-पट्ट ग्रौर इश्तहार पढ़ने को मिलते:

'निरक्षरता को दूर करना सभी मेहनतकश लोगों का मुख्य कर्त्तव्य है।'

'निरक्षरता ग्रौर ग्रर्धनिरक्षरता को जड़ से दूर करने का मतलब है तेज़ रफ़्तार से ग्रौद्योगीकरण ग्रौर खेतीबारी के सामूहीकरण को संभव बनाना।'

'ट्रेक्टर ग्रौर वर्णमाला की पुस्तक देहात में सामूहीकरण का पथ प्रशस्त करते है।'

कवियो ने नारों को पद्यबद्ध किया:

'जहालत मुर्दाबाद!
पढ़ना-लिखना सीखो
ग्रन्धकार का नाश,
प्रकाश ग्रमर रहे!'

'यदि तुम सचमुच ग्राज़ाद होना चाहते हो,
तो निरक्षरता की जंजीरें तोड़ डालो!'

अखबारो की सक्रिय सहायता के बिना निरक्षरता दूर करने के वृहत् काम को पूरा करना असंभव होता। बहुत से अखबारो और पत्रिकाओ में, बाकायदा तौर पर, सांस्कृतिक आन्दोलन के बारे में गंभीर तथा व्यंगात्मक लेख, गीत और कार्टून इत्यादि छपते थे। ऐसी पत्रिकाएं तथा अखबार भी थे जो पूर्णतया निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के काम में लगे थे। निरक्षरता उन्मूलन के विशेष कमीशन – उन्हें सास्कृतिक आन्दोलन सदरमुकाम के नाम से पुकारा जाता था – बुलेटिन और एक दिन के अखबार जारी करते थे। फैक्टरी-अखबारो तथा वर्कशापो के दीवार-अखबारो में साक्षरता आन्दोलन का बहुत प्रचार किया जाता। उन सभी में 'साक्षर फ़ैक्टरी के लिए मोर्चा' अथवा इसी आशय के किसी नाम से अलग स्तम्भ रहते।

युवा पायोनियर संगठन, जिसके १६२६ में लगभग २० लाख सदस्य थे, सांस्कृतिक आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग ले रहा था। युवा पायोनियर निरक्षर और अर्धनिरक्षर लोगो के नाम दर्ज करते, उनसे स्कूल जाने का आग्रह करते, न पढ़नेवाले कामगारो के नामो की फेहरिस्तें वर्कशापों में या इश्तहारो के रूप में खरादो पर लटका देते थे, लोगों से अनुरोध करते कि वे पढ़ना नहीं छोड़ें। अक्सर, कन्धो पर से झोले लटकाये, युवा पायोनियर और स्कूलो के बच्चे, गांव गाव जाते और निरक्षर लोगों के नाम दर्ज करते या उन्हें पढना-लिखना सिखाते। अपने ही माता-पिता, भाइयो और बहिनो को स्कूल जाने का आग्रह करने में वे विशेष रूप से हठी साबित होते, और अक्सर उन्हें खुद पढाते थे। ये युवा लोग उन लोगों के पास जाते जिन्होंने पढ़ना सीख लिया होता, और उनसे पुस्तकालय से पुस्तके लेकर पढने, पुस्तकालयो के चन्देदार बनने और क्लबो में शामिल होने का आग्रह करते, और सार्वजनिक पाठ आयोजित करते और इस तरह भी आन्दोलन को सफल बनाने में अपना अंशदान देते।

१६२६ में, बारह और सोलह वर्ष के बीच की उम्र के निरक्षर युवक-युवतियो की संख्या, केवल रूसी जनतन्त्र में ही लगभग चालीस लाख थी, और इनमें से १,५८,५०० शहरी इलाको में रहते थे और बाकी देहात में। किसी के पास पहनने को जूते नहीं होते तो किसी को अपने
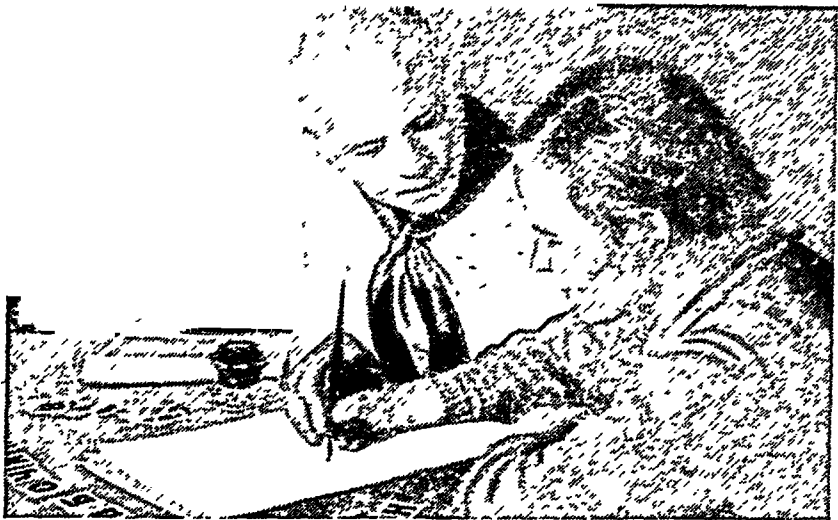
एक युवा पायोनियर अपनी मां को लिखना सिखा रहा है।

छोटे भाई-बहिनो की देख-भाल करनी होती और किसी के पास किताबें और कापियां खरीदने के लिए पैसे नहीं होते। ऐसे बच्चो की युवा पायोनियर संगठन देख-भाल करते और उन्हें घर पर पढ़ाने के लिए अपने सदस्यों को भेजते, और उनकी सहायता करने के लिए फ़ंड इकट्ठा करते थे।

इस तरह, अधिकाधिक संख्या में लोग निरक्षरता के विरुद्ध लड़ाई में शामिल हो रहे थे, अधिकाधिक संख्या में लोग पढ़ना-लिखना सीख रहे थे, विद्या की महती शक्ति को ग्रहण कर रहे थे।

लेनिन अक्सर कहा करते थे कि राजनीतिक शिक्षा के काम में भी प्रतिस्पर्द्धा अनिवार्य है। सांस्कृतिक आन्दोलन, साक्षरता और संस्कृति के संघर्ष में जनता की समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा ही तो था।

यह प्रतिस्पर्द्धा आन्दोलन वर्कशापो, फैक्टरियों, सामूहिक फार्मों, शहरो, प्रदेशो और जनतन्त्रों में फैल गया; इसमें 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा के संगठन, सांस्कृतिक दल, सामूहिक फार्म तथा सांस्कृतिक आन्दोलन के सदरमुकाम शामिल हो गये।

जून १९२९ में उत्तरी काकेशिया और साइबेरिया के बीच निरक्षरता उन्मूलन प्रतिस्पर्द्धा समझौते पर हस्ताक्षर हुए। प्रत्येक ने ४ लाख ५० हज़ार निरक्षर और ९० हज़ार अर्धनिरक्षर लोगों को पढ़ाने, ५० हज़ार स्वयसेवक अध्यापको को भरती करने, और प्रत्येक ग्राम सोवियत, राजकीय फ़ार्म और बड़े सामूहिक फ़ार्म में 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा की शाखा खोलने का बीड़ा उठाया।

दस लाख से अधिक वालिग़ो के नाम, जिनमें विवाहित पुरुष और स्त्रियां शामिल थीं, स्कूलो में दर्ज करवाना, आवश्यक संख्या में स्वयसेवक अध्यापको, कक्षाओ के लिए स्थानो, स्कूल-सामग्री इत्यादि का प्रवन्ध करना और सब काम कुछेक महीनो के अन्दर पूरा करना—आसान नहीं था। पर इस काम को पूरा किया गया। जाड़े का कार्यक्रम पूरा करने के बाद साइबेरिया के एक प्रतिनिधि-मण्डल ने उत्तरी काकेशिया के काम की जाच की, और इसी काम के लिए उत्तरी काकेशिया का एक प्रतिनिधि-मण्डल साइबेरिया गया। प्रादेशिक पार्टी संगठनो तथा सोवियतो ने परिणामो पर विचार किया। प्रतियोगिता में उत्तरी काकेशिया की जीत हुई; उसने अधिक संख्या में मजदूरो और किसानो को पढना-लिखना सिखाया था।

१९३० की पतझड़ में एक नये प्रकार की प्रतिस्पर्द्धा, तथाकथित सास्कृतिक 'रिले-दौड़' की व्यवस्था की गयी। बाकायदा रिले-दौड़ के अनुसार ही उसका भी 'आरम्भ-स्थल' और कई 'चक्कर' थे। पहला 'चक्कर' था सभी बच्चो के नाम स्कूल में दर्ज करवाना। दूसरा—निरक्षरता को दूर करना। ऐसे 'चक्कर' भी थे, जैसे मजदूरो का टेकनिकल ज्ञान बढाना, और पोलीटेकनिकल स्कूलो के जाल को विस्तृत करना।

प्रत्येक 'चक्कर' में कुछेक ऐसे काम रखे जाते जो एक दूसरे से जुड़े होते। मिसाल के तौर पर पहले 'चक्कर' में, निरक्षर बच्चो के नाम दर्ज करना, उन्हे स्कूल में दाखिल करवाना, जरूरतमन्द बच्चो के लिए कोष स्थापित करना, और स्कूलों को वक्त पर सामग्री जुटाना।

सास्कृतिक 'रिले-दौड़' में भाग लेनेवाले मुख्य दल प्रधानत. औद्योगिक उद्यमो और आस-पास के रिहाइशी इलाको से आते थे।

शुरू हो जाने के बाद सभी 'चक्कर' एक साथ चलते थे। सांस्कृतिक 'रिले-दौड़' से सांस्कृतिक दलों और उनके सदस्यों द्वारा किये जानेवाले काम ठोस और सुसंगत रूप से चलते थे और प्रत्येक काम को पूरा करने के लिए समय निश्चित करने में मदद मिलती थी।

कारखानों तथा सामूहिक फ़ार्मों में सौ फ़ी सदी साक्षरता

जब तक निरक्षर और अर्धनिरक्षर मजदूर मौजूद थे, तब तक औद्योगीकरण, और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था का टेकनिकल पुनर्निर्माण नहीं किया जा सकता था, फ़ैक्टरियों और मिलों में बराबर आनेवाली नयी टेकनीक को आत्मसात् नहीं किया जा सकता था, और इसके फलस्वरूप नयी नयी क़िस्मों के उत्पादन-क्रम नहीं अपनाये जा सकते थे।

इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार ने मजदूर वर्ग के शिक्षा सम्बन्धी, सांस्कृतिक तथा टेकनिकल स्तर को ऊंचा उठाने के बृहत् काम को हाथ में लिया। सभी बड़े बड़े औद्योगिक उद्यमों में संश्लिष्ठ संस्थापनों की व्यवस्था की गयी, जिनमें प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक का सारा क्रम शामिल होता था। प्रत्येक संस्थापन के अपने टेकनिकल मंडल और कक्षाएं काम करती थीं और टेकनिकल शिक्षा के निश्चित दिन हुआ करते थे। फ़ैक्टरी-प्रशिक्षण स्कूलों की संख्या बढ़ने लगी। १९३१ में बहुत से उद्यमों ने सामान्य शिक्षा संबन्धी तथा टेकनिकल विषयों पर इम्तहानों की व्यवस्था की और बाद के सालों में यह पद्धति बड़े विस्तृत स्तर पर फैली।

कभी कभी कोई निरक्षर अथवा अर्धनिरक्षर मजदूर पढ़ने से इन्कार कर देता: "पिछले चालीस साल से तो बिना पढ़ना-लिखना जाने मेरा काम चलता रहा है, इसी तरह आगे भी चलता रहेगा।" ऐसे लोगों को बड़े धैर्य से समझाया जाता कि कारख़ाने की टेकनीक तथा उत्पादन की टेकनोलाजी बराबर उन्नति कर रही है और उनको आत्मसात् करने

के लिए उच्च सांस्कृतिक स्तर की जरूरत होगी और यह एक निरक्षर अथवा अर्धनिरक्षर मजदूर के वस का काम नहीं होगा।

निरक्षरता उन्मूलन फैक्टरी समितियां सभी निरक्षर तथा अर्ध-निरक्षर लोगो के वारे में जानकारी रखतीं। वर्कशापो में उनके नामो की सूचियां प्रदर्शित की जातीं।

कारखानों के मजदूरो में से निरक्षरता को दूर करने के लिए कितना कुछ काम किया गया था इसका अनुमान हम लेनिनग्राद के उदाहरण से लगा सकते हैं।

१६३० की गर्मियो में, पार्टी की सोलहवीं कांग्रेस के वाद लेनिनग्राद ने शत प्रतिशत साक्षरता संघर्ष में अग्रणी स्थान ग्रहण किया। पहले तीन महीनो में अठाईस हजार स्वेच्छा से काम करनेवाले अध्यापक आन्दोलन में शामिल हो गये। १६३०-३१ की सर्दियो में ३४ हजार निरक्षर और १ लाख १२ हजार अर्धनिरक्षर लोगो को साक्षर वनाया गया जब कि इससे पहले साल में केवल ३६ हजार निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगो को पढ़ना-लिखना सिखाया गया था। १ मई १६३१ तक लेनिनग्राद में निरक्षरता को पूर्ण रूप से खत्म किया जा चुका था।

आन्दोलन का एक विशिष्ट पहलू निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में जनता को खींच लाने के अतिरिक्त नये तरीको को लागू करना था।

एक और विशिष्ट पहलू लाल (सम्मान सूचक) और काले तख्तों का लागू किया जाना था। ऐसे सुस्त उद्यम अथवा हल्के की कड़ी आलोचना तथा देख-रेख की जाती थी जिसका नाम काले तख्ते पर लिखा गया हो। जब 'एलेक्ट्रोप्रिबोर' कारखाने का नाम काले तख्ते पर लिखा गया तो हजारो की संख्या में भड़कीले हरे रंग के इश्तहार वर्कशापो और ट्रामो में लगे नजर आने लगे। इससे मजदूरो के आत्म-सम्मान को चोट लगी, और उनके दिल में फिर से अपनी मर्यादा स्थापित करने की इच्छा पैदा हुई, और इससे उन्होंने शीघ्र ही स्थिति को सुधार लिया।

'एलेक्ट्रोअपारात' कारखाने के आम सम्मेलन में, एक ऐसे वर्कशाप को जो साक्षरता के अपने काम में असफल रहा था, संगीत कला इन्स्टीट्यूट के विद्यार्थियो ने एक कछुआ भेंट किया—कछुआ सुस्ती का
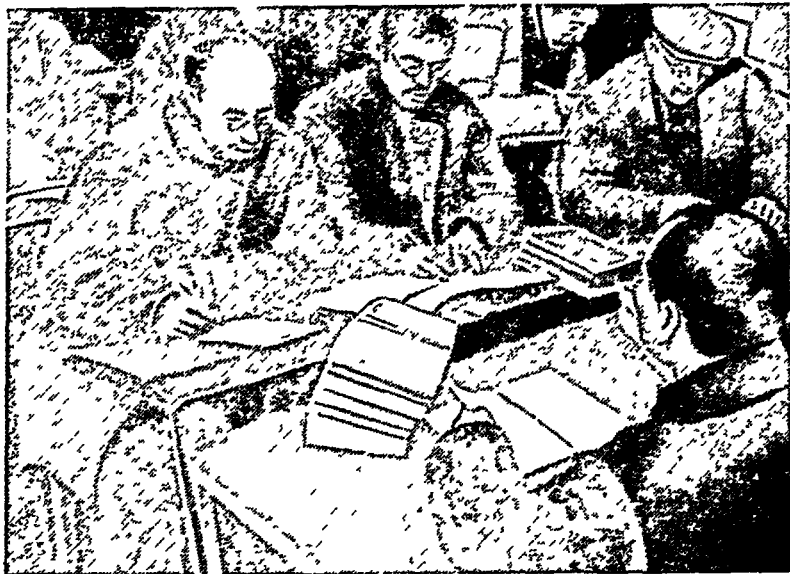
फैक्टरी के स्कूल में

प्रतीक है। इसके बाद उसने दृढ़ निश्चय से निरक्षरता को दूर करना शुरू कर दिया।

'स्वेतलाना' और 'क्रास्नी त्रेउगोलनिक' नामक कारख़ानो ने निरक्षरता निवारण योजनाओ की अतिपूर्ति की और इस तरह चैलेंज लाल ध्वज जीत लिये।

निरक्षर लोगो को समझाने का काम विस्तृत स्तर पर किया गया। निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगों के लिए शाम की 'चाय-पार्टियो' का आयोजन किया जाता था। ये पार्टियां ग़ैररस्मी तौर पर की जातीं, अक्सर किसी के घर में, और इनसे बहुत से लोगों को स्कूल जाने पर रज़ामन्द करने में सहायता मिलती थी। अक्सर उनमें पुराने बोल्शेविक, भूतपूर्व राजनीतिक क़ैदी शामिल होते जो जेलख़ानों और निर्वासन के अपने 'विश्वविद्यालयो' का तथा साधारण जनता की आजादी और अधिकारो के लिए पार्टी द्वारा किये गये संघर्ष का ब्योरा देते।

उत्कृष्ठ विद्यार्थियों को इनाम के तौर पर यात्रा-टिकट, विश्राम-गृहों के लिए पास, थियेटर-टिकट, नौसिखुओ के लिए अखबारो का चन्दा और अर्धनिरक्षरों को किताबें दी जाती थीं। साक्षरता को प्रोत्साहित करने के लिए दिये जानेवाले बोनसो की यह सूची बहुत ही अधूरी है।

लेनिनग्राद कोई अपवाद नहीं था। मास्को, यरोस्लाव्ल, बाकू, ग्रोज्नी, क्रास्नोदार, रोस्तोव-आन-दोन, समारा, नोवोसिवीर्स्क तथा अन्य शहरो में भी निरक्षरता का कामयाबी से मुकाबला किया गया। पहली पचवर्षीय योजना काल के अन्त तक औद्योगिक मजदूरो में इसे पूर्णतया खत्म कर दिया गया था।

संस्कृति आन्दोलन जिसकी शुरुआत नगरो में हुई थी, देहात में भी फैल गया, विशेषकर उस समय जब किसान जनता सामूहिक फार्मों में शामिल हो रही थी। 'सामूहिक फार्मों में सौ फी सदी साक्षरता' के नारे ने १६३० के एक मुख्य नारे का रूप ले लिया।

यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। सामूहिक फार्मों को सफलता से स्थापित करने के लिए निरक्षरता को दूर करना बेहद जरूरी था। और सामूहीकरण से निरक्षरता को दूर करने के लिए अनुकूल स्थितियां पैदा होती थीं।

जिस समय इवानोवो प्रदेश के आक्स्योनोवो गाव के ८ मार्च नामक सामूहिक फार्म के अध्यक्ष-पद के लिए एक उत्साही और दृढ संकल्पी महिला, आक्सीनिया त्रोस्तिना को चुना गया, तो सामान्य सभा के विवरण में यह वाक्य लिखा गया: "अस्थायी तौर पर चुना गया। निरक्षर है।"

त्रोस्तिना को डर भी लगा और उसके दिल को ठेस भी पहुंची। डर इसलिए कि वह नहीं सोचती थी कि वह इतने कठिन और जिम्मेदारी वाले काम को संभाल सकेगी, क्योंकि वह अनपढ थी। ठेस इसलिए कि उसे अस्थायी रूप से चुना गया था।

"शुरु शुरु में बहुत मुश्किल था," उन दिनो को याद करते हुए त्रोस्तिना कहने लगी, "रिपोर्टें पेश करनी होतीं, दस्तावेज लिखने होते, खाने में हिसाब लिखना होता, और मैं लिखना नहीं जानती थी। छोटी छोटी बात के लिए मुझे गांव के अध्यापक के पास जाना पड़ता। तब मैंने

लिखना-पढ़ना सीख लिया और मेरा काम आसान और पहले से बेहतर हो गया।"

त्रोस्तिना के लिये पढ़ना आसान नहीं था, उसके छः बच्चे थे जिनकी उसे देख-भाल करनी होती और सामूहिक फ़ार्म पर भी बहुत काम करना पड़ता।

सामूहिक फ़ार्म अर्थव्यवस्था और सामूहिक फ़ार्म उत्पादन की विशिष्टताओं के कारण अन्य स्त्रियो ने भी पढ़ने-लिखने का निश्चय कर लिया। त्रोस्तिना के ही नाम की एक युवती, दार्या ने, पढ़ना-लिखना सीख लिया, ट्रेक्टर चलाने का कोर्स पास किया और ड्राइवर का प्रमाण-पत्र लिये सामूहिक फ़ार्म में वापिस आयी। उसके बाद उसकी बहुत सी सहेलियां वयस्को के स्कूल में गयीं और कहने लगीं:

"हमें भी जल्दी जल्दी पढ़ना सिखा दो। जल्दी ही ट्रेक्टर-ड्राइवरो का एक और दल भरती किया जानेवाला है, और हम चाहती हैं कि इससे पहले हमें पढ़ना-लिखना आ जाय।"

खेतीबारी की पुरानी रीति को छोड़कर नयी समाजवादी रीति अपनाने के लिये उच्च सांस्कृतिक तथा शिक्षा स्तर की आवश्यकता थी। पार्टी और सरकार ने सौ फ़ीसदी सामूहीकरण के इलाको को सौ फीसदी साक्षरता के इलाको में बदलने का काम हाथ में लिया।

देहात में निरक्षरता दूर करने की ज़िम्मेवारी ग्राम सोवियत पर थी, परन्तु मुख्यतः इसका भार 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा की शाखाओ को वहन करना पड़ता था, जो लगभग प्रत्येक गांव में पायी जाती थीं।

सामूहिक फ़ार्म, निरक्षरता विरोधी आन्दोलन से सम्बद्ध सभी ख़र्च अदा करते, अपने सदस्यो को पाठ्य-कक्षाओं में जाने के लिए दिन में दो-तीन घण्टे की छुट्टी दे देते, सब से अच्छे विद्यार्थियों के लिए बोनस का आयोजन करते, और पढ़नेवाली स्त्रियों के लिए शिशु-गृह खोलते। कक्षाओं के लिए स्थानों, साज़-सामान, कमरो को गरम रखने तथा रोशनी का प्रबन्ध, ये सभी काम सामूहिक फार्म ही करते।

उन सालो में, देहात के समाजवादी पुनर्निर्माण में शहर उत्तरोत्तर महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे। सामूहीकरण के पहले दिन से ही

औद्योगिक मजदूरो ने किसानो के साथ गहरा सम्पर्क स्थापित किया। अग्रणी कम्युनिस्ट कामगारो ने देहात में जहालत और अन्धकार के विरुद्ध संघर्ष का नेतृत्व किया।

बड़े बड़े औद्योगिक संस्थापन खेतीबारी के इलाको, गावो और सामूहिक फार्मो की सरपरस्ती करते थे। केन्द्रीय काली भूमि के इलाके के सरपरस्त थे, मास्को और लेनिनग्राद के कारखाने: 'सेर्प इ मोलोत', 'क्रास्नी वीबोर्जेत्स', 'क्रास्नी पुतीलोवेत्स', 'दिनामो' और 'त्राम्नाया एल्ला' नामक कारखाने।

फैक्टरिया और कारखाने, उच्च शिक्षा संस्थापन तथा बडी बडी संस्थाएं हजारो की संख्या में सांस्कृतिक दलो को देहात में भेजा करतीं। सामान्यतः वे वहां एक महीने तक रहते। साक्षरता कक्षाओ की व्यवस्था करने, और स्थानीय निवासियो में से संगठक और अध्यापक तैयार करने के अतिरिक्त वे व्याख्यान तथा भाषण देते, वाचनालयो तथा विश्राम-केन्द्रो के कार्य-कलाप में सहायता देते। सांस्कृतिक दलो में न केवल निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के संगठक ही बल्कि शिक्षा रीति-विशेषज्ञ, खेतीबारी की टेकनीक के प्रशिक्षक, चिकित्सक और कृषिशास्त्री शामिल हुआ करते थे।

देहात में छुट्टिया बितानेवाले मजदूरो को बारह बातो के बारे में लिखित हिदायतें* दी जाती थीं। इन हिदायतो के अनुसार मजदूर लोग देहातो में सांस्कृतिक काम का संगठन करने और विशेष रूप से साक्षरता पाठ्य-क्रमो की व्यवस्था करने पर बाध्य होते थे।

छुट्टियो पर जानेवाले विद्यार्थियो को भी लिखित हिदायतें मिलतीं जिनमें लिखा होता: "निरक्षरता के विरुद्ध विस्तृत स्तर पर कार्यवाहियां करो।"

देहात को काफी मात्रा में भौतिक सहायता दी जाती। सरपरस्त संस्थापन किताबें, पाठ्यपुस्तकें और कापियां भेजते, स्कूलो की मरम्मत करवाते और उन्हें साज-सामान से लैस करते।

---

*देखिये परिशिष्ट ७।

एक सांस्कृतिक दल के एक सदस्य, वसीली ज़ोलिन ने अपनी नोट-बुक में लिखा:

"सभापति ने सभा का आरंभ किया। वहां बहुत से लोग मौजूद थे। मैंने सांस्कृतिक आन्दोलन के लक्ष्यों और उद्देश्यों के बारे में बताया। श्रोतागण बड़े ध्यान से सुनते रहे। कुछ लोग अपनी बात कहने के लिए बीच में बोलने लगे। पिछली पंक्तियों में बड़ी गर्मजोशी से बहस चलती रही।

"'यह सब ठीक है,' एक किसान बोला, 'इससे आदमी सहमत हो सकता है, बेशक हो सकता है। मेरी ही मिसाल लो। मैं सामूहिक फ़ार्म में शामिल हो गया हूं। अक्सर वहां कुछ लिखने, पढ़ने की या हिसाब लगाने की ज़रूरत पड़ती है। मैं कुछ भी नहीं कर सकता। ढंग ही नहीं जानता। मेरे जैसे लोग बहुत हैं। हर जगह ऐसे लोग हैं। इससे काम नहीं चलेगा ... मैं सुझाव देता हूं कि हम सब को पढ़ना चाहिए ...'

"लगभग २७ वर्ष के एक नौजवान ने उसे बीच में टोका।

"'मैं नहीं समझता कि हमें जोशीले प्रचार की यहां पर ज़रूरत है,' उसने कहा, 'आइये, काम की बात करें। निरक्षरता हम सब के लिए बहुत बड़ी मुसीबत है। पीछे बैठे हुए कुछ लोग कहते हैं कि हमारी मदद करने के लिए काफी संख्या में लोग नहीं भेजे गये। शायद यह ठीक हो, लेकिन साथियो, इस काम को हमीं को पूरा करना है।'

"सभा ने निश्चय किया कि:

"'निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगों को पढ़ने पर राज़ी करने के लिए हर मुमकिन कोशिश की जानी चाहिए, और अगर वे नहीं मानें, तो उन्हें दस रूबल जुर्माना कर देना चाहिए।'

"'लोगों को जुर्माना करने की कोई ज़रूरत नहीं है,' सभा में से एक आवाज़ आयी।

"'ज़रूरत है। हमारे सिर पर एक काम है और हमें उसे ठीक तरह से करना चाहिए।'"

देहात में निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के बारे में, आन्दोलन के एक संगठनकर्ता, ल० रीम्स्की ने लिखा:

"हम एक गांव के पास पहुचे। वहां केवल एक कुत्ते के भूंकने की आवाज सुनाई दी। एक बुढ़िया कुएं के पास खडी आंखें फाड़ फाड़कर हमारी ओर देख रही थी। कुल मिलाकर पन्द्रह झोंपड़े रहे होंगे। बिल्कुल जंगली इलाका था।

"'वह कौन सी जगह है जहां लोगो को पढ़ाया जाता है?', हमने औरत से पूछा।

"'वह घर देखते हो? वह बून्लिकोव का घर है। वही लोगो को पढ़ाता है।"

नीची छत वाले झोंपड़े के सायवान में एक ऊंचे-लम्बे किसान ने बड़ी हार्दिकता से हमारा स्वागत किया। वह सिर से नंगा और चमड़े की फटी-पुरानी जैकेट पहने हुए था। हवा उसके बालो से खेल रही थी, और उसकी आंखें बड़ी उत्सुकता से हमारी ओर देख रही थीं।

"'यहा पर निरक्षरता उन्मूलन का मुख्य कार्यकर्ता कौन है?' हमने उससे पूछा।

"'आपके सामने खड़ा है। बून्लिकोव नाम है। अन्दर तशरीफ ले चलिए।'

"झोपड़ा अन्दर से बड़ा, साफ और आरामदेह था।

"बून्लिकोव ने साक्षरता पाठ्य-क्रम के बारे में बताया, ज्ञान के चमत्कार की चर्चा की जो अन्धो को भी देखने की शक्ति प्रदान करता है, समूह में काम करना किस कदर अच्छा होता है, उसने 'नोवाया जीज्न' सामूहिक फार्म की चर्चा की जिसके अध्यक्ष-मण्डल का वह सदस्य था। अपने बारे में वह बहुत कम बात करता था।

"'मैंने जन स्कूल में शिक्षा पूरी की,' उसने कहा, 'जर्मन युद्ध* में मैं आस्ट्रियाई मोर्चे पर एक घुड़सवार टुकड़ी के साथ था। लाल सेना में मैंने एक क्रान्तिकारी अदालत के सदस्य के रूप में काम किया, ओरेल में देनीकिन के विरुद्ध लड़ा, और अन्य मोर्चों पर घमासान की लड़ाइयां देखीं।'

---

*जर्मन युद्ध – पहला विश्व-युद्ध (१९१४-१८)। – सं०

"जब गत दिसम्बर, देहात में सांस्कृतिक आन्दोलन ने ज़ोर पकड़ा, तो उसने अपने झोपड़े में एक साक्षरता कक्षा खोल दी और अब स्वेच्छा से ग्यारह निरक्षर लड़कों-लड़कियों को पढ़ा रहा था।

"हमारा वार्तालाप चल ही रहा था जब चार बज गये और उसके विद्यार्थी इकट्ठे होने शुरू हो गये। पांच मिनटों के अन्दर, खिले चेहरोंवाली युवतियों-युवकों से कमरा भर गया ... हर एक अपने साथ एक स्टूल लेता आया था। उन्होंने दो मेजें एक दूसरे के साथ जोड़ीं, फिर उनके इर्द-गिर्द सटकर बैठ गये और किताबें खोल लीं। बूब्लिकोव ने शिकायत की थी कि उनके पास ब्लैकबोर्ड नहीं था, बहुत कम कापियां थीं और पेंसिलें तो नाम को नहीं थीं।

"ज्यों ही पाठ शुरू हुआ, कमरे में चुप्पी छा गयी। बूब्लिकोव हाथ में वर्णमाला की पुस्तक उठाये, कमरे में चहलकदमी करने लगा और बड़ी चुस्त आवाज़ में इमला लिखाने लगा:

"'इमला लिखो: 'अक्तूबर क्रान्ति की सालगिरह'। लिख लिया? अब लिखो: 'चारों ओर उत्साह लहरें ले रहा है'। और अब लिखो, 'सड़क पर लोगों की बाढ़ आ गयी है'।'

"इसके बाद पढ़ने के अभ्यास का वक़्त आया।

"जब बूब्लिकोव को पता चला कि हम मास्को से आये हैं तो उसने अपनी बड़ी बड़ी मूंछों पर हाथ फेरा और कड़ाही जितना बड़ा हाथ झटककर बड़ी झेंप के साथ बोला—

"'हमारे मामूली से स्कूल को देखकर, उम्मीद है, साथियो, आप हमारी कड़ी आलोचना नहीं करेंगे। हम अमीर नहीं हैं। हरेक विद्यार्थी अपना स्टूल लेकर स्कूल में आता है। हमारे पास तो ब्लैकबोर्ड और चॉक भी नहीं हैं कि हम विद्यार्थियों को गुणा करना भी सिखा सकें। हमारे लिये थोड़ी सिफ़ारिश कर दीजिये ताकि वे लोग वहां हमें भूल नहीं जायं।'"

देहात में से निरक्षरता को दूर करने में उन प्रतिज्ञाओं ने भी बहुत बड़ी भूमिका अदा की जो किसानों ने स्वयं की थीं तथा उन निश्चयों ने भी जो ग्राम-सभाओं ने अपनाये थे।

इस प्रकार का निश्चय अपनाने में प्स्कोव क्षेत्र ने पहलकदमी की थी, और १६३० में उसे कामयाबी से पूरा किया गया। प्स्कोव की मिसाल का अनुकरण लेनिनग्राद प्रदेश तथा देश के अन्य बहुत से क्षेत्रो ने किया।

अंगीकार करने से पहले, निश्चय के मसविदे पर पूरी तरह विचार किया गया। गाव वालो ने निरक्षर लोगो को पढ़ने और साक्षर लोगों को पढ़ाने पर बाध्य किया। आन्दोलन पर सार्वजनिक नियन्त्रण लागू किया गया। गांव अथवा सामूहिक फ़ार्म की सभाओ में उन लोगो से जवाबतलबी की जाती जो साक्षरता कक्षाओ से गैरहाजिर रहते थे। निश्चय में पढ़नेवालो तथा पढ़ानेवालो की सूची शामिल की जाती, साथ ही उन लोगो की भी जिन्हें कक्षाओ के लिए स्थान तथा ईंधन जुटाना होता। एक विशेष नियन्त्रण समिति स्थापित की जाती जिसका काम यह देखना होता कि निश्चय पर उचित रूप से अमल किया गया है।

देहात में सांस्कृतिक आन्दोलन के परिणामो का निर्णय निम्न वोल्गा इलाके तथा केन्द्रीय काली भूमि के इलाके की उपलब्धियो के आधार पर किया जा सकता है।

१६३१ में, निम्न वोल्गा इलाके में निरक्षरता को लगभग पूर्ण रूप से ख़त्म किया गया। १६२७-२८ में, सांस्कृतिक आन्दोलन के शुरू किये जाने से पहले, निम्न वोल्गा इलाके में केवल ४३,८ प्रतिशत साक्षर लोग पाये जाते थे। १ मई, १६३१ तक, साक्षरो की सख्या ६७,३ प्रतिशत तक जा पहुंची थी और ब्रिटेन, फ़्रांस और सयुक्त राज्य अमेरिका के स्तर को छूने लगी थी। इस उपलब्धि के लिए उसे जनतन्त्र के लाल ध्वज से पुरस्कृत किया गया।

यह कामयाबी क्योकर मिली? प्रथमतः और मुख्यतः तो इस कारण कि पार्टी संगठनो ने निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में भाग लेने के लिए विस्तृत स्तर पर जनता में उत्साह पैदा कर दिया था—आन्दोलन में भाग लेनेवालों की संख्या ८८ हज़ार तक जा पहुंची थी।

१५ दिसम्बर, १६३० को इलाके की पार्टी समिति ने निरक्षरता के विरुद्ध चौतरफ़ा हमला करने की घोषणा कर दी। सभी साक्षर लोगो को इस काम के लिए भरती किया गया। प्रत्येक गांव को बीस बीस

परिवारों के विभागो में बांट दिया गया और प्रत्येक विभाग का एक संगठनकर्ता नियुक्त किया गया। युवा कम्युनिस्ट लीग के संगठनों ने ग्राम सोवियतों में 'खबरदारी की चौकियां' बिठा दीं जिनका काम आन्दोलन की देख-रेख करना और गड़बड़ होने पर 'खतरे की घण्टी' बजाना था।

हल्क़ों, ग्राम सोवियतों, गांवो, ग्राम-विभागों, तथा निरक्षरता विरोधी संघर्षकारियों ने समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा समझौते सम्पन्न किये। जीतनेवालों के बारे में निश्चय करने के लिए विशेष समितियां स्थापित की गयीं। निरक्षरता विरोधी हमले में भाग लेनेवाले लोग अपने को सांस्कृतिक मोर्चे के तूफानी सैनिक घोषित करते।

अख़बारो ने इस हमले का बहुत कुछ प्रचार किया और उसकी सहायता की। इलाके की पाक्षिक पत्रिका 'सांस्कृतिक मोर्चा' ने निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के विभिन्न पहलुओ के बारे में लेख तथा परामर्श प्रकाशित किये। इलाके में विशेषतः साक्षरता पाठ्य-क्रम के विद्यार्थियो तथा अध्यापकों के लिए अन्य पत्रिकाएं भी प्रकाशित की जाती थीं—'लेनिन के आदेश' नामक पत्रिका तथा 'वर्णमाला', 'साक्षरता के लिए' तथा 'आगे बढ़ो' नामक अखबार। विशेष पुस्तिकाएं, पत्रक तथा इश्तहार भारी संख्या में जारी किये गये और रेडियो सन्देशों के विशेष आदान-प्रदान की व्यवस्था की गयी। छापेमार सांस्कृतिक दलों में काम करने के लिए सात हज़ार नगर निवासियों ने स्वेच्छा से अपने नाम लिखवाये, और इन दलों ने ७६ हल्क़ो के ६००० गांवों का दौरा किया। प्रत्येक दल को एक ठोस काम पूरा करना होता था।

निम्न वोल्गा इलाके में इस सुव्यवस्थित सांस्कृतिक आक्रमण से अच्छे परिणाम प्राप्त हुए। इसके फलस्वरूप लगभग सभी निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोग पढ़ने के लिए राज़ी हो गये। क्रमानुसार देहात की मदद करके नगर ने अपना अंशदान दिया। नगरवासियों की संस्कृति-सेना ने देहात के उन इलाकों के साथ गहरा सम्पर्क बनाये रखा, जिनमें उन्हें नियुक्त किया गया था।

केन्द्रीय काली भूमि के इलाके में भी निरक्षरता के विरुद्ध आन्दोलन को सफलता प्राप्त हुई। १९३० के बसन्त में १२,४८,६९५ लोग पढ़ना-

लिखना सीख रहे थे, अर्थात् १९२७-२८ की संख्या से दस गुना ज्यादा।[1]

१९२९-३० में केन्द्रीय काली भूमि के इलाको में नौ से लेकर चालीस साल तक की उम्रवाले निरक्षर लोगो की संख्या तीस लाख बनती थी। आप ख्याल कीजिये, १ करोड़ १० लाख की आबादी में बीस लाख वयस्क और नौ लाख तरुण निरक्षर थे। यह भारी मुसीबत नहीं थी तो और क्या था?

इसका मुकाबला करने के लिए छापेमार पार्टी दस्ते तैयार करके देहात के इलाको में भेजे गये। लाखो की संख्या में कारखानो और दफ्तरो के कर्मचारी तथा विद्यार्थी स्वेच्छा से देहात में गये।

आन्दोलन की ओर किसान भी आकृष्ट हुए। लगभग १५ हजार साक्षर किसानो ने लोगो को पढ़ना-लिखना सिखाने में सहायता दी।

बहुधा किसान लोग स्वेच्छा से निरक्षरता को मिटाने के बारे में निश्चय अपनाते। यहां हम ऐसे ही एक निश्चय का उल्लेख करेंगे:

"ज्यागिल्सेवो ग्राम सोवियत के कोन्द्रात्येन्का गांव की निरक्षर स्त्रियो की आम बैठक का विवरण। बैठक में निरक्षर स्त्रियो और निरक्षर तथा साक्षर पुरुषो ने भाग लिया। कार्यसूची: निरक्षरता को पूर्ण रूप से खत्म करना।

"निश्चय किया गया कि:

"निरक्षरों को पढाने के लिए सभी साक्षर लोगो की सहायता प्राप्त की जाय। निरक्षर लोगो को दलो में बांट दिया जाय, प्रत्येक दल के लिए एक संगठक नियुक्त किया जाय। निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के लिए धन जमा किया जाय, इसके अतिरिक्त इस काम के लिए एक हेक्टर ऊसर भूमि अलग कर दी जाय।"

निरक्षरता को मिटाने के काम में प्रत्येक व्यक्ति अपना अंशदान देना चाहता था। किसान लोग मेज और ब्लैकबोर्ड बनाते, अपने घरो में कक्षाए चलाते। पूरे के पूरे गांव 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा में शामिल हो गये। बहुत से लोग स्वेच्छा से निरक्षर लोगो को पढाने के लिए सामने आये। एक दिन चेरमोश्न्यान्स्की ग्राम सोवियत में दल संगठक निकूलिन से पूछा गया:

"तुम कितने निरक्षर लोगो को पढ़ा रहे हो?"

"वहुत नहीं, केवल चार को।"

"ज्यादा को क्यो नहीं पढ़ाते?"

"कहां से लाऊं? सभी पढ़ रहे हैं।"

इन स्वयंसेवक-अध्यापकों ने अपने कर्त्तव्य के प्रति प्रशंसनीय ईमानदारी और निष्ठा प्रदर्शित की। उन दिनों को याद करते हुए द्राचेव ग्राम सोवियत के संगठनकर्ता कोनोनेन्को ने वताया: "कक्षा के लिए एक महिला ने अपना कमरा मुफ़्त में दे रखा था। कमरे में किसी प्रकार का भी साज़-सामान नहीं था। छात्रो ने मिलकर लकड़ी ख़रीदी, अपने हाथो से वेंचें और मेज़ें वनायीं और मिट्टी के तेल से जलनेवाला एक लैम्प ख़रीदा। वे स्वयं कमरे को गरम करते और वारी वारी से उसे वुहारते और साफ करते थे।"

१६२६ के अन्त में वोरिसोग्लेन्स्क क्षेत्र की द्वितीय शानिन ग्राम सोवियत में २५० निरक्षर लोग थे। निश्चय किया गया कि एक साल के अन्दर, विना किसी वाहिरी सहायता के उन्हें पढ़ना-लिखना सिखा दिया जाय। परन्तु यह कैसे संभव था, जव कि वे आठ विभिन्न सेक्टरो में रहते थे, और प्रत्येक सेक्टर दूसरे से तीन या चार किलोमीटर की दूरी पर था। पढ़नेवालों को इकट्ठा क्योकर किया जा सकता था जव कि काफी संख्या में कक्षाओ के लिए कमरे नहीं थे, और जो उपलव्ध थे वे एक दूसरे से वहुत फ़ासिले पर थे, और वहुत सी स्त्रियों की गोद में नन्हें वच्चे थे जिनकी देख-भाल उन्हें करनी पड़ती थी? काम आसान नहीं था लेकिन उसका वड़ा सरल हल ढूंढ़ निकाला गया: निरक्षर लोगों को घर पर पढ़ाया गया। उन्हें ३८ दलों में वांट दिया गया। किसानों ने ४० ऐसे लोगों को नियुक्त किया जो अन्य लोगों की तुलना में अधिक साक्षर थे और प्रत्येक को ६ निरक्षर व्यक्तियों को पढ़ाने पर वाध्य किया।

छात्र असाधारण उत्साह के साथ पढ़ते, कभी कभी जाड़े और वर्फ के अन्वड़ों में तीन-तीन और पांच-पांच किलोमीटर का फ़ासिला तय करके स्कूल जाते। कुर्स्क के क्षेत्र में सांस्कृतिक आन्दोलन का व्योरा देते हुए, व० म० नौमेन्को ने 'पूर्ण साक्षरता के लिए' नामक अपनी पुस्तिका में लिखा:

"जाड़े की लम्वी रातों में, अच्छे मौसम में भी और वुरे में भी, लगभग हर दसवें झोपड़े में आधी रात तक रोशनी जलती रहती।
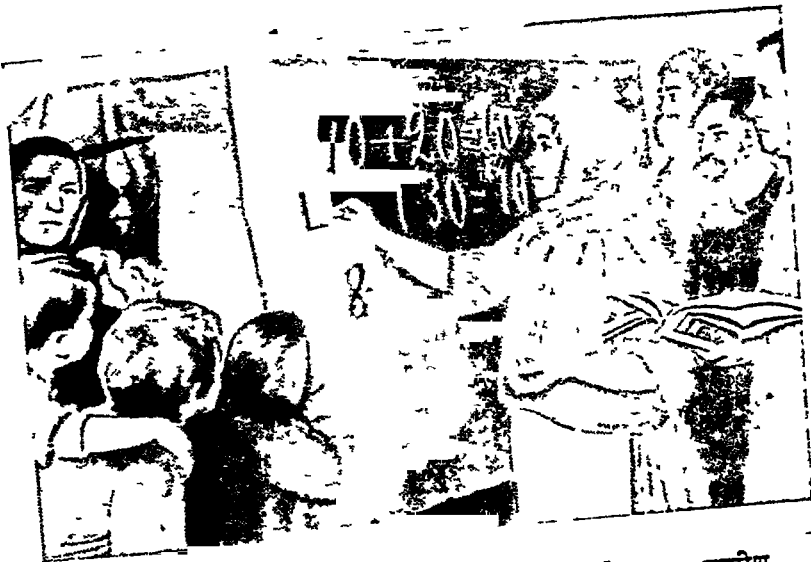
केन्द्रीय काली भूमि के प्रदेश में वालिगो के एक ग्रामीण स्कूल में गणित-कक्षा का दृश्य।

"एक साथ जोड़कर रखी हुई मेज़ो के इर्द-गिर्द वयस्क मर्द और औरतें बैठी होतीं। वहां पर सदा 'मेहमान' भी आये रहते—वे थे बूढे लोग। वे चुपचाप बैठे, कुतूहल से अन्य लोगो को पढते-लिखते देखते रहते।

"ये बुज़ुर्ग सदा मदद करते थे। उनमें से एक स्टोव का ख्याल रखता ताकि कमरा गर्म रहे, दूसरा पेंसिलें तराश देता, तीसरा यह दरयाफ्त करने चला जाता कि क्यो कुछ लोग पढ़ने के लिए नहीं आये हैं।

"ऐसी स्थितियां भी देखने में आती थीं जब कोई दाढीदार आदमी, जिन्दगी का पांचवां या छठा दशक पार करता हुआ, सहसा यह निश्चय कर लेता कि वह भी पढ़ने-लिखने की कोशिश करेगा और अन्य लोगों के साथ मिलकर, अपनी खुरदरी उंगलियो से भौंडे से अक्षर लिखने लगता।

"'सारी उम्र मैं अन्धा रहा हूं,' वह कहता, 'और अब जब बूढा होने को आया हूं तो जी चाहता है कुछ देख लूं।'"

रूस के दूरवर्ती इलाक़े

संस्कृति और साक्षरता का आन्दोलन बाढ़ की तरह देश भर में फैल गया और राष्ट्रीय इलाकों और जनतन्त्रों को भी अपनी लपेट में ले लिया।

ज़ारशाही निरंकुशता ग़ैररूसी जन-जातियों का दमन और उत्पीड़न करती थी। राष्ट्रीय उत्पीड़न की उसकी नीति के कारण दूरवर्ती इलाकों के लोग आर्थिक तथा सांस्कृतिक पिछड़ेपन के गर्त में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे।

"रूसी जनतन्त्र के नक्शे पर नज़र दौड़ाइये," लेनिन ने लिखा, "वोलोग्दा के उत्तर, रोस्तोव-आन-दोन और सरातोव के दक्षिण-पूर्व, ओरेनबूर्ग और ओम्स्क के दक्षिण, तोम्स्क के उत्तर में असीम इलाके फैले हुए है जिनमें दर्जनों की संख्या में बड़े बड़े सुसंस्कृत राज्य समा सकते है। और इन सभी इलाकों में पितृसत्तात्मक पद्धति, अर्धवर्बरता और पूर्ण वर्बरता का बोलबाला है।"

ज़ारशाही के दिनों में बहुत सी जन-जातियों की अपनी लिपिबद्ध भाषा तक नहीं थी, और स्कूल या तो थे ही नहीं, या बहुत कम थे।

महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति ने सामाजिक और जातीय दासता की बोझल जंजीरें तोड़ डालीं।

सुसंगत रूप से लेनिन की जातीय नीति का अनुकरण करते हुए कम्युनिस्ट पार्टी ने, भूतपूर्व उत्पीड़ित राष्ट्रों की तथ्यगत असमानता को दूर करने, उनका औद्योगीकरण करने और उनके सांस्कृतिक विकास के लिए आवश्यक स्थितियां पैदा करने का बीड़ा उठाया।

'जातीय प्रश्न पर पार्टी के निकटतम काम' नामक प्रस्ताव में पार्टी की दसवीं कांग्रेस (१९२१) ने कहा कि हमारे सामने ग़ैररूसी श्रमजीवी जन-जातियों की मदद करने का काम है जिससे वे केन्द्रीय रूस के स्तर तक पहुंच सकें, अपनी भाषा में प्रेस, स्कूल और थियेटर तथा अन्य सांस्कृतिक तथा शिक्षा संबन्धी संस्थापन खड़े कर सके और योग्यता प्राप्त

कामगारो और पार्टी और सरकार के कार्यकर्ताओ के प्रशिक्षणार्थ पाठ्य-क्रमो और स्कूलो का विस्तृत जाल बिछा सके।

और चूकि राष्ट्रीय जनतन्त्र तथा जातीय प्रदेश लगभग पूर्ण रूप से निरक्षर थे इसलिए वहां निरक्षरता को दूर करने का काम सब से प्रमुख सांस्कृतिक काम बन गया।

इन जातीय इलाको में सांस्कृतिक आन्दोलन के फलस्वरूप एक नये प्रकार की सरपरस्ती पैदा हुई: केन्द्रीय रूस के समुन्नत इलाको की पिछडे हुए जातीय इलाकों पर सरपरस्ती। केन्द्रीय रूस के समुन्नत इलाको ने इस काम के लिए भारी संख्या में सांस्कृतिक दलो को नियुक्त किया। मास्को से विशेष दल बश्कीरिया, तुर्कमनिस्तान और उत्तरी काकेशिया में काम करते रहे।

बहुत ही अलग अलग प्रकार के साधन इस्तेमाल किये गये: चलते-फिरते फिल्मी प्रदर्शन और व्याख्यान, साक्षरता पाठ्य-क्रमो के संगठन में सहायता, अखबारो और किताबों का वितरण और—सब से अधिक महत्त्वपूर्ण—स्वेच्छा से काम करनेवाले अध्यापको का प्रशिक्षण।

साक्षरता आन्दोलन बहुत ही असामान्य और कठिन परिस्थितियो में चलता रहा।

श्वेत सागर के तट से लेकर बेरिंग जलडमरूमध्य तक के विस्तृत इलाके में दूर उत्तर की छोटे छोटे समुदायो में रहनेवाली जन-जातियां बसी हैं। गरीबी, सौ फी सदी निरक्षरता, शमानवाद*, बीमारी, बर्बर प्रथाएं—क्रान्ति से पहले यहां यह सब और इससे भी अधिक बहुत कुछ पाया जाता था।

सोवियत शासन काल में उत्तरी इलाका वस्तुतः बदल गया है।

---

*शमानवाद—वर्ग गत समाज बनने से पहले का आदिकालीन अतिप्रचलित धर्म, विशेषरूप से उत्तरी एशिया में। शमान (पादरी) जनून की सी मानसिक स्थिति पैदा कर लेते, और उनके कथनानुसार भूतो के साथ बातचीत करते और इस तरह अपने आस-पास के लोगो पर अपना प्रभाव स्थापित करते।

अब वहां पर बड़े बड़े औद्योगिक इलाके, सैकड़ों की संख्या में कामगारों की बस्तियां और नगर, जहाज़रानी और हवाई मार्ग पाये जाते हैं। जीवन भी मूलतः बदल गया है। सोवियत सत्ता ने उत्तरी जन-जातियों को लुप्त होने से बचा लिया। सहकारी शिल्प समाजों की स्थापना से उनकी आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति को प्रोत्साहन मिला। कुछ ही मुद्दत बाद पहले स्थानीय डाक्टर और अध्यापक वहां प्रकट हुए। और इन जन-जातियों को अपनी लिपिबद्ध भाषा प्राप्त करने में भी बहुत देर नहीं लगी।

पूर्वी साइबेरियाई इलाके के उलागा हल्के के एक वयस्क स्कूल के एक छात्र ने लिखा: "पहले मैं रूसी में बहुत मुश्किल से पढ़ सकता था, लिखता तो इससे भी बुरा था। एक पन्ना भर पढने में मुझे सारा दिन लग जाता था। पढ़ते समय मेरा पसीना छूटने लगता मानो मैं तीन दिन और तीन रात से घने ताइगा जंगल में बारहसिंघे का पीछा कर रहा हूं। अन्त तक पहुंचते पहुंचते मेरी जीभ थक जाती और सुन्न हो जाती। जहां तक मेरी अपनी भाषा तुंगूसिक का सवाल है, मुझे मालूम तक नहीं था कि उसकी कोई वर्णमाला है या नहीं। अब मैं वर्णमाला को जानता हूं और बिना किसी कठिनाई के तुंगूसिक भाषा में पढ़ सकता हूं। मेरी जीभ अब थकती नहीं, अब वह पहले से अधिक सुभीते के साथ काम करती जान पड़ती है। मैं तुंगूसिक भाषा में अपने लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए एक सामूहिक फार्म में जा रहा हूं।"

साल दर साल साक्षरता पाठ्य-क्रमों में पढ़नेवाले वयस्कों की संख्या बढ़ने लगी। १९२४ में जहां नेनेत्स जाति का एक भी साक्षर आदमी ढूंढ पाना लगभग नामुमकिन था, वहां दस साल बाद नेनेत्स क्षेत्र का हर चौथा निवासी पढ़-लिख सकता था। वहां की विशिष्ट स्थितियों में छात्रावास स्कूल सब से अधिक कामयाब साबित हुए। एक खास इमारत में स्थित प्रत्येक छात्रावास स्कूल में एक क्लास-रूम, एक बड़ा शयनागार और एक विश्राम-केन्द्र हुआ करते थे। ज्ञान के लिए भूख बढ़ने लगी। शमानों द्वारा लोगों के मनों में स्कूलों के प्रति बैठाया गया अविश्वास धीरे धीरे लुप्त हो गया। फ़र बेचने और अपनी आवश्यकता की चीज़ें

ख़रीदने के लिए सैकड़ो किलोमीटरो का फासिला तय करके व्यापार-स्थल पर ग्रानेवाला नेनेत्स जाति का व्यक्ति, वड़ी उत्सुकता से कुछ महीनो के लिए छात्रावास स्कूल में रुक जाता।

उत्तर के अधिकाश जातीय क्षेत्रो में टेकनिकल स्कूल खोले गये और लेनिनग्राद में उत्तरी जन-जातियो का इन्स्टीट्यूट खोला गया। इस इन्स्टीट्यूट के स्नातको के एक दल ने १६३६ में लिखा:

"हमारे मां-बाप ने पढ़ने की, सुसस्कृत वनने की स्वप्न में भी कभी ग्राशा नहीं की थी। हमारी माताए यह सोचने तक का साहस नहीं कर सकती थीं कि दूर उत्तर की उत्पीड़ित स्त्री किसी दिन ग्रपने देश की पूर्ण नागरिका वन सकती है। यदि समाजवादी क्रान्ति न हुई होती, यदि पार्टी न होती, सोवियत सत्ता न होती, तो क्या हम स्वय शिक्षा ग्रहण कर पाते? इन्होने ही जनताग्रो को काम करने का, शिक्षा पाने का ग्रधिकार दिया है..."

१६३८ में उत्तरी जन-जातियो के इन्स्टीट्यूट में कुल ३५५ व्यक्ति शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। इतना ही नहीं, ध्रुव-वृत्त के इलाको से ग्राने-वाले लगभग १२०० मर्द ग्रौर ग्रौरतें ग्रन्य उच्च शिक्षा सस्थापनो तथा टेकनिकल स्कूलो में शिक्षा प्राप्त कर रही थीं। इस भाति देश के ग्रत्यधिक पिछड़े हुए प्रदेशो में से एक प्रदेश का रूप वदल गया।

जहालत, संस्कृति का ग्रभाव, वीमारी, ग्रौर लगभग पूर्ण निरक्षरता—जारशाही काल में कास्पी सागर के उत्तर-पश्चिमी तट पर स्थित कालमीक इलाके की यह स्थिति हुग्रा करती थी।

सोवियत सत्ता ने लाखो को संख्या में खानावदोश परिवारो को वस्तियो में वसने के समर्थ वनाया। तेरह मिशनरी स्कूलो का स्थान (उनमें कुल ६२६ व्यक्ति शिक्षा प्राप्त कर रहे थे) सैकडो सोवियत स्कूलों, युवा सामूहिक किसानो के लिए स्कूलो, कृषि तथा सहकारी कालिजो, व्यावसायिक स्कूलो, सोवियत तथा पार्टी के कार्यकर्ताग्रो के लिए एक स्कूल ग्रौर जातीय विशेषज्ञो के प्रशिक्षण के लिए जगह जगह खोले गये पाठ्य-क्रमो ने ले लिया।

लैटिन वर्णमाला के ग्रंगीकार किये जाने ग्रौर उसके ग्राधार पर जातीय लिपिवद्ध भाषा के तैयार किये जाने का ग्रत्यधिक महत्त्व था।

जिन स्थितियों में निरक्षरता-संघर्षकारी कार्य करते थे, वे भी विचित्र थीं। गर्मी के मौसम में कालमीक लोग स्तेपी में छोटे छोटे दलों में रहते थे। इससे बहुत बड़ी कठिनाइयां पैदा हो जाती थीं। प्रत्येक दल के साथ एक अध्यापक-प्रचारक नियुक्त किया जाता था और वह अपनी साक्षरता कक्षा के साथ एक चरागाह से दूसरी चरागाह तक घूमता रहता।

यहां पर संस्कृति-कर्मचारियो को कुलकों और लामाओं के विरोध का सामना करना पड़ता था। सांस्कृतिक काम में रुकावट डालने के लिए लामा लोग प्रार्थना-सभाएं किया करते थे। और कुलक शोर-गुल मचाते कि कालमीक ३०० साल तक बिना पढे-लिखे अच्छी तरह जीवन निर्वाह करते रहे हैं। "अगर हम पढने लगेंगे तो हम अपने काम और झुण्डो की ओर ध्यान देना छोड़ देंगे, और भिखारी बन जायेंगे।"

परन्तु इन सब बातो के बावजूद संस्कृति और शिक्षा के लिए किया जानेवाला आन्दोलन सुसंगठित ढंग से चलता रहा, और स्थानीय आबादी सक्रिय रूप से उसमें भाग लेती रही। उसकी कामयाबी में बहुत बड़ा हाथ युवा कालमीको का था जो सरातोव, मास्को, लेनिनग्राद तथा अन्य शहरों में उच्च शिक्षा संस्थाओ तथा टेकनिकल स्कूलो में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। १९३२ तक, इलाके में साक्षरो की प्रतिशतता बढ़कर ९२ तक जा पहुंची थी।

काकेशिया में साक्षरता आन्दोलन काफी कामयाब रहा। १९२७ से पहले काकेशिया में बसी हुई बहुत सी जन-जातियो के श्रम जीवियो को प्राथमिक साक्षरता के बारे में कुछ भी मालूम न था। मिसाल के तौर पर, चेचेन इलाके में एक भी स्कूल नहीं था। दागेस्तान में ३५ मिशनरी स्कूल थे, ज़रूर, पर उनमें देहात की आबादी का केवल ०.३३ प्रतिशत भाग तालीम पा सकता था। बेशक धार्मिक स्कूल संख्या में बहुत थे।

सोवियत सत्ता की विजय के फलस्वरूप काकेशियायी पहाड़ों में पुराने कानून—आदत और शरीअत—जिनमें धर्म भक्ति, स्त्रियो की दासता और राष्ट्रीयतावाद की शिक्षा दी जाती थी, टूटने लगे।

१९३१ में ही चेचेन स्वायत्त प्रदेश में १०० से अधिक स्कूल, पचास से अधिक साक्षरता पाठ्य-क्रम, पचास वाचनालय और अर्धनिरक्षरो के लिए तीस स्कूल थे। सैकड़ो युवा चेचेन अध्यापन-स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। निरक्षर लोगों को पढाने के लिए इस्तेमाल की जानेवाली वर्णमाला की पुस्तक चेचेन भाषा में थी। अर्धनिरक्षर लोगो के लिए चेचेन भाषा में 'कोलखोज्नाया प्राव्दा' नामक अखबार निकाला जाता था।

निरक्षरता के विरुद्ध अपने आन्दोलन में चेचेन जन-जाति को उक्रइन की श्रमजीवी जनता से बहुमूल्य सहायता मिली। केवल १९३१ में ही उक्रइन वालो ने चेचेन स्वायत्त प्रदेश को २४,००० रूबल, १४,००० कापियां, १५,००० पेंसिलें, दो फिल्म-प्रोजेक्टर और स्क्रीनें, और छः रेडियो-सेट भेजे। साथ ही उन्होने संगठनकर्ताओ, शिक्षा रीति-विशेषज्ञों और अध्यापकों के अनेक दल भेजे।

काकेशिया में साक्षरता के सक्रिय समर्थको में से एक समर्थक, खावा असानोवा नाम की स्त्री हुआ करती थी। वह मेक्स्त्री-युर्त नामक पहाड़ी गांव की रहनेवाली थी। उसकी बेटी अक्तूबर क्रान्ति के लिए, श्वेत गार्डों के विरुद्ध लड़ते हुए मारी गयी थी और स्वय उसे भी एक बार बहुत पीटा गया था। परन्तु उसके दृढ़ संकल्प को कोई भी तोड़ नहीं सका। ६५ साल की अवस्था के बावजूद, अपने लोगो में वह साक्षरता और नये जीवन के अत्यधिक उत्साही समर्थको में से थी। जहां भी उसका बस चलता, वह अपना अंशदान देती थी—सार्वजनिक भोजनालयो में, अस्पतालो, निर्माण-स्थलो और खेतो में। उसने 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा की शाखाएं तथा सिलाई के कोर्स संगठित किये। 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा की दूसरी अखिल रूसी कांग्रेस में असानोवा को सभा की केन्द्रीय परिषद् की सदस्या निर्वाचित किया गया।

कुछेक गांवो में जहां पुरानी प्रथाओं का जोर था, स्त्रियों ने पुरुषो के साथ बैठकर पढ़ने से इन्कार कर दिया। उनके लिए विशेष पाठ्य-क्रमों की व्यवस्था करनी पड़ी।

अदिगेई प्रदेश में, युवा कम्युनिस्ट लीग के सदस्यो की सास्कृतिक सरगर्मियो से, कुलक और मुल्ला घबरा उठे। धर्मनिष्ठ लोगो के नाम

अपील में, जिसमें उन्होंने पढ़ने की ख्वाहिश की भर्त्सना की थी, उन्होंने कहा :

"मुसलमान भाइयो, इस्लाम खतरे में है। कुरान शरीफ को पावों के नीचे रोंदा जा रहा है। नौजवानो को इस बेवकूफ़ाना हरकत से रोको। यो भी रोम का पोप और विदेशी ताकतें इन छिछोरो को धर्म का नाश नहीं करने देंगी।"

पुराण-पन्थियो की कोशिशें नाकाम रहीं। स्वायत्त जातीय प्रदेशों में सब से पहले अदिगेई ने निरक्षरता को समाप्त किया।

कवार्दा और वल्कारिया में, बुर्यात-मंगोलिया और ओसेतिया में, पूर्वी जनतन्त्रों में, वास्तव में हर जगह साक्षरता आन्दोलन ने जोर पकड़ा।

क्रान्ति पूर्व के तुर्केस्तान* में बजट का केवल १.८ प्रतिशत भाग सार्वजनिक शिक्षा पर खर्च किया जाता था। जिस इलाके को आजकल उज्बेकिस्तान का नाम दिया जाता है, वहां, १९१४ में केवल १७.५ हज़ार बच्चे स्कूलों में शिक्षा पाते थे, और उनमें से अधिकांश ज़ारशाही अफसरों और स्थानीय धनियों के बच्चे हुआ करते थे। वहां पर केवल एक ही टेकनिकल स्कूल था और उच्च शिक्षा संस्थान तो एक भी न था। वयस्कों में से २ प्रतिशत से भी कम लोग साक्षर थे। ज़ारशाही उपनिवेशवादियो का सरकारी मुखपत्र ही एकमात्र उज्बेक भाषा में प्रकाशित होनेवाला अखबार हुआ करता था।

लेनिन आज्ञप्ति की उद्घोषणा के कुछ ही देर बाद तुर्केस्तान में निरक्षरता उन्मूलन केन्द्रीय तथा स्थानीय असाधारण समितियां संगठित की गयीं। शीघ्र ही, पहले वयस्क-स्कूल प्रकट हुए और १९२१ तक केवल ताशकंद में ही १०० से अधिक वयस्क-स्कूल काम कर रहे थे। राज्य के खर्च पर उन्हें किताबें, कापियां तथा अन्य सामान जुटाया जाता था।

१९२४ में मध्य एशिया में जातीय इलाको के सीमांकन के बाद,

---

*तुर्केस्तान – मध्य एशिया में ज़ारशाही रूस की प्रशासनात्मक और प्रादेशिक इकाई। इसकी आबादी में उज्बेक, तुर्कमान, ताजिक और कज़ाख शामिल थे।

उज्बेक, ताजिक, तुर्कमान, कज़ाख़ और किर्गिज़ जनतन्त्र वनाये गये। शीघ्र ही इन नये जनतन्त्रो की अपनी 'निरक्षरता मुर्दावाद' सभाए वन गयीं। साक्षरता स्कूलो के लिए वहुसख्यक संस्करणो में वर्णमाला की पुस्तके और शिक्षा रीति संवन्धी पुस्तिकाएं प्रकाशित की गयीं और अध्यापको के प्रशिक्षण के लिए विशेष पाठ्य-क्रम व्यवस्थित किये गये।

स्कूलो का जाल वड़ी तेजी से फैलने लगा। १६२६ में जहा किर्गीजिया में वयस्क आवादी का केवल १५.१ प्रतिशत भाग पढ-लिख सकता था, वहां १६३६ में प्रतिशतता ७० तक जा पहुंची थी। यह प्रगति सोवियत पूर्व के सभी जनतन्त्रो और प्रदेशो की विशिष्टता थी।

इन भूतपूर्व जातीय दूरवर्ती इलाको के सास्कृतिक पिछड़ेपन के विरुद्ध संघर्ष में सव से वड़ी कठिनाई स्त्रियो को पढने के लिए राजी करने में होती थी। इस काम के लिए वहुत वडे प्रयास और धैर्य की जरूरत थी, क्योकि वह एक साथ स्त्रियो के उद्धार के लिए किया जानेवाला संघर्ष भी था।

पूर्व में, समाज और परिवार, दोनो में स्त्री सव से अधिक उत्पीड़ित और अधिकारहीन थी। पति द्वारा उसके लिए दिये गये वधु-शुल्क से वह उसकी सम्पत्ति वन जाती थी। वह अपना जीवन घर के ज़नानख़ाने में विता देती और उसका काला वुर्का सूर्य के प्रकाश को उस तक नहीं पहुंचने देता था। शरीअत के अनुसार "मुनासिव कारण के विना पत्नी को सार्वजनिक स्थानो में जाने की इजाजत नहीं होनी चाहिए।" इसलिए उज्वेक स्त्रियों के लिए न केवल पढने की ही वल्कि किसी आर्टेल् अथवा फैक्टरी में काम करने, अदालत में पेश होने इत्यादि की मनाही थी। इस प्रथा के विरुद्ध आचरण करने पर स्त्री को कड़ा दण्ड दिया जाता था।

ऐसी गुलामीभरी परिस्थितियो में ताजिक, उज्वेक अथवा तुर्कमान स्त्री शिक्षा के वारे में सोच तक नहीं सकती थी। यदि वह अपने हाथ में पाठ्यपुस्तक को उठाने तक का दु.साहस करती तो अपने पर कुत्ता छोड़े जाने, चट्टान पर से धक्का दिये जाने, या नदी में डुवो दिये जाने का ख़तरा मोल लेती।

अक्तूवर क्रान्ति ने उन कानूनो को ख़त्म कर दिया जिनमें स्त्री को पुरुप से निम्न करार दिया गया था।

६ नवम्वर १६१६ को लेनिन ने 'प्राव्दा' में लिखा: "यूरोप के सव से पिछड़े हुए देशो में से एक देश में सोवियत सत्ता ने दो साल के अर्से में स्त्रियों का उद्धार करने और उन्हें 'अधिक वलवान'—पुरुप जाति—के समान वनाने में इतना कुछ किया है जितना १३० सालो में सभी प्रमुख, रोशन-दिमाग़, 'जनवादी' जनतन्त्र मिलकर नहीं कर पाये।"

पार्टी के कार्यक्रम में निर्धारित महत्त्वपूर्ण कार्यों में से एक कार्य स्त्री-पुरुप संवन्धी अतीत के अवशेपों को दूर करना और स्त्री के उद्धार के लिए भौतिक स्थितियों का निर्माण करना था। "प्रत्येक वावर्चिन को राज्य का प्रवन्ध करना सीखना चाहिए"—लेनिन का यह प्रसिद्ध वाक्य ज़वर्दस्त आह्वान वन गया जिसने लाखों श्रमजीवी स्त्रियों को पढ़ने, देश के राजनीतिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। सोवियत पूर्वी जनतन्त्रों में उद्घोपित पहली आज्ञप्तियों के अनुसार १६ वर्प से कम उम्र की लड़कियो का व्याह करना, वहुपत्नि-प्रथा, वधु-शुल्क इत्यादि पर प्रतिवन्ध लगा दिया गया। परन्तु समानता की उद्घोपणा मात्र से ही वास्तविक समानता नहीं आ गयी।

तुर्केस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने ए० अ० रॉस को अशकावाद की स्त्रियों में काम करने के लिए नियुक्त किया। उसने जो कुछ कहा वह हम नीचे उद्धृत करते हैं:

"१६२२ में प्रादेशिक पार्टी स्कूल में एक महिला-विभाग खोला गया। उसमें दस तुर्कमान स्त्रियों को दाख़िल किया गया। उन्हें पढ़ना-लिखना, शिष्ट सामाजिक मेल-जोल के प्राथमिक नियम सिखाये गये। स्त्रियों को भरती करना वड़ा मुश्किल काम था—विभाग में दाख़िल होनेवाली स्त्री के लिए परिवार द्वारा जाति में से निकाल दिये जाने और पति तथा संवन्धियों द्वारा उत्पीड़ित किये जाने का ख़तरा पैदा हो जाता था।

"तुर्कमान स्त्रियो के उद्धार के संघर्प की पहली शिकार इन्हीं दस छात्राओं में से एक वनी। इस युवती को उसके पति ने स्कूल के

शयनागार के बाग में जान से मार डाला और बाद में हमारे सामने आकर अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

"'मैंने उसके लिए वधु-शुल्क दिया था,' वह कहने लगा, 'मैं उसे पढ़ने की इजाज़त नहीं देता था, वह मुझे छोड़कर चली गयी। स्कूल में वह अर्दों के साथ वातें करती, सारी शरम-हया उसने वेच खायी थी, आदत को भूल चुकी थी—इसी लिए मैंने उसे मार डाला।'

"उस आदमी को विश्वास था कि उसने जो कुछ किया था, ठीक किया था, और जब उसे गिरफ़्तार किया गया तो वह सचमुच हैरान रह गया।

"'जज लोग मुझे जरूर वरी कर देंगे क्योकि आदत में हुक्म है कि ऐसी वीवियो को मार डालना चाहिए,' वह वार वार कहे जाता।"

आगे चलकर पूर्व की स्त्री के पूर्ण और कार्यसाधक उद्धार और प्रवोधन के लिए वड़ा तीव्र और दीर्घकालीन सघर्ष किया जाता था।

इसे आगे वढ़ाने के लिए पार्टी ने स्त्री-कम्युनिस्टो के एक दल को पूर्वी जनतन्त्रो और प्रदेशो में भेजा, और उन्होंने वहा वहुत वडी सेवा की। वड़ी होशियारी से और परम्परागत प्रथाओ के प्रति आदर भाव रखते हुए उन्होंने पूर्व की अपनी वहिनो को साक्षर वनने और घृणित वुर्का उतार फेंकने में मदद दी, उन्हे फैक्टरियो और मिलो में काम करने ले गयीं, ट्रेक्टर से उनका परिचय कराया और राज्य के प्रवन्ध की दिशा में पहले कदम उठाने में उनकी सहायता की।

सामाजिक दृष्टि से उन्हें सचेत वनाना, सुख और आज़ादी की दिशा में इन दासियों का पथ-प्रदर्शन करना आसान काम नहीं था, विशेषकर जव वे हमेशा ही लोगो की आंखो से छिपी रही थीं और हमेशा ही निर्विवाद रूप से अपने पुरुषो का हुक्म मानती रही थीं। कठिनाइयो का कारण केवल आर्थिक और सांस्कृतिक पिछडेपन और अतीत के क्रूरतापूर्ण अवशेष ही नहीं थे वल्कि आवादी की रगारग की जातीय वनावट भी थी। उसके अतिरिक्त ऐसे वहुत कम साक्षर व्यक्ति थे जो स्थानीय जनता की भाषा और रीति-रिवाज को अच्छी तरह जानते थे। एक पत्रकार

महिला, अल्ला उराजवायेवा के कथनानुसार, जो किर्गिज़ इलाकाई पार्टी समिति के महिला-विभाग की सब से पहली अध्यक्षाओ में से थी, १६२२ में केवल पांच स्त्रियां अन्य स्त्रियो में सास्कृतिक काम कर रही थीं।

शुरू शुरू में सांस्कृतिक कार्यकर्त्रिया फूंक फूंककर कदम रखतीं, और धीरे धीरे आगे बढ़तीं, सामान्यतः अलग अलग व्यक्तियो के साथ अथवा छोटे छोटे दलो के साथ काम करतीं। वे प्रत्येक साधन का प्रयोग करतीं और इसमें मेल-मुलाकात के लिए 'घरो में जाना' भी शामिल था। यहां तक कि हमामो में भी वे विचारो का प्रचार करती रही थीं। कभी कभी, जनानख़ाने में घुस पाने के लिए वे स्वय बुर्के ओढ लेती थीं।

उन दिनो को याद करती हुई ल० ओत्मार-स्तीन कहती है:

"एक दिन मै और मेरी दुभापिया एक घर में गयीं। बड़ी देर तक हम परेशानी की हालत में फाटक के बाहर खड़ी रहीं। फाटक पर लगे लोहे के छल्ले को खटखटाने के बाद हम सोचने लगीं कि क्या वे हमें अन्दर भी घुसने देंगे या नहीं। हर बार ऐसा ही होता था। जब वे फाटक खोलते तो हमें सामान्यतः आंगन लांघकर ज़नानख़ाने में जाना पड़ता, और सारा वक़्त पतियों, पिताओ और भाइयों की सन्देह और विरोध भरी आंखें हमारा पीछा किये रहतीं।

"हमारा जाना हमेशा ही बडी दिलचस्पी और कुतूहल का कारण बनता। उज्बेक स्त्रियां हमारी पोशाको, और बाल काढ़ने के हमारे ढंग की ओर टिकटिकी बाधे देखती रहतीं। इस बात से वे बहुत हैरान होती थीं कि हम जहां चाहे घूम-फिर सकती है, और हमें बुर्का नहीं ओढ़ना पड़ता। उनकी नजरो में हम किसी दूसरे, अज्ञात संसार की रहनेवाली थीं, एक ऐसे संसार की जो आकर्षक भी था और भयानक भी।

"हम उन्हें महिला संगठनो, लड़कियो के स्कूलो, चिकित्सा सहायता तथा लेनिन के बारे में बतातीं जो साधारण जनता के कल्याण के लिए मास्को में रहते तथा काम करते थे।"

धीरे धीरे मुसलमान स्त्रियां अधिक क्रियाशील होती गयीं, विशेषकर जब वे अधिकाधिक संख्या में सामाजिक उत्पादन के काम में लगने लगीं।

लेनिन ने लिखा था: "यदि हम स्त्रियों का पूर्ण रूप से उद्धार करना चाहते हैं और उन्हें सचमुच पुरुषो के समान बनाना चाहते हैं तो इसके लिए उन्हे सामाजिक दृष्टि से अर्थव्यवस्था के उत्पादक श्रम में लगाना चाहिए।"

लेनिन का यह निर्देश विशेष रूप से पूर्वी जनतन्त्रो और प्रदेशो पर लागू होता था। सामाजिक उत्पादन में स्त्रिया अनिवार्यत जीवन, जनता तथा प्रत्येक ऐसी चीज़ के संपर्क में आती थीं जो उनकी ज़नानख़ाने की चारदीवारी के बाहर की थी।

पूर्व में महिला क्लबो और महिला देहकान-घरो से स्त्रियो के जागरण में बड़ी सहायता मिली। ख़ानाबदोशो में यही भूमिका विश्राम-तंबूघर और पशुपालिका गृह अदा करते थे।

पहला आदर्श महिला क्लब, तीसरे दशक के आरभिक सालो में, बाकू में खोला गया और उसका सचालन पार्टी की केन्द्रीय समिति करती थी। इस काम के लिए सरकार ने शहर की सब से शानदार इमारतो में से एक इमारत को चुना था, जो एक स्थानीय धनी का घर था। क्लब में पुस्तकालय, वाचनालय, साक्षरता स्कूल, व्यावसायिक टेकनिकल स्कूल, पार्टी स्कूल और तृमासिक कानूनी पाठ्य-क्रम की व्यवस्था थी।

क्लब का उत्पादन विभाग अनेक वर्कशाप और शिल्पी-सघ चलाता था, जब कि मां और शिशु रक्षा विभाग, जच्चा-बच्चा चिकित्सालय, एक किंडरगार्टन, एक औषधालय और एक दवाख़ाना चलाता था।

इसी प्रकार के क्लब मध्य एशियाई जनतन्त्रो में भी सगठित किये गये। वे बहुत ही लोकप्रिय सिद्ध हुए। मुसलमान स्त्रिया उनमें पढ़ने, अपना सास्कृतिक स्तर ऊंचा उठाने, व्यवसाय सीखने, और सामूहिक रूप से काम करना सीखने के लिए जाया करती थीं। सोवियत पूर्व की बहुत सी स्त्रियो के लिए ये क्लब सार्वजनिक जीवन के विस्तृत ससार में पहले महत्त्वपूर्ण कदमो के समान थे।

शहरो के महिला क्लबों और विश्राम-केन्द्रों के प्रतिरूप उज्बेकिस्तान तुर्कमनिस्तान और अन्य पूर्वी जनतन्त्रो के गावो में भी पाये जाते थे।

कहीं भी उनके स्थायी कर्मचारी दल नहीं हुआ करते थे, स्त्रिया स्वेच्छा से उनकी देख-भाल करती थीं।

तुर्कमान किसान स्त्रियो की शिक्षा में अश्काबाद के केन्द्रीय महिला देहक़ान-घर ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की। वह बड़ी सुन्दर विशाल इमारत में स्थित था और उसमें एक फलो का बाग़ और एक साग-सब्जी का बाग़ थे और एक बड़ा शयनागार था जिसमें १५-२० व्यक्ति सो सकते थे; इनके अतिरिक्त शिशु-गृह, चिकित्सा तथा कानून संबन्धी परामर्श-कक्ष, एक साक्षरता स्कूल, एक वाचनालय, एक सिलाई-कक्षा, और एक स्नानगृह थे। अश्काबाद में बाहर से आनेवाली किसान स्त्रियां उस घर में दो सप्ताह तक मुफ़्त रह सकती थीं। केन्द्रीय महिला देहक़ान-घर द्वारा संचालित चलते-फिरते दल थे जो गांवों का दौरा करते और साक्षरता पाठ्य-क्रमो, लड़कियों के स्कूलो और स्त्रियों के विश्राम-केन्द्रों को संगठित करने में मदद देते। पशु-पालन के इलाकों में पशुपालिका गृह बनाये गये। ऐसा पहला गृह १९२७ में अल्मा-अता में स्थापित किया गया था।

१९२५ में कज़ाख़स्तान में स्त्रियो के विश्राम-तंबूघर, जिनकी तुलना चलते-फिरते क्लबों से की जा सकती है, बहुत लोकप्रिय सिद्ध हुए। नये जीवन के बारे में प्रचार, निरक्षरता को दूर करना, चिकित्सा और क़ानून सम्बन्धी परामर्श, ये मुख्य काम थे जो उन्होंने अपने ऊपर ले रखे थे। इन तंबूघरों द्वारा संगठित 'सफाई मंडल' बड़े कामयाब साबित हुए।

विश्राम-तंबूघरो ने ख़ानाबदोश औरतो के सांस्कृतिक और राजनीतिक जागरण में बड़ी मदद की। १९२८ की गर्मियो में कज़ाख़स्तान में ऐसे ८० तंबूघर पाये जाते थे।

मध्य एशिया की स्त्रियों में निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष १९१९ में ताशकन्द में स्त्रियों के पहले उच्च शिक्षा संस्थान 'दोर्ल मुगलकमात'—(उच्च शिक्षा शास्त्र संस्थान) के खुल जाने से शुरू हुआ। पहले दो साल तक मुख्यतः प्राथमिक शिक्षा दी जाती, क्योंकि अधिकांश छात्राएं निरक्षर हुआ करती थीं। बाद में उसका नाम बदलकर शिक्षा संस्थान

रखा गया और उसका पाठ्य-क्रम एक माध्यमिक स्कूल के पाठ्य-क्रम के अनुसार निश्चित किया गया। इसके अतिरिक्त अध्यापन और शिक्षा रीति-विज्ञान पर विशेष बल दिया जाता। १९२० में स्त्रियो के लिए ऐसे दो और संस्थान खोले गये—देशी यहूदी और तुर्की-तातारी शिक्षा संस्थान।

१९२० में स्त्रियो के लिए पहले साक्षरता स्कूल खोले गये। जिस दिन कक्षाएं खोली गयीं, उस दिन का ब्योरा ल० गोलिक इस तरह देती है :

"एक दिन शुक्रवार को, हमने निश्चय किया कि वक्त आ गया है कि हम निरक्षरता को दूर करने के काम में जुट जायं। सार्वजनिक शिक्षा विभाग में हमें एक पुराना ब्लैकबोर्ड मिल गया, और हमने वर्णमाला की पुस्तके, कापियां और पेंसिलें तैयार कर लीं। काम शुरू करने से पहले एक कन्सर्ट का आयोजन किया गया था। जब कुछ स्त्रिया जमा हो गयीं तो एलिसा—जो पहले दुभाषिया और उस समय अध्यापिका का काम करती थी, हाथ में खडिया उठाये ब्लैकबोर्ड की ओर गयी। उसने अपना परिचय कराया, बड़े स्पष्ट अक्षरों में अपना नाम ब्लैकबोर्ड पर लिखा और एक एक अक्षर का उच्चारण समझाया। फिर उपस्थित स्त्रियो में से सब से बड़ी उम्र की स्त्री से उसका नाम पूछा। उसका नाम याक्शा था। एलिसा ने वह नाम भी ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया और प्रत्येक अक्षर की व्याख्या की। अन्य स्त्रिया भी इसमें रुचि लेने लगीं और एलिसा से अपने अपने नाम भी लिखने का आग्रह करने लगीं।

"इसके बाद उनमें हमने कापियां और पेंसिलें बाट दीं और 'याक्शा' लिखने को कहा।

"... स्त्रियां अपने काम में इतनी खो गयीं कि जब 'कलाकार' आये तो उन्होंने कह दिया कि उन्हें कन्सर्ट में कोई दिलचस्पी नहीं है और लाइनें घसीटती रहीं।

"फिर हमने छात्रो के नाम दर्ज करने शुरू कर दिये। केवल छः स्त्रियो ने पढ़ना मंजूर किया। परन्तु काम शुरु हो गया था और इसकी हमें बेहद खुशी हुई... हमने साक्षरता का प्रचार करना जारी रखा और धीरे धीरे हमारा स्कूल पनपने लगा।"

वयस्क स्त्रियो के स्कूलो के साथ साथ लडकियो के स्कूलो की संख्या भी वढ़ने लगी।

स्त्रियो में किया जानेवाला काम अपूर्व स्तर पर फैलने लगा और अधिकाधिक संख्या में स्त्रियां दाखिल होने लगीं। जिन स्त्रियो ने पढना-लिखना सीख लिया था – भले ही उनका ज्ञान वहुत कम रहा हो – अपने संवन्धियो और गांव के लोगो में वड़े उत्साह से शिक्षा का प्रचार करने लगीं। एक विशिष्ट उदाहरण लीजिये। एक दिन एक किसान युवती सेमिपालातिन्स्क महिला संगठन के कार्यालय में आयी। उसका नाम मगुरुशात वाईसोवा था और वह अपने पति और सास के अत्याचार से भागकर आयी थी। वड़े स्नेह से उसका स्वागत किया गया और उसे स्कूल में भेज दिया गया। शीघ्र ही वह एक कुशल संगठनकर्त्री वन गयी। उसने एक गांव में काम शुरू किया, जहां अमीर जमींदारो का हमाम ज़ब्त कर लिया गया था, और वह कज़ाख स्त्रियो को कपड़े धोने और इस्त्री करने का काम सिखाने लगी। इसके वाद इसने उन्हे पढ़ना-लिखना सिखाया, और स्थानीय सोवियत के क्रिया-कलाप में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। न तो वह अमीर ज़मींदारो की धमकियो से डरती थी और न ही पुरानपन्थियो की ठिठोलियो से। सक्रिय सांस्कृतिक कार्यकर्त्रियों के एक अच्छे दल को संगटित करने के वाद वाईसोवा ओरेनवूर्ग रवफाक* में पढ़ने के लिए चली गयी।

सोवियत पूर्व में निरक्षर स्त्रियों की संख्या वड़ी तेज़ी से कम होने लगी। १९२६ में केवल ७ प्रतिशत तुर्कमान स्त्रियां पढ़-लिख सकती थीं। १९३८ में उनकी संख्या ६० प्रतिशत से भी अधिक हो चुकी थी।

कम्युनिस्ट पार्टी और सोवियत सरकार के निरन्तर परिश्रम के शानदार नतीजे निकले: वही स्त्रियां जो पहले उत्पीड़ित और जाहिल थीं, एक नये और सुखी जीवन की सक्रिय निर्माता वनती जा रही थीं।

---

*रवफाक – सोवियत सत्ता के प्रारम्भिक वर्षों में स्थापित कामगारो-किसानो के उस स्कूल का नाम है जो उच्च शिक्षा की संस्थाओ से संवंधित रहता था और उनके लिए कामगारो-किसानो को तैयार करता था। – सं०

मिसाल के तौर पर, उज्बेकिस्तान में १९२६ में ही १५१२ स्त्रियो को स्थानीय सोवियतो के लिए निर्वाचित किया गया था। काकेशिया तथा मध्य एशिया में स्त्रियो की बढ़ती हुई सामाजिक चेतना तथा क्रियाशीलता का एक लक्षण यह था कि वे विभिन्न प्रकार के जन-उद्यमो में भाग लेने लगी थीं। हज़ारो की संख्या में वे कांग्रेसो, सम्मेलनो तथा क्रान्तिकारी पर्वों से सम्बद्ध समारोह-सभाओ में भाग लेती थीं।

८ मार्च, १९२४ को, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर जो सभा ताशकन्द में हुई वह इसका उपयुक्त उदाहरण प्रस्तुत करती है।

समारोह का मंच, जिसपर सभा का अध्यक्ष-मण्डल बैठा था, शोख लाल रंग के अनगिनत झण्डो से सजा था।

चारो ओर भड़कीले प्रदर्शन-पट्ट लहरा रहे थे, और उनपर ये नारे अंकित थे:

'बुर्का और गुलामी मुर्दाबाद!'
'अपमानजनक वधु-शुल्क मुर्दाबाद!'
'पूर्व की उन्मुक्त नारी, जिन्दाबाद!'

पहले भाषण के बाद तालियो की गड़गड़ाहट अभी शान्त ही हो पायी थी कि हाल फिर एक बार गूंजने लगा:

"वे आ रही हैं, आ रही हैं!"
"देहकान स्त्रियां आ रही हैं।"

उज़्बेक, किर्गीज़, ताजिक और तुर्कमान स्त्रिया हॉल में दाखिल हुई और अपनी अपनी जगह पर बैठ गयीं। उनमें से एक औरत सीधी मंच पर चढ़ गयी और अध्यक्ष-मण्डल में जा बैठी। देहकान सम्मेलन में भाग लेनेवाली उज़्बेक सदस्याओ ने चेहरो पर से बुर्के हटा दिये।

एक के बाद एक, अलग अलग प्रदेशो और जनतन्त्रो की महिला प्रतिनिधियां भाषण देने के लिए उठने लगीं।

लगभग १८ साल की एक उज़्बेक लडकी ने, जो बुर्का तो पहने थी लेकिन उसे चेहरे पर से हटा रखा था, बडे भावनापूर्ण शब्दो में

बताने लगी कि यह किस भांति घर की चारदीवारी के अन्दर बड़ी हुई, उसे कैसे कैसे अपमान सहने पड़े और अन्त में वह कैसे ताशकन्द पहुंची।

"इस समय मैं मध्य एशिया के कम्युनिस्ट विश्वविद्यालय की छात्रा हूं। पुराने पूर्वाग्रह के कारण, जो मुझे मां के दूध के साथ ही मिला था मैं बुर्के को अभी तक नहीं त्याग सकी। पर अब मेरी आंखें खुल गयी हैं। आज, अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, मैं इसे उतारकर फेंक रही हूं और फिर इसे कभी हाथ नहीं लगाऊंगी। मुझे इससे घृणा हो गयी है।

"माताओ और बहिनो," उसने अन्त में कहा, उसके चेहरे पर मुस्कान खिल उठी थी, "पूर्व की नारी गुलाम हुआ करती थी, मगर अब वह गुलाम नहीं है!"

हॉल तालियों से गूंज उठा।

निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के शत्रु

लेनिन ने कभी भी निरक्षरता दूर करने के काम को केवलमात्र सांस्कृतिक काम नहीं माना। उनका मत था कि यह वर्ग-संघर्ष का भी अंग है। संस्कृति तथा सौ फ़ी सदी साक्षरता के आन्दोलन में प्राप्त होनेवाली पहली कामयाबियां समाजवाद के उन शत्रुओं के विरुद्ध घोर संघर्ष में प्राप्त हुई थीं जो सांस्कृतिक क्रान्ति में रुकावट डालने के लिए हर तरह के तरीके इस्तेमाल कर रहे थे।

कुलकों और पादरियों का विरोध तो विशेषरूप से भयंकर था। यह भली भांति समझा जा सकता था। निरक्षरता दूर हो जाने से उन्हें डर था कि वे और शहर के व्यापारी लोगों की अज्ञानता से लाभ उठाने की संभावना से वंचित हो जायेंगे। वर्ग-शत्रु भली भांति जानता था कि समाजवादी संस्कृति के फलने-फूलने से वह ख़त्म हो जायेगा।

निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के विरुद्ध जिस हथियार को सब से ज्यादा इस्तेमाल किया जाता था वह था अफ़वाहों का हथियार। कुलक और पादरी एक के बाद एक, तरह तरह की कपोल-कल्पनाएं फैला रहे थे।

"आज तो ये लोग निरक्षरता पर हल्ला बोल रहे हैं, कल ये तुम्हारे माल-असबाब पर हल्ला बोलेंगे और तुम्हारी आखिरी कमीज़ तक तुमसे छीन लेंगे।"

"पहले ये निरक्षरता का खात्मा करेंगे, फिर उन लोगो का खात्मा करेंगे जिन्हें पढ़ना-लिखना सिखा रहे हैं: केवल कम्युनिस्टो को ज़िन्दा छोड़ेंगे।"

"'निरक्षरता मुर्दावाद' सभा एक ऐसी सभा है जो निरक्षर लोगो को मुर्दे बनाकर छोड़ेगी।"

कुलको ने इस प्रकार की अफवाहे फैलाकर भी कि पाठ्यपुस्तको और पेंसिलो की कीमतें बहुत ज्यादा हैं सांस्कृतिक और शिक्षा संबन्धी आन्दोलन को भंग करने की कोशिश की।

स्ताव्रोपोल क्षेत्र में वे लोग यह अफवाह फैलाते फिरे कि जो लोग पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं उन्हें लड़ाई के मोर्चे पर भेज दिया जायेगा। मध्य वोलगा इलाके में उन्होंने यह कहकर गरीब किसानो को डराने की कोशिश की कि प्रत्येक छात्र को एक खास टैक्स देने पर बाध्य किया जायेगा, या यह कि खेतीबारी की उपज पर टैक्स बढा दिया जायेगा। कुर्स्क क्षेत्र में विरोधी तत्त्व 'भविष्यवाणी' करते रहे: "तुम्हें पढ़ना-लिखना सिखाने के बाद ये लोग तुम्हें सामूहिक फार्मो में भरती कर लेंगे, उसके बाद कम्यूनो में, और वहा तुम सब एक ही लम्बे-चौडे कम्बल के नीचे सोया करोगे; या यह कि लड़कियो को अपने बाल काटने पर मजबूर किया जायेगा," आदि आदि।

विरोधी वर्ग के इस प्रचार से प्रभावित होकर, कुछेक निरक्षर लोगों ने निरक्षरता जन-गणना करनेवालो को झांसा देने की कोशिश की और कक्षाओ में नहीं आये।

तरह तरह की अफवाहें और मनगढ़न्त कहानियों को फैलाने से भी कुलको और पादरियों और विभिन्न प्रकार के सम्प्रदायवादियो को सन्तोष नहीं हुआ और वे खुल्लमखुल्ला निरक्षरता विरोधी कार्यवाहियो की निन्दा करने लगे।

स्थिति के अनुकूल अपने को ढालने में पादरियो ने तनिक भी समय नहीं खोया। साक्षरता स्कूलो को नाकामयाब बनाने के लिए उन्होंने अपने

स्कूल खोले, और सह-गान, संगीत तथा नाटक-मण्डलियां संगठित कीं। दुश्मन आतंक फैलाने पर भी उतर आया। केन्द्रीय काली भूमि के इलाके में वहुत सी वारदातें भी हुईं, अध्यापको को पीटा गया या उनपर गोली चलायी गयी, स्कूलो को आग लगा दी गयी, वर्णमाला की पुस्तको तथा अन्य पुस्तको को जला डाला गया।

कुर्स्क हल्के में, शाम के वक़्त कुलक लोग सफेद कफन पहनकर निकल आते और स्कूलो में से लौटनेवाले लोगो को डराते। कक्षाओ में से घरो को लौटती लड़कियो को पकड़कर कोड़ो से पीटा जाता।

रोस्तोव-आन-दोन के लेनिन हल्के में गुण्डो का एक दल, वड़ी वाकाइदगी से, लोगो को डराने के लिए डरावने नकाव पहने खिड़कियों में मे कक्षाओ के अन्दर कूद पड़ता और उन्हे भंग कर देता। तगानरोग में कुलक और उनके पिट्ठू स्कूल की खिड़कियो पर गोलियां चलाते, पत्थर मार मारकर उन्हे तोड़ देते, वर्णमाला की पुस्तकें फाड देते, छुरे निकालकर क्लासो में घुस आते और छात्रो को भगा देते।

संस्कृति को प्रोत्साहित करनेवाले लोगो को खत्म करने के लिए कुलको ने ऐमे ऐसे क्रूर साधन अपनाये जिनकी कल्पना करना कठिन है। किर्सानोव्का नामक साइवेरियाई गाव में उन्होंने पन्क्राती मार्किदोनोव नाम के एक कम्युनिस्ट को कत्ल कर दिया, जिसने किसानों को पढ़ाने के काम में अपना जीवन अर्पित कर रखा था और प्रादेशिक अखवार में लेख लिखा करता था। अपने ग्रामवासियो के सामने भाषण देते हुए मार्किदोनोव ने एक वार कहा था: "हमारे गांव पर अंधकार छाया हुआ है। जरूरत इस वात की है कि हरेक व्यक्ति शिक्षित वने, अन्धकार को दूर किया जाय, क्योंकि तभी हम अच्छी तरह से जी सकेंगे।"

"सुनो वे कम्युनिस्ट," कुलको ने उमे धमकाया, "तुम्हें कोई हाथ नहीं लगाता, तुम भी लोगो के मामलो में टाग मत अड़ाओ।"

इन धमकियो से मार्किदोनोव डरा नहीं और साधारण जनता के लिए नये सुखी जीवन की खातिर पहले की तरह उत्साह से काम करता रहा। और एक दिन रात के वक़्त कुलको ने खिड़की में से गोली मारकर उसे मार डाला।

कुलको ने यही एक कायरतापूर्ण अपराध किया हो, सो बात नहीं है। १९२९ की पतझड़ में उन्होंने ऐसे २०० अपराध किये, जिनमें से ६० से अधिक घातक सिद्ध हुए।

परन्तु सोवियत सत्ता के शत्रु संस्कृति आन्दोलन को दबाने में कामयाब नहीं हो पाये। सोवियत अधिकारियो तथा जनता ने उनकी विध्वसक कार्यवाहियो को छिन्न-भिन्न कर दिया।

हर तीसरा व्यक्ति छात्र बना

१९३२ में इतालवी वैज्ञानिको का एक दल द्नीपर पनबिजलीघर के निर्माण-स्थल का दौरा करने गया। दल के एक सदस्य का–जो कि प्रोफेसर था–एक विभागाध्यक्ष के साथ निम्नलिखित रोचक वार्तालाप हुआ.

"आपके कामगारों में से कितने लोग पढ़ रहे हैं?"

"दस हजार।"

"और आपके यहां कामगार कितने हैं?"

"दस हजार।"

"तो फिर काम कौन करता है?"

"जो लोग पढ़ते हैं।"

यह संक्षिप्त वार्तालाप उन सब से अधिक महत्त्वपूर्ण विशिष्टताओ में से एक विशिष्टता को लक्षित करता है जिनका बीज सोवियत सत्ता ने सोवियत जनता के बीच डाला था–और वह थी, विशाल स्तर पर पढ़ने की उत्कट इच्छा।

संस्कृति आन्दोलन के दौरान लाखो की संख्या में निरक्षर और अर्धनिरक्षर लोग स्कूलो में जाने लगे–१९२८-३२ में साक्षरता स्कूलों में २ करोड़ ३४ लाख ७२ हजार निरक्षर लोग पढ़ते थे, इनमें से १ करोड़ ९९ लाख १९ हजार ६ सौ देहात में थे, और १ करोड ११ लाख १४ हजार ५ सौ लोग शहरी और देहाती दोनो इलाको के अर्धनिरक्षरता स्कूलो में जाते थे। पंचवर्षीय योजना के लक्ष्यांको की अतिपूर्ति की गयी। जातीय जनतन्त्र, विशेष रूप से मध्य एशियाई जनतन्त्र किसी हद तक पीछे रह गये।

१९३२ में, पहली पंचवर्षीय योजना काल के अन्त तक हर तीसरा कामगार, और कुछेक फ़ैक्टरियो और मिलों में तो हर दूसरा कामगार, पढ़ रहा था। परन्तु वयस्कों में सौ फ़ी सदी साक्षरता तभी प्राप्त की जा सकी जव निरक्षर वच्चों और वालिगो की वाढ़ को रोका जा सका। इसके लिए सभी वच्चों को स्कूलों में भेजने की ज़रूरत थी। १९०३ में ही लेनिन ने 'गांवो के ग़रीवों से' शीर्षक अपनी पुस्तिका में लिखा था कि केवल "सभी वच्चों की मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षा से ही किसी हद्द तक जनता वर्तमान अन्धकार से छुटकारा पा सकती है"।

समाजवादी क्रान्ति के फ़ौरन ही वाद कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने स्कूली कार्यक्रम को अमली जामा पहनाने का काम शुरू कर दिया।

१४ अगस्त १९३० को, पार्टी की सोलहवीं कांग्रेस द्वारा अपनाये गये प्रस्ताव का अनुकरण करते हुए, सोवियत संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति तथा सरकार ने 'सार्वत्रिक अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा संवन्धी' एक आज्ञप्ति जारी की। १९३०-३१ के स्कूली साल से ही सारे देश में आठ से दस साल तक की उम्र के वच्चों के लिए सार्वत्रिक मुफ़्त प्राथमिक शिक्षा, और औद्योगिक नगरों, फ़ैक्टरी-हल्को और मज़दूरो की वस्तियों में रहनेवाले वच्चो के लिए सातसाला शिक्षा अनिवार्य करार दी गयी। एक ही साथ ११ से १५ साल की उम्र के सभी लड़को और लड़कियों के लिए, जिन्होने पहली चार जमातों की पढ़ाई नहीं की थी, अनिवार्य शिक्षा लागू की गयी।

निरक्षरता विरोधी आन्दोलन की भांति सार्वत्रिक शिक्षा ने भी राष्ट्रव्यापी रूप ग्रहण किया। इस आन्दोलन में युवा कम्युनिस्ट लीग विशेष रूप से सक्रिय थी। उसने प्राथमिक शिक्षा को अपनी सरपरस्ती में ले लिया। लीग के सदस्य स्कूली उम्र के वच्चो के नाम दर्ज करते और पाठ्यपुस्तकें तथा लिखने का सामान इकट्ठा करते। उन्होने गरीव वच्चो के लिए एक कोष भी चलाया। लीग की केन्द्रीय समिति की पहलकदमी पर देहात में एक लाख हेक्टर भूमि पर खेती की, और उससे प्राप्त होनेवाले धन से शिक्षा-कोष में वृद्धि की गयी। एक और काम जो उन्होंने किया वह था राष्ट्रीय स्तर पर सुव्वोत्निक संगठित करने का। केवल लीग की

मास्को शाखा ने ही ६३ हजार युवको और युवतियो को उनमें भाग लेने के लिए संगटित किया। १९३०-३१ में सुब्बोत्निको से स्कूलो को १ करोड़ रूवल प्राप्त हुए।

लोगो ने स्कूल और स्कूल का साज़-सामान वनाकर और उनकी मरम्मत करके तथा ईंधन इकट्ठा करके अपना अशदान दिया। अपनी ओर से, सोवियत सरकार ने स्कूलो के निर्माण, मरम्मत तथा उन्हें साज़-सामान से लैस करने की मद में रक्म वढ़ा दी, और अध्यापको की स्थिति को वेहतर वनाने और गरीव वच्चो को पाठ्यपुस्तकें, जूते, कपड़े और भोजन जुटाने के लिए कदम उठाये।

१९ वीं शताब्दी के अन्त में, उदारवादी दृष्टिकोण रखनेवाले रूसी उपदेशक यह दावा किया करते थे कि देश भर में प्राथमिक शिक्षा लागू करने में १००-१५० साल लग जायेंगे।

सोवियत सरकार ने वह काम – जो सांस्कृतिक क्रान्ति के सव से जटिल कामो में से था – चार साल के अर्से में पूरा कर दिखाया। और इसी पर बस नहीं, इन्हीं चार सालों में उसने नगरो में सातसाला अनिवार्य तालीम की समस्या को भी मूलत. हल कर दिया।

सदा सदा के लिए निरक्षरता की जड़ें खोद डाली गयीं।

क्रान्ति पूर्व का रूस जहालत और अन्धकार से भरा देश था; अव सोवियत संघ धीरे धीरे प्रगतिशील समाजवादी सस्कृति के देश के रूप में पनपने लगा।

और इसमें, विशेषकर निरक्षरता को कामयावी से दूर करने में, संस्कृति आन्दोलन ने वहुत वड़ी भूमिका अदा की, उसने निरक्षरता विरोधी आन्दोलन को लाखो-करोड़ों लोगो के ध्येय का रूप दे दिया। लाखो लोग – कामगार, किसान, वुद्धिजीवी और विद्यार्थी – अपने संयुक्त प्रयास मे तथा स्वेच्छा से और विना पारिश्रमिक लिये निरक्षरो तथा अर्धनिरक्षरो के स्कूलो में संगठनकर्ताओ, शिक्षा रीति-विशेषज्ञो और अध्यापको के रूप में काम करते थे।

आन्दोलन में भाग लेनेवाले ऐसे वहुत से लोग थे जिन्होंने सैकड़ों निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगो को पढ़ाया था। मिसाल के तौर पर

कोलोम्ना के इंजन-निर्माण कारखाने के इंजीनियर अर्थशास्त्री मान्कोव्स्की ने १३ साल के अर्से में ७२४ कामगारो को पढ़ना-लिखना सिखाया।

निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के समूचे काल में सोवियत अध्यापक, संस्कृति-सेना की सब से अगली पंक्तियो में रहे, और लेनिन की महान आशाओ पर पूरे उतरे। निम्न वोल्गा इलाके में क्रास्नी कुत गांव के अर्धनिरक्षर वयस्को के स्कूल के भूतपूर्व छात्र, म० वीकोव ने लिखा: "जिन्दगी भर मैं पढ़ने के स्वप्न देखता रहा, मन कहता काश कि मैं थोड़ा सा ही पढ़ पाऊं! अपनी जहालत को देखकर मेरा मन मसोस उठता, विद्या के लिए, प्रकाश के लिए दिल में बड़ी तड़प उठती, परन्तु कोई आवाज़ वार वार मुझ से कहती कि अव वहुत देर हो चुकी है, मेरा वक़्त वीत चुका है, कि स्कूल के दरवाज़े मेरे लिए हमेशा के लिए वन्द हो चुके हैं। लेकिन कभी कभी यह इच्छा मेरे दिल में फिर जाग उठती और उस समय मेरे सिर पर जैसे पढ़ाई का भूत सवार हो जाता। एक दिन मैंने यह नारा सुना: 'सोवियत जनतन्त्र में एक भी निरक्षर व्यक्ति नहीं होना चाहिए: साक्षरता पाठ्य-क्रम में दाखिल हो जाइये। निरक्षरता का मुकावला कीजिये।' मेरे दिल में फिर से पढ़ने की तीव्र इच्छा पैदा हुई। मैंने अपने जैसे ही कुछेक साथियो को इकट्ठा किया, और दम साधकर स्कूल के आंगन में प्रवेश किया। स्कूल के दरवाज़े वन्द नहीं थे, जैसा कि मैंने सोच रखा था। इसके विपरीत दरवाज़े ख़ूव खुले थे और मेरा स्वागत कर रहे थे। हमारी भावी अध्यापिका, यूलिया अलेक्सान्द्रोवा ने हार्दिकता से हमारा स्वागत किया। उसकी स्नेहपूर्ण वातो से हमारा झूठा संकोच और लज्जा जाती रही और हम पढ़ने के लिए पहले से भी अधिक तत्पर हो गये।"

जव आक्स्योनोवो गांव (इवानोवो प्रदेश) की अध्यापिका मरीया मखोतृकिना त्रोस्तिना से मिलने गयी और उसे वताया कि वह उसे पढ़ना-लिखना सिखाना चाहती है, तो त्रोस्तिना की आंखों में आंसू भर आये।

"कौन सोच सकता था कि एक दिन अध्यापिका किसी साधारण ग़रीव किसान औरत के घर चलकर आयेगी और उसे स्वयं पढ़ाने को कहेगी?" उसने कहा।

इस प्रकार के अनगिनत उदाहरण दिये जा सकते हैं। लेनिन ने एक बार कहा था कि "व्यक्तिगत अन्तःप्रेरणा की वीरता" क्रान्ति के कार्यों को पूरा करने के लिए, समाजवादी निर्माण को पूरा करने के लिए काफी नहीं थी। उन्होंने कहा कि उसके लिए, "जनसमूह के रूप में तथा रोज़ाना काम में लगातार जारी रहनेवाली, अध्यवसायी और परिश्रमी वीरता" की ज़रूरत थी। और यही "जनसमूह के रूप में और रोज़ाना काम में" अभिव्यक्त होनेवाली वीरता ही लाखों कामगारों, किसानों, विद्यार्थियों और अध्यापकों ने प्रदर्शित की।

निरक्षरता विरोधी आन्दोलन ने जिस वित्त सम्बन्धी समस्या को पैदा किया था उसे संस्कृति-आन्दोलन ने कामयाबी से हल कर दिया। निरक्षरता को ख़त्म करने के लिए सरकार ने धन ख़र्च करने में संकोच नहीं किया। लेकिन बजट संबन्धी साधनों से ही इसे ख़त्म नहीं किया जा सकता था। स्वयंसेवक अध्यापकों को भरती करने से प्रत्येक निरक्षर व्यक्ति के पीछे ख़र्च अनेक गुना कम हो गया।

१९२८ में, संस्कृति आन्दोलन की शुरुआत के समय ही, 'प्राव्दा' अख़बार ने निरक्षरता विरोधी आन्दोलन के लिए धन के लिए अपील की थी। इसके बाद क्रूप्स्काया ने पार्टी और सरकार के ३००० उच्च पदाधिकारियों के नाम एक साझा पत्र लिखा जो व्यक्तिगत रूप से इस आन्दोलन में भाग नहीं ले सकते थे। पत्र में आग्रह किया गया था कि प्रत्येक पदाधिकारी फ़ंड के लिए पांच रूबल की रक़म भेजे और इस तरह हज़ारों निरक्षर लोगों को पढ़ने में सहायता दे। सोवियत जनता ने बड़ी हार्दिकता से अपील पर अमल किया।

बजट की मदों में वृद्धि करने के अतिरिक्त, निरक्षरता विरोधी फंड में सहकारी सोसाइटियों, ट्रेड-यूनियनों तथा अन्य संगठनों के अंशदान से, दान, 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा के सदस्यों के चन्दों, सरपरस्त संगठनों के अनुदानों, 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा के व्यापारिक सौदों, सुब्बोत्निकों तथा अन्य साधनों से वृद्धि हुई।

'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा की स्थानीय शाखाओं के पथ-प्रदर्शन में फंड के लिए देहात में एक और राष्ट्रव्यापी आन्दोलन शुरू किया गया।

इसके अनुसार वोआई के लिए ज़मीन के टुकड़ो को विविध फसलो के लिए अलग कर दिया जाता और उनसे प्राप्त होनेवाला धन इस फ़ंड में दे दिया जाता। इस विचार ने लोगो का ध्यान आकर्षित किया और किसानो ने अपनी आम सभाओ में ऐसी फसलो के लिए ज़मीन के टुकड़ो में वोआई करने का निश्चय किया।

तीसरे दशक के अन्त और चौथे दशक के पूर्वार्द्ध में, आम संस्कृति-आन्दोलन ने सांस्कृतिक क्रान्ति के संघर्ष के इतिहास में बहुत बड़ी भूमिका अदा की। उसकी एक उपलब्धि यह थी कि उससे सोवियत देश की साक्षरता के प्रतिशत स्तर में बड़ी तेज़ी से वृद्धि हुई।

अन्तिम दौर

"...निरक्षरता को ही दूर करना काफी नहीं है ... हमें विशाल स्तर पर सांस्कृतिक प्रगति की जरूरत है।"

व्ला० इ० लेनिन

उच्च शिक्षा की ओर

रूस का सदियो का पिछड़ापन बडी तेज़ी से बीते समय की बात बनता जा रहा था। प्रथम पंचवर्षीय योजना की पूर्ति ने सोवियत संघ ने संसार की औद्योगिक शक्तियो में स्थान ग्रहण कर लिया। इन पांच सालो में १५०० नये औद्योगिक उद्यम चालू किये गये, देहात में सामूहिक फार्म प्रणाली स्थापित की गयी, बेरोजगारी दूर की गयी, मेहनतकश लोगों के रहन-सहन की स्थिति में आमूल सुधार किया गया, और साथ ही संस्कृति के क्षेत्र में बहुत बड़ी सफलताएं प्राप्त की गयीं।

जनवरी १९३४ में, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की सत्तरहवीं कांग्रेस में सोवियत सघ के आर्थिक विकास के लिए दूसरी पंचवर्षीय योजना संबन्धी प्रस्ताव अपनाया गया। उसमें जो कार्य सामने रखे गये वे पहले से भी अधिक प्रभावशाली थे। ये पांच साल उद्योग और खेतीबारी में नये तूफानी विकास के साल थे। राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को अधिकाधिक मात्रा में उच्च कोटि के यन्त्रसाधन मिल रहे थे। उद्योग की सभी शाखाओ के आधुनिक बना दिये जाने से इस बात की जरूरत पैदा हो गयी कि मजदूर पढे-लिखे हो। परिणामत उनके सांस्कृतिक स्तर में उन्नति हुई। यही कारण है कि सार्वजनिक शिक्षा का और अधिक

विकास और निरक्षरता तथा अर्धनिरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष को पूरा करना उन मुख्य कामो में शुमार किये गये थे जिनकी रूपरेखा दूसरी पंचवर्षीय योजना में दी गयी थी। वह काल सच्चे अर्थों में सांस्कृतिक क्रान्ति का काल था।

इन सालों में पढ़े-लिखे, कुशल कर्मचारी मण्डल का सवाल निर्णायक महत्त्व का था। कम्युनिस्ट पार्टी ने नारा बुलन्द किया: "हर बात कर्मचारी मण्डल पर निर्भर करती है!" नये यन्त्रसाधनो में कुशलता प्राप्त करने और आवश्यक कर्मचारी मण्डल को प्रशिक्षित करने की समस्या ने श्रमजीवी जनता की साक्षरता पर नयी मांगें डालीं: पूर्णतः निरक्षर कामगारों को कम से कम दो साल की प्राथमिक शिक्षा और अर्धशिक्षित कामगारो को पूरे चार साल की प्राथमिक शिक्षा या इससे भी अधिक, ग्रहण करनी पड़ती। यह बड़ी जटिल समस्या थी और इसे सुलझाने के लिए पुनर्संगठन की, मुख्यतः और अधिक संख्या में कुशल कर्मचारी मण्डल और ठोस भौतिक आधार की ज़रूरत थी।

२७ फर्वरी १९३६ को, पार्टी तथा सरकार द्वारा 'निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगो की शिक्षा संबन्धी' आज्ञप्ति जारी की गयी। इसमें १९३७ के अन्त से पहले ५० साल से कम उम्र वाले सभी श्रमजीवी लोगो में से निरक्षरता को पूर्ण रूप से दूर करने की पूर्वकल्पना की गयी थी।

जनतन्त्रो के शिक्षा संबन्धी जन कमिसारियतो, ट्रेड-यूनियनों तथा युवा कम्युनिस्ट लीग के संगठनो को हिदायत की गयी कि १९३६ में १४ से १८ साल तक की उम्र के किशोरो के लिए विशेष स्कूल स्थापित करें। नगर तथा ग्राम सोवियतों ने, और साथ ही हल्का कार्यकारिणी समितियो ने निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगो के लिए कक्षाएं खोलीं। 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा को इस आधार पर भंग कर दिया गया कि उसने अपना काम पूरा कर लिया था।

पार्टी तथा सरकार की आज्ञप्ति का विस्तृत महत्त्व था क्योंकि उससे निरक्षरता विरोधी आन्दोलन का अन्तिम दौर शुरू हुआ।

निरक्षरता विरोधी आन्दोलन नये जोश के साथ फैलने लगा। पहले की तरह अब भी इसमें सरकार, ट्रेड-यूनियन तथा युवा कम्युनिस्ट लीग

के संगठनो ने, विस्तृत स्तर पर श्रमजीवी जनता ने, निर्णायक भूमिका अदा की।

१९३३-३७ में कुछ नहीं तो २,०७,१३,१०० निरक्षर वयस्को और लगभग उतने ही अर्धनिरक्षर लोगो – १,९९,५७,८०० को पढना-लिखना सिखाया गया।

दूसरी पंचवर्षीय योजना काल में निरक्षरता उन्मूलन संबन्धी पार्टी के निश्चय को, समूचे तौर पर क्रियान्वित किया गया। परन्तु कुछेक प्रतिशत निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोग अभी भी बाकी थे, विशेष रूप से देहात में, और उन्हें पढाने का काम बाद के सालो में पूर्ण रूप से जारी रहा।

कम्युनिस्ट पार्टी तथा सोवियत सरकार निरक्षरता विरोधी काम को श्रमजीवी जनता के शिक्षा-स्तर को ऊचा उठाने की दिशा में केवल पहला कदम मानते थे। जैसा कि लेनिन ने बताया, हमें विस्तृत स्तर पर सास्कृतिक प्रगति की जरूरत थी।

इसी ध्येय को सामने रखते हुए पार्टी और सरकार ने बच्चों के स्कूलो की संख्या बढ़ाने के अतिरिक्त, बड़ी कामयाबी से वयस्क-स्कूलो को स्थापित किया तथा उनका जाल विस्तृत किया।

निरक्षर लोगो के स्कूल के बाद निरक्षरता विरोधी आन्दोलन में अगला कदम अर्धशिक्षित लोगो का स्कूल था। चौथे दशक में निरक्षरता उन्मूलन प्रणाली को धीरे धीरे पुनर्संगठित किया गया था और अर्धनिरक्षर लोगों को पढ़ाने की जरूरतो के अनुसार ढाला गया था। उन्हे प्राथमिक स्कूल कार्यक्रम के अनुसार पढ़ाया जाता था, अर्थात् रूसी भाषा, गणित, और भूगोल। अर्धनिरक्षर लोगो के स्कूलो में से पास होकर निकलनेवाले स्नातक उच्च वयस्क-स्कूलो में दाखिल हो सकते थे, उसके बाद रबफाक और उच्च शिक्षा संस्थापनो के प्राथमिक पाठ्य-क्रमो को पूरा कर सकते थे और अन्त में किसी इन्स्टीट्यूट में दाखिल हो सकते थे। इस क्रम से वे बिना अपनी नौकरिया छोडे उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।

अर्धनिरक्षर लोगो के लिए स्कूल, जिनमें छात्रों को प्राथमिक स्कूली शिक्षा दी जाती थी, सोवियत प्रशासन के प्रारंभिक वर्षों में स्थापित किये गये थे। उनमें वे लोग दाखिल किये जाते थे जो दो साल की

प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर चुके होते तथा वे लोग जिन्होंने साक्षरता पाठ्य-क्रम पूरा कर लिया होता। ये स्कूल ऐसे वड़े वड़े उद्यमो में खोले जाते जिनमें लगभग एक जैसी जानकारी रखनेवाले लोगो के पचीस पचीस, तीस तीस छात्रो के दल वनाये जा सकते थे। छोटे उद्यमो के मजदूरो के लिए हल्का-स्कूल थे, सामान्यतः अनेक फैक्टरियो और मिलो के लिए ऐसा एक स्कूल होता। देहात में जहां कहीं भी २५-३० व्यक्तियो का दल वनाया जा सकता था, ऐसे स्कूल खोले जाते।

निरक्षरता के विरुद्ध संघर्ष की भांति अर्धनिरक्षरता के विरुद्ध आन्दोलन में भी सार्वजनिक शिक्षा विभागो, ट्रेड-यूनियनो, युवा कम्युनिस्ट लीग तथा अन्य संगठनो ने वहुत वड़ी भूमिका अदा की।

सोवियत सत्ता के पहले सालो में उच्च प्रकार के वयस्क-स्कूल भी, मुख्यतः सांध्यकालीन स्कूल स्थापित किये गये जो सार्वजनिक शिक्षा में महत्त्वपूर्ण कड़ी वन गये।

१९३७ में ७१८७ अपूर्ण माध्यमिक तथा माध्यमिक सांध्यकालीन स्कूल काम कर रहे थे जिनकी कुल छात्र-संख्या ५,२४,८०० थी। १९३९ में ही छात्र-संख्या वढ़कर ७,५०,९०० तक जा पहुंची थी।

ऐसे लोग जो स्कूलो में नहीं पढ़ सकते थे, पत्र-व्यवहार पाठ्य-क्रमों द्वारा शिक्षा ग्रहण कर सकते थे। पहले पत्र-व्यवहार स्कूल १९२६ में स्थापित किये गये थे और उस समय उनका पाठ्य-क्रम प्राथमिक स्कूलों के पाठ्य-क्रम के अनुसार निर्धारित किया गया था। माध्यमिक पत्र-व्यवहार स्कूल १९२८ में खोले जाने लगे।

उच्च प्रकार के स्कूलों के अतिरिक्त वहुत से प्रशिक्षण पाठ्य-क्रम और मण्डल काम कर रहे थे।

क्रान्ति के वाद के उन पहले सालो में रवफाकों का वहुत वड़ा महत्त्व था—ये विशेष माध्यमिक स्कूल थे जो उच्च शिक्षा संस्थापनों के लिए कामगारो और किसानो को तैयार करते थे।

पहले रवफाक युवा सोवियत जनतन्त्र के जीवन के कठिनतम काल में—गृह-युद्ध के सालो में—अस्तित्व में आये।

सोवियत सरकार की २ अगस्त १९१८ की आज्ञप्ति के अनुसार,

—जिसे लेनिन ने तैयार किया था—उच्च शिक्षा संस्थापनों के दरवाजे श्रमजीवी जनता के लिए खोल दिये गये। परन्तु 'ज्ञान के भण्डार मेहनतकशों के लिए!' वाले नारे को जिसका बीज क्रान्ति ने बोया था और जिसे सोवियत सरकार ने कानून का रूप दिया था, ऐसी स्थितियों में अमली जामा नहीं पहनाया जा सकता था जिनमें लोग काफी शिक्षित न हों। और मजदूरों और किसानों का बहुत बड़ा बहुमत या तो पूर्णरूप से निरक्षर था या अर्धनिरक्षर। उच्च शिक्षा संस्थापनों की ओर बढ़ने के रास्ते में माध्यमिक स्कूली जानकारी का अभाव बड़ी गंभीर बाधा था। क्रान्ति के बाद के उन पहले सालों में अधिकतर टुटपुंजिया वर्ग, सरकारी अफसरों और पादरियों के साहिबजादे ही विश्वविद्यालयों और कालिजों में दाखिल किये जाते थे, न कि मजदूरों और गरीब किसानों के बच्चे।

और फिर, १९१९ में, मास्को के कम्युनिस्ट छात्रों के मन में उच्च शिक्षा संस्थापनों में मजदूरों के लिए आरंभिक पाठ्य-क्रम संगठित करने का विचार उठा ताकि वे विश्वविद्यालय में दाखिल हो सकें। इस विचार का पार्टी संगठन ने समर्थन किया और मजदूरों से आग्रह किया कि वे अपने नाम विद्यालय में दर्ज करवायें। अपील के जवाब में ९८५ लोगों ने अपने नाम लिखवाये, और वे रबफाक के केन्द्रबिन्दु बने, जिसे अधिकृत रूप से २ फरवरी १९१९ को वाणिज्य इन्स्टीट्यूट (अब राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का प्लेखानोव इन्स्टीट्यूट) में खोला गया।

११ सितम्बर, १९१९ को रूसी संघात्मक जनतन्त्र के शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत ने सभी विश्वविद्यालयों में रबफाक संगठित करने के बारे में विशेष आज्ञप्ति जारी की। १७ सितम्बर, १९२० को लेनिन ने रबफाकों के निर्माण के बारे में सरकारी आज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये। इस आज्ञप्ति में अन्य बातों के साथ कहा गया था कि :

"रबफाकों का बुनियादी काम विस्तृत स्तर पर मजदूरों तथा किसान जनता को उच्च शिक्षा संस्थापनों में आकृष्ट करना है।"

१८ साल या इससे ऊपर की अवस्था के कामगार और किसान जो कम से कम तीन साल तक "काम करते रहे थे" इन रबफाकों में दाखिला पा सकते थे। जातीय जनतन्त्रों के सबन्ध में यह अवधि दो साल

8*

की थी। दाखिले में वर्ग-सिद्धान्त का कड़ाई से पालन किया जाता था। सार्वजनिक तथा सरकारी संगठन अपने सब से अच्छे प्रतिनिधियों को पढ़ने के लिए भेजते थे।

प्रगतिशील विद्वानो तथा शिक्षाशास्त्रियों—जैसे क० आ० तिमिर्याजेव, व० न० ओब्रजत्सोव इत्यादि—ने इस बात का स्वागत किया कि कामगारो और किसानो ने 'ज्ञान के दुर्ग पर हमला करने' का दृढ़ संकल्प कर लिया है और सक्रिय रूप से रबफाक संगठित करने में मदद दी। परन्तु विश्वविद्यालय के पुराने प्रोफेसरो के बहुमत ने रबफाकों के विचार को 'बेवकूफाना' ख्याल समझा और विश्वविद्यालयो और कालिजो में 'बावर्चिनो के बच्चो' को घुसने से रोकने के लिए एड़ी चोटी का ज़ोर लगाया। पुराने विद्यार्थियों ने भी रबफाको का कड़ा विरोध किया।

जब लड़ाई के मोर्चों, फैक्टरियो और मिलो से, ज्ञान के दुर्ग पर हमला करने के लिए रबफ़ाको के पहले विद्यार्थी आये तो इन्स्टीट्यूटो में बड़े तनाव की स्थिति पायी जाती थी। कठिनाई केवल इसी बात में नहीं थी कि उन्हें विरोध का सामना करना पड़ रहा था। पुराने विद्यार्थियो और प्रतिक्रान्तिकारी प्रोफेसरो के वैमनस्य से तो वे सब से कम डरते थे। मुख्य कठिनाई तो कहीं और पायी जाती थी। जितना कुछ एक व्यक्ति साधारण स्कूल में छः या सात साल के अर्से में सीख पाता था, उतना उसे रबफाक में तीन सालो में—यदि वह दिन की कक्षाओ में पढने जाय—अथवा चार सालो में—यदि वह सांध्यकालीन कक्षाओं में जाय—ग्रहण करना पड़ता था। और वह भी सर्दी और भूख की कठिन स्थितियो में, और सांध्यकालीन स्कूलों के संबन्ध में तो दिन भर की कड़ी मेहनत के बाद। विद्यार्थियो को हर प्रकार की कठिनाइयो का अभ्यस्त होना पड़ता था: कक्षाओ में बिजली की रोशनी नहीं थी, शयनागार में मेज़ या खाटें नहीं थीं, पानी नहीं था क्योकि सर्दी के मौसम में पाईप फट जाते थे, खिड़कियो और दरवाज़ों पर शीशे नहीं थे, केवल दफ़्तियां लगी थीं, स्टोव के लिए ईंधन नहीं था, और जब गले-सड़े फर्श टूट जाते तो उनकी मरम्मत नहीं हो पाती थी।

'रवफाक के छात्र की दिन-चर्या' शीर्षक लेख में, जो लेनिनग्राद की टेक्नोलाजी इन्स्टीट्यूट के अखबार 'रवफाकोवेत्स'* में प्रकाशित हुआ, ग० पालोव ने लिखा:

"छात्र की दिन-चर्या शुरू होती है। वह मुह-हाथ धोता है। एक प्याला चाय... रोटी का एक टुकड़ा जल्दी जल्दी हलक के नीचे उतारता है... झपटकर अपनी कापियां उठाता है... दूसरे क्षण वह सड़क पर भाग रहा होता है। रवफाक में वह, रोज की तरह, दत्तचित्त होकर एक एक कीमती शब्द बड़े ध्यान से सुनता है, उसकी आखें ब्लैकबोर्ड पर या अध्यापक के चेहरे पर गड़ी रहती हैं। 'जो चाहता हैं उसका सारा ज्ञान उसके अन्दर से निकाल लू,' एक आदमी ने अपने अध्यापक के साथ अपने एक वार्तालाप के बाद कहा।

"कक्षाओ के बाद—भोजन... भोजन के बाद—सभाएं, मण्डल, सामाजिक कार्य-कलाप।

"परन्तु इसी पर बस नहीं। शाम के वक्त रवफाक का छात्र उन जगह जाता है जहां पर वह स्कूल में दाखिल होने से पहले काम किया करता था। उस समुदाय के साथ, जीवन के वास्तविक निर्माताओं के वर्ग का अग बने रहने के लिए, जिसे वह कुछ देर के लिए छोड आया है, वह सम्पर्क बनाये रखता है। अपनी जानकारी से वह अपने भूतपूर्व सहकर्मियो को अवगत कराता है, और व्यवहार में उने लागू करता है। सांस्कृतिक तथा सामाजिक कामो में उनकी मदद करता है। इसपर भी बस नहीं। घर लौटकर, अपने छोटे से कमरे में, टूटे-फूटे मेज और टूटे-फूटे स्टूल पर बैठकर वह गहरी रात गये तक पढता है...

"इस छात्र के जीवन का प्रत्येक दिन एक कारनामा होता है।"

ज्ञान अर्जन करने के उनके निरन्तर परिश्रम के कारण, रवफाको के छात्रों की चारो ओर धूम मच गयी। पांच साल के अर्से में लगभग कोई भी ऐसे प्रोफेसर या अध्यापक न रहे होंगे जो उन्हे अपने सर्वोत्कृष्ट छात्र न मानते हो।

---

*'रवफाकोवेत्स'—रवफाक का छात्र।

रवफाकों की आवश्यकताओं के प्रति पार्टी और सरकार अथक रूप से चिन्ताशील रही। १९३० में उन स्कूलों की प्रणाली में बहुत बड़ा परिवर्तन किया गया। रवफ़ाकों के विशेषीकरण का निश्चय किया गया। उसके बाद ये स्कूल बड़े बड़े उद्यमों और राजकीय तथा सामूहिक फ़ार्मों में खोले गये। छात्र समुदाय में युवा अग्रणी कामगार, विशाल औद्योगिक उद्यमों तथा समाजवादी फार्मों के उत्साही कामगार शामिल हुआ करते थे।

अब प्रत्येक औद्योगिक क्षेत्र का अपना आधार, अपना उच्च शिक्षा संस्थापन था, और इस प्रकार के प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थापन का अपना एक बड़ा केन्द्र—रवफाक—था जो उसका पोषण करता था। साल दर साल इन नये, सोवियत बुद्धिजीवी वर्ग के वर्कशापों की संख्या बढ़ने लगी और वे अधिकाधिक मजबूत होने लगे।

उच्च शिक्षा संस्थापनों के सर्वहारीकरण और नये बुद्धिजीवी वर्ग को तैयार करने में रवफाकों ने विशेषरूप से महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। साल दर साल विश्वविद्यालयों और कालिजों के माध्यम से उन्होंने उद्योग को ऐसे युवा विशेषज्ञ देकर मजबूत बनाया जिनका जन्म और पालन-पोषण श्रमिक वर्ग में हुआ था।

लाखों की संख्या में मजदूरों, खेत-मजदूरों तथा ग़रीब किसानों ने शिक्षा ग्रहण की, साक्षरता स्कूल से शुरू होकर, रवफाक के रास्ते, विश्वविद्यालय तक पहुंचे। अन्य लोगों के साथ रवफ़ाक के रास्ते औद्योगिक अकादमी तक का मार्ग, सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिष्ठित नेता तथा राजनयिक, नि० से० ख्रुश्चेव ने भी तय किया। वह पहले एक फिटर थे और अब सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के प्रथम सेक्रेटरी और सोवियत संघ की मन्त्रि-परिषद् के अध्यक्ष हैं।

भारी संख्या में पाये जानेवाले वयस्क स्कूलों के अलावा पाठ्येतर शिक्षा का भी सुव्यवस्थित जाल बिछा था। लाखों लोगों के बीच संस्कृति के प्रोत्साहन के लिए अख़बारें, पुस्तकें, रेडियो तथा सिनेमा, सोवियत संघ के दूरवर्ती इलाक़ों तक में पहुंचते थे।

वयस्कों में निरक्षरता को खत्म करना, बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा लागू करना, सांस्कृतिक तथा शिक्षा संबन्धी संस्थापनों में वृद्धि, और व्यावसायिक प्रशिक्षण स्कूलों (फैक्टरी-प्रशिक्षण स्कूलों से लेकर उच्च शिक्षा संस्थापनों तक) का निर्माण—समाजवादी संस्कृति को प्रोत्साहित करने की दिशा में ये सभी सोवियत जनता की प्रमुख उपलब्धियां थीं।

१९३९ की जन-गणना के अनुसार, ९ से ४९ साल तक की उम्र के लोगों में ८९.१ प्रतिशत साक्षरता पायी जाती थी (शहरी इलाकों में ९४.२ प्रतिशत और देहात में ८६.३ प्रतिशत)। पुरुषों में ९५.१ प्रतिशत और स्त्रियों में ८३.४ प्रतिशत साक्षरता पायी जाती थी। इस तरह रेकार्ड समय में—२० सालों से भी कम समय में—सांस्कृतिक क्रान्ति के अत्यधिक कठिन कामों में से एक काम पूरा किया गया।

इतिहास में इसका जोड़ नहीं मिलता। क्रान्ति से पहले रूस में साक्षरता के स्तर में प्रति वर्ष केवल ०.५ प्रतिशत के हिसाब से वृद्धि होती थी। हिन्देशिया पर हालंड के ३०० साल के लम्बे शासन के बाद श्रमजीवी जनता में से केवल ५ प्रतिशत निरक्षरता को दूर किया गया था। ऐसी है पूंजीवाद की दुनिया।

संस्कृति और साक्षरता को इतनी जल्दी केवल उस समाजवादी समाज में ही प्रोत्साहित किया जा सकता था जिसने जनता में नया उत्साह फूंक दिया था और जन-निर्माण के अक्षय सोते खोल दिये थे।

भारी संख्या में लोगों ने साक्षरता स्कूलों से लेकर समाजवादी निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने तक का रास्ता तय किया।

वर्णमाला की पुस्तक से लेकर अन्तरिक्ष-विजय तक

४० साल से अधिक समय वीत चुका है जव लेनिन ने निरक्षरता उन्मूलन संवन्धी ऐतिहासिक आज्ञप्ति पर हस्ताक्षर किये थे। पहले साक्षरता पाठ्य-क्रम गृह-युद्ध के मोर्चों पर, युद्ध विरामों के समय संगठित किये जाते थे। वह सव कितना निकट, पर फिर भी कितना दूर जान पड़ता है! उस समय से लेकर अव तक देश ने कितना शानदार ऐतिहासिक मार्ग तय कर लिया है!

सोवियत शासन-काल में सोवियत संघ में वास्तव में सांस्कृतिक क्रान्ति सम्पन्न की गयी है: राष्ट्रव्यापी स्तर पर मुफ़्त और अनिवार्य आठसाला तालीम लागू की जा रही है और माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा को विस्तृत स्तर पर विकसित किया गया है। इस समय लगभग ५ करोड़ ६० लाख लोग सोवियत संघ में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

प्रत्येक सोवियत नागरिक को—भले ही वह काम भी करता हो—मुफ़्त माध्यमिक अथवा उच्च शिक्षा ग्रहण करने का अवसर प्राप्त है। इस प्रकार की कोई चीज़ पूंजीवादी देशों में नहीं है और न ही हो सकती है।

इस समय देश में ९८.५ प्रतिशत लोग साक्षर है, और इसमें स्त्रियों और पुरुषों, तथा शहरी और देहात के इलाकों में नाम मात्र का अन्तर हो तो हो। माध्यमिक शिक्षा, यहां तक कि उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों की संख्या में, शहरों और देहात के वीच पाया जानेवाला अन्तर वस्तुतः कम हो गया है।

निरक्षरता पर काबू पाने के बाद अब सोवियत जनता सांस्कृतिक जीवन के सभी पहलुओ में उच्च स्तर प्राप्त करने की दिशा में प्रयत्नशील है। जनता की पहलकदमी के फलस्वरूप संस्कृति-विश्वविद्यालय बनाये गये हैं जो सामान्य तथा ललित कलाओ से संबन्धित नये प्रकार की शिक्षा का प्रतिनिधित्व करते हैं। १९५९ के अन्त तक देश में इस प्रकार के लगभग एक हजार विश्वविद्यालय थे।

हर साल सोवियत संघ में १०० करोड से अधिक पुस्तके छपती है। पुस्तक लाखो-करोड़ो सोवियत लोगो की चिर-संगिनी बन गयी है। किसी भी वैज्ञानिक अथवा इंजीनियर, मजदूर या किसान के घर जाइये, सभी के घरो में उनके, बड़े या छोटे निजी पुस्तकालय आपको मिलेंगे।

क्रान्ति पूर्व के रूस में, १९१३ में, लगभग २ लाख ९० हजार लोग उच्च, अधूरी उच्च तथा माध्यमिक विशिष्ट शिक्षा प्राप्त थे। आज उनकी कुल संख्या १ करोड़ ३४ लाख है।

१९६०-६१ के स्कूली वर्ष में सोवियत उच्च शिक्षा सस्थापनो में कुल २३ लाख ९६ हजार व्यक्ति दाखिल हुए—यह सख्या क्रान्ति पूर्व के रूस की सख्या से लगभग १८ गुना और ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मन संघात्मक जनतन्त्र और इटली (इन देशो की कुल आबादी २० करोड़ या लगभग सोवियत संघ की आबादी जितनी है) की संख्या से चार गुना अधिक है।

विशेषज्ञों के प्रशिक्षण के स्तर में सोवियत संघ दुनिया के सभी देशो से आगे निकल गया है, और अब संयुक्त राज्य अमेरिका सोवियत संघ के स्तर तक पहुंचने की बात करता है।

१९६० में, सोवियत संघ में, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में लगे हुए डिप्लोमा-प्राप्त इंजीनियरो की संख्या १० लाख ८० हजार थी। संयुक्त राज्य अमेरिका में ऐसे लोगो की संख्या ५ लाख २५ हजार थी।

जारशाही के अधीन स्त्री—विशेषरूप से देहात में—निरक्षर, जाहिल तथा उत्पीड़ित थी।

आज उच्च शिक्षा प्राप्त ३८ लाख लोगो में से १८ लाख (४९ प्रतिशत) स्त्रियां है। माध्यमिक तथा अपूर्ण माध्यमिक शिक्षा की दृष्टि

से कुल ५ करोड़ ४९ लाख लोगों में से २ करोड़ ९० लाख (५३ प्रतिशत) स्त्रियां हैं।

ज़ारशाही रूस के पिछड़े हुए जातीय इलाको में सचमुच विस्मयजनक सफलताएं प्राप्त की गयी हैं। सोवियत संघ की सभी जन-जातियो के अपने स्कूल हैं जिनमें उनकी अपनी मातृभाषा में तालीम दी जाती है, सभी के सामने शिक्षा और संस्कृति के द्वार खुले हैं। इन जन-जातियों में से ४८ ने अपनी लिपिबद्ध और जातीय साहित्यिक भाषा बना ली है। सोवियत स्कूलो में ५९ भाषाओ में तालीम दी जाती हैं।

वर्तमान कोमी स्वायत्त समाजवादी जनतन्त्र, याकूत स्वायत्त समाजवादी जनतन्त्र, और चुकोत्का जातीय क्षेत्र जैसे इलाकों में क्रान्ति से पहले इतने कम शिक्षित लोग पाये जाते थे कि उन्हें उंगलियो पर गिना जा सकता था।

कवि फेत ने एक बार लिखा था:

"लॉरेल वर्फ़ में नहीं खिलते, चुकची के यहां कोई एनेक्रियोन नहीं है, और सिरियेनियनों* के पास त्यूत्चेव** नहीं आयेगा।"

आज कोमी स्वा० सो० स० जनतन्त्र में प्रत्येक हज़ार व्यक्तियो के पीछे १५, याकूत स्वा० सो० स० जनतन्त्र में १७ और चुकोत्का जातीय क्षेत्र में ३० उच्च शिक्षा प्राप्त लोग पाये जाते है। माध्यमिक शिक्षा के लिए आंकड़े क्रमशः ३०४, २३८ और ३५२ हैं।

विज्ञान तथा शिक्षा में प्राप्त होनेवाली सफलताएं महान अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति का सीधा परिणाम है। क्रान्ति ने विराट महत्त्व का एक काम सम्पन्न किया है—उसने विस्तृत स्तर पर जनता को प्रबुद्ध किया है और इस तरह लेनिन के शब्दों में "निम्नतम स्तर के लोगों को ऐतिहासिक निर्माण के स्तर तक उठाने" में सक्रिय रूप से अंशदान दिया है।

सोवियत संघ और अन्य समाजवादी देशो के एतिहासिक अनुभव ने लेनिन के विचारों की न्यायपरता और शक्तिशालीनता को सिद्ध कर दिया

---

* सिरियेनियन—कोमी जन-जाति का पुराना नाम।

** फ़० ई० त्यूत्चेव (१८०३–७३)—सुप्रसिद्ध रूसी कवि।

है और अत्यधिक आस्था के साथ इस बात की पुष्टि की है कि कामगार, भले ही उनकी नस्ल, जाति अथवा अन्य विशेषताएं कुछ भी हों, अपने राज्यों का निर्माण कर सकते हैं और उनका प्रशासन, तथाकथित कुलीनों की तुलना में बुरा नहीं, बल्कि कहीं बेहतर कर सकते हैं।

समाज के भौतिक तथा मानसिक खजानों की वृद्धि के लिए, मानव के सर्वांगीण विकास के लिए समाजवाद ने असीम सम्भावनाओं के द्वार खोल दिये हैं।

सोवियत जनता ने सर्वांगीण कम्युनिस्ट निर्माण के दौर में प्रवेश किया है। कम्युनिज्म, समाज के सभी सदस्यों की शारीरिक तथा मानसिक क्षमताओं का व्यापक विकास है। और नये मानव के लक्षण अभी से प्रतिदिन के श्रम में प्रकट होने लगे हैं।

१९२१ में राजनीतिक शिक्षा की द्वितीय कांग्रेस में भाषण देते हुए, लेनिन ने कहा, "मैं सोचता हूं सब से बड़ा चमत्कार वह होगा जब निरक्षरता खत्म करनेवाली समिति को पूर्ण रूप से खत्म कर दिया जायेगा"। यह चमत्कार सम्पन्न किया गया है। और इसके बिना सोवियत जनता एक और चमत्कार सम्पन्न नहीं कर सकती थी संस्कृति और विज्ञान में प्रवीणता प्राप्त करने के बाद सोवियत लोग आज ब्रह्माण्ड के रहस्यों का उद्घाटन कर रहे हैं। क्या १९६१ में यूरी गगारिन और गेरमन तितोव की अन्तरिक्ष उड़ानें सोवियत संघ में होनेवाली सांस्कृतिक क्रान्ति की श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति नहीं है?

रूसी सघात्मक जनतन्त्र की आवादी मे से निरक्षरता उन्मूलन संबन्धी आज्ञप्ति

इस आशय से कि जनतन्त्र की समस्त आवादी सचेत रूप से देश के राजनीतिक जीवन में भाग ले सके, जन कमिसार परिषद् यह आज्ञप्ति जारी करती है:

१) आठ से लेकर पचास साल तक की उम्र के जनतन्त्र के सभी निरक्षर लोगो को, अपनी इच्छानुसार, अपनी अथवा रूसी भाषा में शिक्षा प्राप्त करने पर वाध्य किया जाता है। शिक्षा की व्यवस्था उन राजकीय स्कूलों में की जायेगी जो इस समय मौजूद है तथा उन स्कूलो में जो शिक्षा संवन्धी जन कमिसारियत की योजनाओं के अनुरूप निरक्षर लोगों के लिए स्थापित किये जायेंगे।

नोट: यह धारा लाल फौज के सैनिको पर भी लागू होती है, यूनिटों में किया जानेवाला आवश्यक काम लाल फ़ौज और नौसेना के राजनीतिक विभागो के साथ गहरा सम्पर्क किया जाय।

२) निरक्षरता उन्मूलन की तारीख़ सम्बद्ध इलाकों में डिपुटियों की गुवर्निया और नगर सोवियतों द्वारा निर्धारित की जायेगी। उसी स्थान पर निरक्षरता निवारण की सामान्य योजना, इस आज्ञप्ति के

प्रकाशन के दो महीने के अन्दर अन्दर, शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत की संस्थाओ द्वारा तैयार की जायेगी।

३) शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत तथा उसकी स्थानीय संस्थाओ को यह अधिकार दिया जाता है कि वे अध्यापको की तनख्वाह के बराबर तनख्वाह देकर देश के उन सभी साक्षर लोगो को जिन्हे अभी तक सेना में भरती नहीं किया गया निरक्षर लोगो को पढाने के काम के लिए भरती कर सकती है।

४) शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत तथा उसकी स्थानीय संस्थाएं, निरक्षरता उन्मूलन के लिए श्रमजीवी जनता के सभी सगठनो, जैसे ट्रेड-यूनियनो, रूसी कम्युनिस्ट पार्टी के प्राथमिक सगठनो, युवा कम्युनिस्ट लीग, महिला समितियो इत्यादि की सक्रिय सहायता प्राप्त करेंगी।

५) सैनीकृत उद्योगो को छोडकर, साक्षरता पाठ्य-क्रम में शिक्षा प्राप्त करनेवाले, भाड़े के मजदूरो को दो घटे रोजाना, बिना पगार में कटौती किये, छुट्टी दी जायेगी।

६) शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत को अधिकार है कि निरक्षरता उन्मूलन के काम के लिए सार्वजनिक इमारतो, गिर्जों, क्लबो, निजी घरो को, तथा फैक्टरियो, मिलो और संस्थाओ इत्यादि में उचित स्थानो को इस्तेमाल कर सके।

७) सामग्री जुटानेवाले संगठनो को हिदायत की जाती है कि वे निरक्षरता उन्मूलन संस्थाओ से प्राप्त होनेवाले अनुरोधो को प्रमुखता दें।

८) इस आज्ञप्ति में उल्लिखित कर्त्तव्यों से कतरानेवाले और निरक्षर लोगो को स्कूलो में जाने से रोकनेवाले लोगो के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जायेगी।

९) शिक्षा सम्बन्धी जन कमिसारियत को आदेश दिया जाता है कि इस आज्ञप्ति को क्रियान्वित करने के बारे में दो हफ़्ते के अन्दर अन्दर हिदायतें जारी कर दे।

प्रधान, जन कमिसार परिषद्
व्ला० उल्यानोव (लेनिन)

कार्यकारी सेक्रेटरी, जन कमिसार परिषद्
व्ला० बोंच-ब्रुएविच

परिशिष्ट – २

देहात में छुट्टियां बितानेवाले कामगारों के लिए बारह नियम

१. पहुंचने पर पता लगाओ कि वहां 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा की कोई शाखा है या नहीं। अगर है तो उसके पास अपना नाम दर्ज कराओ और उसके काम की कुछ जिम्मेवारी अपने ऊपर ले लो।

२. अगर ऐसी कोई शाखा नहीं है, तो उसे संगठित करने के लिए कदम उठाओ। ऐसा करने के लिए स्थानीय सांस्कृतिक संगठनों, वाचनालय तथा स्कूल के साथ सम्पर्क स्थापित करो।

३. उन सब लोगों की सूची तैयार करो जिन्होंने निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगों के स्कूलों की तालीम पूरी की है।

४. इन लोगों को ३-५ के दलों में विभाजित करो, प्रत्येक दल के साथ एक सक्रिय सदस्य नियुक्त करो जो गर्मी के मौसम में अपने दल में अख़बार तथा पुस्तक-पाठ आयोजित करे।

५. सभी अर्धनिरक्षर लोगों के लिए निश्चित रूप से [illegible] की व्यवस्था करो।

६. अर्धनिरक्षर लोगों के लिए परामर्श संगठित करो।

७. सभी निरक्षर तथा अर्धनिरक्षर लोगों के नाम गांव के सभी शिक्षा संस्थापनों में निश्चित रूप से दर्ज करवाओ. और उनके साथ [illegible] करो।

८. विश्राम के दिनों में साक्षरता समारोहों का आयोजन करो, यदि संभव हो तो फ़िल्में भी दिखाओ।

९. पुस्तकालय की किताबो का वितरण करनेवालो की सहायता करो, किसानो के मिल बैठने के स्थानों पर पाठकों तथा कथा-कहानी सुनानेवालों की मदद करो।

१०. सैर, भ्रमण आदि की व्यवस्था करने में मदद करो।

११. ग्राम सोवियतो में निरक्षरता उन्मूलन समितियां स्थापित करने में मदद करो। जहां संभव हो पुरुष और स्त्री खेत मजदूरों के लिए रविवासरीय साक्षरता स्कूल स्थापित करने में मदद दो।

१२. 'निरक्षरता मुर्दाबाद' सभा के सदस्य बनाने के लिए विस्तृत स्तर पर प्रचार-कार्य करो।